आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JPC/3825/02/2003-05

हिन्दी मासिक

# जिनवाणी

## नमस्कार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ।।
एसो पंच णमोक्कारो,
सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलं ।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

वर्ष 60 अंक 6
जून, 2003 ज्येष्ठ, 2060

malhar11.5x19 /1477

# जिनवाणी हिन्दी-मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'

**● प्रकाशक**
प्रकाशचन्द डागा
मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नम्बर 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003 (राज.), फोन नं. 2565997

**● संस्थापक**
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

**● सम्पादक**
डॉ. धर्मचन्द जैन, एम.ए., पी-एच.डी.

**● सम्पादकीय सम्पर्क सूत्र**
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर- 342005(राज.)
फोन नं. 0291-2730081

**● सम्पादक मण्डल**
डॉ. संजीव भानावत, एम.ए. पी-एच.डी.

**● भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं. JPC/3825/02/2003-05

**● सदस्यता**

| | |
|---|---|
| स्तम्भ सदस्यता | 11000 रु. |
| संरक्षक सदस्यता | 5000 रु. |
| आजीवन सदस्यता देश में | 500 रु. |
| आजीवन सदस्यता विदेश में | 100$(डालर) |
| त्रिवर्षीय सदस्यता | 120 रु. |
| वार्षिक सदस्यता | 50 रु. |
| इस अंक का मूल्य | 10 रु. |


परस्परोपग्रहो जीवानाम्

चरंतं विरयं लूहं,
सीयं फुसइ एगया।
नाइवेलं मुणी गच्छे,
सोच्चा णं जिणसासणं॥
*—उत्तराध्ययन सूत्र २.६*

**रूक्षवृत्ति आरम्भविरत मुनि,**
**कभी शीत से पीड़ित हो।**
**न करे मर्यादा उल्लंघन,**
**सुनकर जिनशासन प्रमुदित हो ॥६॥**


जून 2003
वीर निर्वाण सं. 2529
ज्येष्ठ, 2060

**वर्ष** : 60 **अंक** : 06

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन: 2562929

*ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर प्रकाशक के उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।*



*नोट : यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।*

# विषयानुक्रमणिका

## प्रवचन/निबन्ध/रिपोर्ताज


| | | |
|---|---|---|
| समत्व की साधना : सामायिक | : आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. | 6 |
| अध्यात्मयोगी पूज्य गुरुदेव हस्ती | : आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. | 11 |
| माया | : श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा | 18 |
| प्राकृत साहित्य में भगवान महावीर का उपदेश | : डॉ. हुकमचन्द जैन | 21 |
| सार्स : क्या भोजन का असंयम सार्स की वजह है? | : श्री जितेन्द्र डागा | 26 |
| पुणे में प्रव्रज्या पथ पर आरोहण चार मुमुक्षु बहनों का | : श्री नौरतन मेहता | 38 |


## विचार/तत्त्वचर्चा/आगम-परिचय/साक्षात्कार


| | | |
|---|---|---|
| आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (2) | : श्री धर्मचन्द जैन | 29 |
| दशवैकालिक सूत्र (7) | : डॉ. अमृतलाल गांधी | 32 |
| भगवान से साक्षात्कार | : कर्नल दलपतसिंह बया | 36 |
| देह का द्रव्य स्वास्थ्य एवं आत्मा का भाव स्वास्थ्य | : पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकर विजय जी | 31 |


## कथा/कविता/प्रेरक-प्रसंग


| | | |
|---|---|---|
| पवित्र कौन? | : श्रीमती लाडदेवी हीरावत | 10 |
| बच्चे सीखें धार्मिक गिनती | : श्री नितेश नागोता 'जैन' | 25 |
| दानवीर भामाशाह | : श्री दिलीप धींग | 28 |
| तुमको लाखों प्रणाम | : श्री जवाहरलाल कर्णावट | 33 |
| दो तोला मांस की कीमत? | : सुश्री कनीनिका जैन | 34 |
| रत्नसंघ के मूल महापुरुष(3) | : भण्डारी सरदारचन्द जैन | 37 |
| श्रम की रोटी | : श्री आनन्दराज तलेसरा | 81 |


## स्तम्भ/ अन्य


| | | |
|---|---|---|
| सम्पादकीय | : डॉ. धर्मचन्द जैन | 3 |
| समाचार-संकलन | : संकलित | 56 |
| संक्षिप्त समाचार | : संकलित | 73 |
| बधाई | : संकलित | 74 |
| श्रद्धांजलि | : संकलित | 75 |
| साभार-प्राप्ति-स्वीकार | : संकलित | 79 |

# नई पीढ़ी को विरासत

*डॉ. धर्मचन्द जैन*

एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को अपनी विरासत सौंप कर जाती है। इस विरासत में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है विचारों की विरासत अथवा ज्ञान की विरासत। इसको इसलिए महत्त्वपूर्ण कहा जा सकता है, क्योंकि जीवन को सही ढंग से जीने में विचारों की अहं भूमिका होती है। विचारों के साथ ज्ञानराशि को नई पीढ़ी को सौंपना भी महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि ऐसा नहीं किया गया तो वह ज्ञान उस पीढ़ी के साथ ही समाप्त हो सकता है।

मानव अपनी पीढ़ी को विरासत में भूमि, मकान, धन-सम्पत्ति आदि को सौंपने के प्रति तो सजग रहता है, किन्तु ज्ञान एवं विचारों की राशि अगली पीढ़ी में कितनी एवं किस प्रकार स्थानान्तरित हो, इस दायित्व के संबंध में बहुत कम मनुष्य ही सजग होते हैं। कुछ विचार सहज रूप में नई पीढ़ी में सम्प्रेषित एवं गृहीत होते रहते हैं, किन्तु उनमें अच्छे एवं हितकारी मूल्यवान विचारों की अपेक्षा गन्दे विचारों की ही संख्या अधिक रहती है।

माता-पिता, गुरुजनों एवं नीति-निर्धारकों की इस संबंध में महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। माता-पिता का जैसा सोच होता है, उसी के अनुरूप संस्कार वे अपनी संतान को सम्प्रेषित करते हैं। यदि माता-पिता गाली-गलौच से बात करते हैं, तो सन्तान इंसे आसानी से ग्रहण कर लेती है। इसी प्रकार अन्धविश्वास, संकीर्णता, स्वार्थ भावना आदि के विचार सन्तान में माता-पिता से सहज ही आ जाते हैं। ऐसे विचारों को सिखाने की अधिक आवश्यकता नहीं होती। बुराई जल्दी सीखी जाती है, किन्तु अच्छाई को सीखने में समय लगता है। माता-पिता यदि सन्तान को अपने से अधिक उन्नत देखना चाहते हैं तो उन्हें उनमें सत्संस्कारों एवं जीवन-मूल्यों का वपन करना होगा।

बालकों को जैसा वातावरण मिलता है, उसी के अनुरूप विचार उनमें विकसित होते हैं। सत्संगति एवं कुसंगति का भी गहरा प्रभाव पड़ता है। कुसंगति से बचाकर सत्संगति में जोड़ने का प्रमुख दायित्व माता-पिता का होता है। वे ही बच्चों पर निगरानी रख सकते हैं। बच्चों को माता-पिता जैसा सिखाते हैं, बच्चे वैसा ही सीखते हैं। बड़े होने पर वे गुरुजनों से, मित्रों से एवं सम्पर्क में आने वाले अन्य जनों से भी सीखते हैं। सन्त-सतियों एवं महात्माओं की संगति एवं उनके विचारों का भी गहरा प्रभाव पड़ता है।

कहते हैं कि बचपन में जो संस्कार पड़ते हैं, वे स्थायी होते हैं "यन्नवे भाजने लग्नः संस्कारो नान्यथा भवेत्।" अर्थात् नये मिट्टी के बर्तन को जैसी आकृति दी जाती है वह वैसी ही रहती है, उसी प्रकार बचपन में जैसे विचारों/संस्कारों का वपन हो जाता है, वह अधिक स्थायी होता है। यहाँ यह ध्यातव्य है कि विचारों में विकास एक सतत प्रक्रिया है। बचपन के पश्चात् भी विविध लोगों के सम्पर्क में आने से विचारों में परिवर्तन होता रहता है।

इसलिए कई बार यह प्रश्न उठता है कि बचपन में बच्चों में नैतिक एवं धार्मिक विचारों या संस्कारों का वपन किए जाने पर भी बड़े होने पर उनमें विपरीत आचरण क्यों पाया जाता है? इसके अनेक कारण हैं। बचपन में जब बच्चों में कोई बात पूरी तरह गले नहीं उतरती है और वे बड़े होने पर विपरीत धारणाओं एवं विचारों के लोगों के सम्पर्क में आते हैं तो उन पर भौतिक प्रलोभन एवं अविवेक के कारण उन विपरीत धारणाओं एवं विचारों का प्रभाव पड़ जाता है। अन्यथा ऐसे सैकड़ों उदाहरण हैं कि विदेशों में रह रहे भारतीय जैन परिवार भौतिक चकाचौंध में रहते हुए भी वैचारिक समझ से अपना खान-पान एवं आचरण संयत रखते हैं। युवावय में विपरीत आचरण का दूसरा कारण कुसंगति है। कुसंगति में पड़कर व्यक्ति कुव्यसनों का भी शिकार होने लगता है। धन की सुलभता इसमें प्रमुख कारण बनती है। भौतिकता का अति आकर्षण भी इसमें कारण बनता है। फिर व्यक्ति में लोभ एवं अहंकार का अभिनिवेश बढ़ने लगता है तो विपरीत आचरण स्वाभाविक है।

आधुनिक व्यस्तताओं में भी व्यक्ति जीवन में धर्म को स्थान दे,यह महत्त्वपूर्ण है। इसके लिए नियमित धर्मक्रिया को प्राथमिकता मिलनी चाहिए। जो सामायिक आदि धर्मक्रिया के साथ स्वाध्याय को जोड़ लेता है, उसके सद्विचारों का निरन्तर पोषण होता है तथा ज्ञान का नया प्रकाश मिलता है। यह प्रकाश ही जीवन को सम्यक् दिशा प्रदान करता है।

विचारों का जीवन में प्रभाव स्पष्टतः परिलक्षित होता है। जिस परिवार में उदारता, सहनशीलता, प्रेम एवं मैत्री के विचार परिपुष्ट रहते हैं वहाँ लड़ाई-झगड़े का अवसर कम ही आता है, किन्तु जहाँ व्यक्ति की अपेक्षा धन को अधिक महत्त्व दिया जाता है वहाँ लड़ाई-झगड़े की स्थिति आसानी से उत्पन्न हो जाती है।

देश-सेवा एवं देश-भक्ति के विचारों को जब प्रोत्साहित किया गया तो भारत को आजादी मिली। बिना विचारों के क्रान्ति नहीं आ सकती। इसी प्रकार

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विचारों का महत्त्व है। वैज्ञानिक विकास के कारण गत एक शती में लोगों के विचारों में जो परिवर्तन आया है वह उसके पूर्व सैंकड़ों वर्षों में नहीं आया।

विचारों का विकास निरन्तर चलता रहता है। वैचारिक विकास से जीवन में बदलाव आता है। इसमें सरकार की नीति, साहित्यकार, वैज्ञानिक, विचारक एवं संतों का भी योगदान रहता है। विज्ञापन से भी विचारों में बदलाव होता है। उदाहरण के लिए पचास वर्ष पूर्व अधिक संतान का होना अच्छा समझा जाता था, विशेषतः पुरुष संतान का, किन्तु आज दो-तीन संतान से अधिक होने पर व्यक्ति को हीन दृष्टि से देखा जाता है। इससे पारिवारिक व्यवस्था एवं समृद्धि में बदलाव आया है। इसी प्रकार वैज्ञानिक विकास के साथ लोगों के विचारों में बदलाव आने से कुछ अन्धविश्वास दूर हुए हैं और शिक्षा को लोगों ने अपने विकास के लिए आवश्यक माना है।

विचार एक अमूल्य निधि है जो मानव के सम्पूर्ण जीवन को प्रभावित करती है। विचारों के विकास के बिना कोई कृपण से उदार नहीं बन सकता। साम्प्रदायिक अभिनिवेश को छोड़कर सर्वधर्मसहिष्णुता के स्तर तक नहीं पहुँच सकता। भोगों के आकर्षण को छोड़कर संयम एवं त्याग का मार्ग नहीं अपना सकता। नई पीढ़ी को हम किस प्रकार के विचार सम्प्रेषित करना चाहते हैं इस पर इस पीढ़ी को विचार करना चाहिए। व्यापारी जिस प्रकार हानि-लाभ के आधार पर भावी पीढ़ी को व्यापार के गुर सिखाता है या प्रशिक्षण देता है, उसी प्रकार वैचारिक दृष्टि से भी भावी पीढ़ी को समृद्ध बनाने का लक्ष्य होना चाहिए। इसमें स्वाध्याय की प्रवृत्ति एवं सत्संग साधक उपाय हैं। भावी पीढ़ी यदि दृष्टि की सम्यक्ता को आधार बनाकर चिन्तन एवं विचारों को आगे बढ़ावे तो माता-पिता का अथवा इस पीढ़ी का दायित्व पूर्ण हो सकता है।

धर्मक्षेत्र में भी इस दृष्टि से चिन्तन की आवश्यकता है। धर्मग्रन्थ हमारे विचारों को परिष्कृत एवं परिमार्जित करने में अहं भूमिका निभाते हैं, किन्तु धर्म को जीवन से जोड़कर प्रस्तुत किया जाए तो वह स्वीकार्य होने के साथ व्यक्ति के जीवन का अभिन्न एवं स्थायी अंग बन सकता है, किन्तु यदि उसे नरक के भय एवं स्वर्ग के प्रलोभन के रूप में प्रस्तुत किया गया, तो इससे पिछड़े, दब्बू एवं संकीर्ण लोगों की फौज खड़ी हो सकती है, सच्चे धार्मिकों की नहीं। धर्मक्रिया जीवन-विकास के लिए आवश्यक प्रतीत हो, इस प्रकार के उपदेश एवं प्रशिक्षण की आवश्यकता है। ■

# समत्व की साधना : सामायिक

*आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.*

आज चारों ओर विषमता का वातावरण है। यह विषमता जीवन के हर क्षेत्र में व्याप्त है, अतः व्यक्ति दुःखी है, संतप्त है। दुःख का कारण आर्थिक विषमता नहीं है। आर्थिक विषमता को तो एक सीमा तक उत्पादन के साधनों का विकास कर, रोजगार की सुविधाएँ जुटाकर दूर किया जा सकता है, पर सबको भौतिक समृद्धि प्रदान करके भी दुःख मिटाया नहीं जा सकता, क्योंकि दुःख का वास्तविक कारण आर्थिक विषमता नहीं, मानसिक विषमता है। यह मानसिक विषमता सामायिक की साधना द्वारा समताभाव लाकर मिटाई जा सकती है।

## सामायिक साधना का स्वरूप

साधना की अपेक्षा से सामायिक सम्यक्त्व, श्रुत, आगार और अनगार के भेद से चार प्रकार की होकर भी मूल में एक ही है। गृहस्थ विषय-कषाय के प्रगाढ़ पंक में रहकर भी क्षणिक समभाव की उपलब्धि कर सके, राग-द्वेष के जोर को घटा सके, इसलिए आचार्यों ने उसे सामायिक की शिक्षा दी है। समय, उपकरण और विधि की अपेक्षा परम्परा भेद होने पर भी सामायिक के मूल रूप में कोई अन्तर नहीं है। मौलिक रूप से आर्तध्यान, रौद्रध्यान तथा सावद्य कार्य का त्याग कर मुहूर्त भर समता में रहना सामायिक है। कहा भी है-

**''त्यक्तार्तरौद्रध्यानस्य, त्यक्तसावद्यकर्मणः।**
**मुहूर्तं समतायास्तं विदुः सामायिकं व्रतम्।।''**

सामायिक में कोई यह नहीं समझ ले कि इसमें कोरा अकर्मण्य होकर बैठना है। सामायिक-व्रत में सदोष प्रवृत्ति का त्याग और पठन-पाठन, प्रतिलेखन, प्रमार्जन, स्वाध्याय, ध्यान आदि निर्दोष कर्म का आसेवन भी होता है। सदोष कार्य से बचने के लिये निर्दोष में प्रवृत्तिशील रहना आवश्यक है।

सामायिक-साधना करना अपने घर में रहना है। सामायिक से अलग रहना बेघरबार रहना है। सामायिक साधना करना आत्मा का घर में आना है। काम, क्रोध आदि विकारों से परिणत होना पराये घर में जाना है।

सामायिक के दो रूप हैं- साधना और सिद्धि। श्रुत सामायिक से साधना का प्रारम्भ और उदय होता है। वह विकास पाकर ज्ञान और चारित्र के द्वारा आत्मा में स्थिरता उत्पन्न करती है। यह आत्म-स्थिरता ही सामायिक की पूर्णता समझनी चाहिए। इसे आगम की भाषा में अयोगी दशा की प्राप्ति कहते हैं।

## सामायिक के विभिन्न प्रकार

साधक की दृष्टि से सामायिक के अनेक प्रकार किये गये हैं। स्थानांग सूत्र में आगार सामायिक और अनगार सामायिक दो भेद हैं। आचार्यों ने तीन प्रकार भी बतलाये हैं- सम्यक्त्व सामायिक, श्रुत सामायिक और चारित्र सामायिक। सम्यक्त्व की स्थिति में साधक वस्तु-स्वरूप का ज्ञाता होने से राग-रोष में नहीं उलझता। भरत चक्रवर्ती ने अपना अपवाद करने वालों को भी तेल का कटोरा देकर शिक्षित किया। पर उस पर राग-रोष की परिणति नहीं आने दी। यह सम्यक्त्व सामायिक है। निसर्ग और उपदेश से प्राप्त होने की अपेक्षा इसके दो भेद हैं। उपशम, सास्वादन, वेदक, क्षयोपशम और क्षायिक भेद से पाँच, निसर्ग आदि में रुचि भेद से दस, क्षायिक, औपशमिक, क्षायोपशमिक भेद से तीन तथा कारक, रोचक और दीपक भेद से भी सामायिक के तीन प्रकार हैं। जहाँ श्रद्धापूर्वक सदनुष्ठान का आसेवन होता हो उसे कारक, जो श्रद्धा मात्र रखता हो, क्रिया नहीं करता वह रोचक और सम्यक् श्रद्धाहीन होकर भी जो दूसरों में तत्त्व श्रद्धा उत्पन्न करता हो -मरीचि की तरह धर्म कथा आदि से अन्य को सम्यक् मार्ग की ओर प्रेरित करता हो, उसे दीपक सम्यक्त्व कहा है।

सम्यक्त्व सामायिक में यथार्थ तत्त्व श्रद्धान होता है। सम्यक्त्व की प्राप्ति होने पर ही श्रुत के अवास्तविक मर्म को समझा जा सकता है। श्रुत सामायिक में जड़-चेतन का परिज्ञान होता है। सूत्र, अर्थ और तदुभय रूप से श्रुत के तीन अथवा अनक्षरादि क्रम से अनेक भेद हैं। श्रुत में मन की विषमता गलती है, अतः श्रुताराधन को श्रुत सामायिक कहा है।

चारित्र सामायिक के आगार और अनगार दो प्रकार किये हैं। गृहस्थ के लिए मुहूर्त आदि प्रमाण से किया गया सावद्य त्याग आगार सामायिक है। अनगार सामायिक में सम्पूर्ण सावद्य-त्याग रूप चारित्र जीवन भर के लिए होता है। आगार सामायिक में दो करण तीन योग से हिंसादि पापों का नियत काल के लिए त्याग होता है, जबकि मुनि-जीवन में हिंसादि पापों का नियत काल के लिए त्याग होता है।

## निश्चय और व्यवहार

पूर्ण निश्चय दृष्टि से त्रस, स्थावर जीव मात्र पर समभाव रखने वाले को ही सामायिक होती है, क्योंकि जब तक आत्म प्रदेशों में सर्वथा अकंपदशा प्राप्त नहीं होती, निश्चय में उसे सम नहीं कहा जा सकता। कहा है-

**''जो समो सव्वभूएसु, तसेसु थावरेसु य।**
**तस्स सामाइयं होइ, इइ केवलिभासियं।।''**

जिनमत निश्चय और व्यवहार उभयात्मक है। उसमें अकेले व्यवहार और अकेले निश्चय को कार्यसाधक नहीं माना जाता। व्यवहार में जप, तप स्वाध्याय एवं ध्यान में संयत जीवन से रहना और सादे वेशभूषा में शांत बैठकर साधना करना सामायिक है। राग-द्वेष को घटाना या विकारों को जीत लेना सामायिक का निश्चय पक्ष है। साधक को ऐसा व्यवहार साधन करना चाहिए जो निश्चय के निकट पहुँचावे। साधना करते हुए भी आत्मा में राग-द्वेष की मंदता प्राप्त नहीं हो तो सूक्ष्मदृष्टि से देखना चाहिये कि व्यवहार में कहाँ गलती है?

## सामायिक : व्रत, चारित्र और आवश्यक के रूप में

सावद्ययोगों के त्याग का नियम लेने से सामायिक एक व्रत है। इसे शिक्षाव्रत माना गया है। इसमें साधक पापवृत्ति न करने का संकल्प लेता है। फलस्वरूप उसका चित्त शान्त होता है। सम होने के साथ-साथ शान्ति बढ़ती जाती है और शान्ति बढ़ने के साथ चित्त की साधना भी बढ़ती जाती है। चित्त की समता रूप अवस्था ही सामायिक चारित्र है।

पाँच प्रकार के चारित्रों (सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्म संपराय और यथाख्यात) में सामायिक प्रथम चारित्र है। साधक का यहाँ से विकास प्रारम्भ होता है और विषमता को हटाकर समता को लाने की यह साधना अवश्य करणीय होने से आवश्यक भी है। 'अवश्यकरणीयत्वात् आवश्यकम्'- अर्थात् प्रतिदिन प्रातः और सायं दोनों संधिकाल में अवश्य करने योग्य होने से भी इसका नाम आवश्यक है।

## सामायिक का महत्त्व

जैन धर्म में 'सामायिक' का बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह सभी साधनाओं की भूमि है। पौषधादि सभी व्रत सामायिक से प्रारम्भ होते हैं। तीर्थंकर भगवान् भी जब साधना मार्ग में प्रवेश करते हैं तो सर्व प्रथम सामायिक चारित्र स्वीकार करते हैं। जैसे-आकाश संपूर्ण चराचर वस्तुओं का आधार है वैसे ही सामायिक चरणकरणादि गुणों का आधार है।

**''सामायिकं गुणानामाधारः, खमिव सर्वभावानाम्।**
**न हि सामायिकहीनाश्चरणादिगुणान्विता येन।।''**

बिना समत्व के संयम या तप के गुण टिक नहीं सकते। हिंसादि दोष सामायिक में सहज ही छोड़ दिये जाते हैं। अतः आत्म-स्वरूप को पाने की इसे मुख्य सीढ़ी कह सकते हैं। 'भगवती सूत्र' में स्पष्ट कहा है-

**आया खलु सामाइए, आया सामाइयस्स अट्ठे।**

अर्थात् आत्मा ही सामायिक है और आत्मा (आत्म-स्वरूप की प्राप्ति)

ही सामायिक का प्रयोजन है।

सामायिक तन और मन की साधना है। इस व्रत की आराधना में तन की दृष्टि से इन्द्रियों पर नियन्त्रण स्थापित किया जाता है और मन की दृष्टि से उसके उद्वेग एवं चांचल्य का निरोध किया जाता है। मन में नाना प्रकार के जो संकल्प-विकल्प होते रहते हैं, राग की, द्वेष की, मोह की या इसी प्रकार की जो परिस्थिति उत्पन्न होती रहती है, उसे रोक देना सामायिक व्रत का लक्ष्य है। समभाव की जागृति हो जाना शान्ति प्राप्ति का मूल मंत्र है।

इस संसार में जितने भी दुःख, द्वन्द्व, क्लेश और कष्ट हैं, वे सभी चित्त के विषम भाव से उत्पन्न होते हैं। उन सबके विनाश का एकमात्र उपाय समभाव है। समभाव वह अमोघ कवच है जो प्राणी को समस्त आघातों से सुरक्षित कर देता है। जो भाग्यवान समभाव के सुरम्य सरोवर में सदा अवगाहन करता रहता है, उसे संसार का ताप पीड़ा नहीं पहुंचा सकता। समभाव वह लोकोत्तर रसायन है जिसके सेवन से समस्त आन्तरिक व्याधियाँ वैभाविक परिणतियाँ नष्ट हो जाती हैं। आत्मा रूपी निर्मल गगन में जब समभाव का सूर्य अपनी समस्त प्रखरता के साथ उदित होता है तो राग,द्वेष, मोह आदि उलूक विलीन हो जाते हैं, आत्मा में पूर्व ज्योति प्रकट हो जाती है और उसके सामने आलोक ही आलोक प्रसारित हो उठता है।

किन्तु अनादि काल से विभाव में रमण करने वाला और विषम भावों के विष से प्रभावित कोई भी जीव सहसा समभाव की उच्चतर भूमिका पर नहीं पहुँच सकता। समभाव को प्राप्त करने और बढ़ाने के लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है। जैसे अखाड़े में व्यायाम करने वाला व्यक्ति अपने शारीरिक बल को बढ़ाता है, वैसे ही सामायिक द्वारा साधक अपनी मानसिक दुर्बलताओं को दूर करके समभाव और संयम को प्राप्त करता है। अतएव प्रकारान्तर से सामायिक-साधना को मन का व्यायाम कहा जा सकता है।

जीवन में सामायिक साधना का स्थान बहुत ही महत्त्व का है। सामायिक से अन्तःकरण में विषमता के स्थान पर समता की स्थापना होती है। उसका अन्य उद्देश्य मानव के अन्तःस्थल में धधकती रहने वाली विषय-कषाय की भट्टी को शान्त करना है।

सामायिक-साधना के सच्चे, गहरे और व्यापक अर्थ को आज कम समझा जा रहा है। प्रतिदिन सामायिक करने वालों में भी अधिकांश जन ऊपरी विधि-विधान करके ही संतोष मान लेते हैं। वे उस साधना को स्पर्श करने का प्रयत्न नहीं करते। उसे सजीव व मूर्त रूप प्रदान कर जीवनव्यापी नहीं बनाते।

अगर सामायिक साधना हमारे जीव का प्रेरणास्रोत और मूलमंत्र बन जाय तो उससे अपूर्व लाभ हो सकता है। जीवन में जो भी विषाद , वैषम्य, दैन्य, दारिद्र्य, दुःख और अभाव है, उस सबकी अमोघ औषधि सामायिक है। जिसके अन्तःकरण में समभाव के सुन्दर सुमन सुवासित होंगे, उसमें वासना की बदबू नहीं रह सकती। जिसका जीवन साम्यभाव के सौम्य आलोक से जगमगाता होगा, वह अज्ञान, आकुलता एवं चित्त विक्षेप के अन्धकार में नहीं भटकेगा। (क्रमशः)

# पवित्र कौन?

*श्रीमती लाड हीरावत*

एक बहुत पहुँचे हुए महात्मा थे। लोग उन्हें भगवान की तरह मानते थे। परन्तु उन्हें छुआछुत का बड़ा भारी रोग था। वे ऊँच-नीच का भेद करते थे। छूना तो दूर निम्न जाति का व्यक्ति उनके सामने आ जाता वे स्नान करके अपने को पवित्र करते थे।

एक दिन गंगा स्नान से लौट रहे थे। अचानक एक चाण्डाल उनके सामने आया। लाख बचाते-बचाते भी उनके अंग का वस्त्र उससे छू गया। फिर क्या था महात्मा जी क्रोध से आग बबूला हो गये। उन्होंने पत्थर उठाकर क्रोध में उस चाण्डाल पर मारा तथा गरज कर बोले- अन्धा है क्या? देखकर नहीं चलता। हिम्मत कैसे हुई तुझे इस रास्ते आने की। पूजा के लिये मुझे वैसे ही देर हो रही थी, अब मुझे दुबारा जाकर स्नान करना पड़ेगा।

चाण्डाल ने हाथ जोड़ कर विनम्र स्वर में कहा- "क्षमा करें गुरु महाराज, स्नान तो मुझे भी करना पड़ेगा- वैसे मेरे से बड़ा अपराध हो गया।"

"मैं तो महान आत्मा हूँ, भला मुझे छूने से तुझे स्नान क्यों करना पड़ेगा। तेरे तो पुरखे ही क्या अगली सात पीढ़ी भी मुझे छू कर तिर गई।" महात्मा ने दंभ भरी वाणी में कहा।

चाण्डाल ने उसी विनम्रता से कहा- "हे सन्तों के सन्त! मैं तो एक साधारण सा चाण्डाल हूँ। परन्तु सबसे अपवित्र महाचाण्डाल तो क्रोध है वह जिसे छू ले, उसकी तो आत्मा भी भ्रष्ट हो जाती है। आपके उसी महाचाण्डाल क्रोध ने मुझे छूकर अपवित्र बना दिया है। यदि मैं शीघ्र ही स्नान न करूँ तो मेरी आत्मा को बड़ा कष्ट होगा। क्रोध का रोग आत्मा को पंगु बना देता है।"

महात्मा ने मन ही मन लज्जा का अनुभव किया और कदम धीमे पड़ गये। उनके मन में चल रहा द्वन्द्व सोचने को मजबूर कर रहा था कि चाण्डाल से अधिक अपावन यह क्रोध है, जिसे त्यागना अधिक जरूरी है। -*जयपुर*

# अध्यात्मयोगी पूज्य गुरुदेव हस्ती

## आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

अध्यात्मयोगी, युगमनीषी, इतिहास मार्तण्ड आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का जीवन साकों के लिए प्रेरणास्रोत रहा। जीवन-निर्माण हेतु सामायिक एवं स्वाध्याय उनकी विशेष प्रेरणाएँ थीं। यथायोग्य व्यक्ति को तदनुसार आगे बढ़ने की प्रेरणा करना उन युगमनीषी का वैशिष्ट्य था। रत्नवंश के अष्टम पट्टधर आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने अपने प्रवचनों में अपने पूज्य गुरुदेव के जीवन पर जो विचार प्रकट किए हैं, उन्हें संकलित कर प्रस्तुत किया जा रहा है। आशा है इससे पाठकों को श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के विराट् व्यक्तित्व एवं आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की विनम्रता, श्रद्धा एवं गुणदृष्टि का बोध हो सकेगा। *-सम्पादक*

गगन मण्डल में उदीयमान सूर्य का परिचय नहीं दिया जाता। उसका प्रकाश और उसकी ऊष्मा ही उसके परिचायक हैं। फूल का परिचय उसका विकसित रूप और सुगंध है, जिस पर भ्रमर-दल स्वतः दौड़े हुए चले आते हैं। पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवन्त का भी क्या परिचय दूँ, वे श्रमण संस्कृति के अमरगायक, जैन संस्कृति के उन्नायक, युग को सामायिक-स्वाध्याय का अमर संदेश देने वाले महान् प्रतापी आचार्य, इतिहास के अन्वेषण के साथ इतिहास बनाने वाले आदर्श महापुरुष एवं यशस्वी सन्त थे।

आपके जीवन के कण-कण में प्रसिद्धि नहीं, सिद्धि का भाव समाया रहा। आपकी साधना का, प्रवचन-प्रभावना एवं वीतराग-वाणी के उपदेशों का लक्ष्य प्रभाव नहीं स्वभाव में लाने का रहा। आपके जीवन में विषमता नहीं समता का साम्राज्य रहा। आपकी अमर आत्म-साधना, सादगी, सरलता व सेवा का सम्मिलित संयोग रही। सम्प्रदाय में रहते भी असाम्प्रदायिक रहकर आप सबको धर्म मार्ग में आगे बढ़ते रहने की सद्प्रेरणा करते रहे। क्रियानिष्ठ होकर भी आपमें अहंकार की नहीं, आत्म-साक्षात्कार की भावना रही।

वे महामानव धर्म और दर्शन के ज्ञायक, सभ्यता और संस्कृति के रक्षक, न्याय और नीति के पालक, आगम-आज्ञा के आराधक, सत्य और शिव के सजग साधक, धर्म की आन-बान और शान के चतुर चितेरे, देशकाल की परिस्थितियों के प्रबुद्ध विचारक रहे। मन के श्याम पक्ष को आराधना से उज्ज्वल बनाने वाले, सामायिक-साधना रूप मन्त्र के दाता एवं अज्ञान अन्धकार को हटाने वाले स्वाध्याय दीप के प्रद्योतक रहे। आपके जीवन में स्वार्थ का कोई संकेत नहीं, परोक्ष-प्रत्यक्ष में कोई अन्तर नहीं, प्रदर्शन-आडम्बर नहीं, लोभ-लालच नहीं, मात्र आत्मा को परमात्मा बनाने की टीस, साधक से सिद्ध बनाने की अन्तःकामना, समाज को ऊपर उठाने की एवं सुधार का दिशाबोध

देने की अन्तर गूँज रही।

इस युग-पुरुष ने ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तपरूप मोक्ष-मार्ग के बल पर चतुर्विध संघ को आगे बढ़ने का संदेश दिया और निर्भीकता का, सच्चाई का, वीतरागता का, सिद्धान्त पर दृढ़ रहने का, मर्यादाओं एवं नियम-पालन का नूतन पाठ पढ़ाया। वे स्वयं सिद्धान्त पर अटल रहे। लाउडस्पीकर के निषेध, सामाचारी के पालन और संवत्सरी आदि के सिद्धान्तों पर दृढ़ रहे। जीवन में कभी हिम्मत नहीं हारी। छोटे से संघ में भी मर्यादा तोड़ने वालों को निकालते कभी हिचकिचाये नहीं।

युगशास्ता गुरुदेव के उच्च साधक व्यक्तित्व एव कृतित्व के समक्ष बिना किसी भेद के जैन जैनेतर सभी श्रद्धावनत रहे। आपने संघ में समता के मेरुदण्ड को पुष्ट किया व स्वाध्याय के घोष का शंखनाद किया। आपकी इन प्रेरणाओं को आत्मोत्थान व संघोन्नति का अनिवार्य साधन मानते हुए सभी ने स्वीकारा है और उसका मूर्तरूप अन्य परम्पराओं द्वारा भी स्वाध्याय संघों की स्थापना के रूप में प्रत्यक्ष दृष्टिगत हो रहा है। आपके रोम-रोम में प्रेम, एकता, अनुराग संचरित होता रहा तथा अंतस् में करुणा का अविरल स्रोत निरंतर प्रवाहमान रहा।

भगवान की वाणी में ओज, हृदय में पवित्रता, उदारता एवं साधना में उत्कर्षता रही। आपका बाह्य व्यक्तित्व जितना नयनाभिराम था, उससे भी कई गुणा अधिक भीतर का जीवन मनोभिराम रहा।

आपके जीवन में सागर-सी गंभीरता, चन्द्र-सी शीतलता, सूर्य-सी तेजस्विता, पर्वत-सी अडोलता का सामंजस्य एक साथ देखने को मिला। आपकी वाणी, विचार एवं व्यवहार में सरलता का गुण एक अद्भुत विशेषता रही। जीवन में कहीं छिपाव नहीं, दुराव नहीं। सरलता, मधुरता एवं निष्कपटता का अद्भुत संगम था आपका जीवन।

गुरुदेव ने साधक जीवन में अहंकार को काला नाग मानते हुए उत्कृष्ट साधना के स्वरूप को स्वीकारा, क्योंकि जिसको काले नाग ने डस लिया हो वह साधना की सुधा पी नहीं सकता। गुरुदेव दया के देवता रहे। दया साधना का मक्खन है, मन का माधुर्य है। दया की रस धारा हृदय को उर्वर बनाती है। जप-साधना आधि-व्याधि-उपाधि को समाप्त कर समाधि प्रदान करने वाली है, अतः आपने भोजन की अपेक्षा भजन को अधिक महत्त्व दिया। मौन-साधना आपकी साधना का प्रमुख एवं अभिन्न अंग रहा।

शिक्षा की अनिवार्यता को महत्त्व प्रदान करते हुए आपने फरमाया कि

जीवन में शिक्षा के अभाव में साधना अपूर्ण मानी गई है। शिक्षा का वही महत्त्व है जो शरीर में प्राण, मन व आत्मा का है। जीवन में चमक-दमक, गति-प्रगति, व्यवहार-विचार सब शिक्षा से ही सुन्दर होते हैं। संसार की सब उपलब्धियों में शिक्षा सबसे बढ़कर है। दीक्षा के साथ भी शिक्षा अनिवार्य है। यही कारण है कि आप शिष्य-शिष्याओं एवं श्रावक-श्राविकाओं को स्वाध्याय-साधना रूप शिक्षा की अनमोल प्रेरणा देते रहें।

आचार्य भगवन्त का दृढ़ मन्तव्य रहा कि जीवन निंदा से नहीं निर्माण से निखरता है। निंदक भी कभी कुछ दे जाता है। जैसा कि कवि का कथन है- "निंदक नियरे राखिये, आंगन कुटी छवाय। बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय।।" अतः आपने निंदक को भी अपना उपकारी बताया। स्तुति वालों से कहा- 'तुम्हारा मेरे पर स्नेह है, अतः तुम राग से कहते हो।' तो विरोध वालों से कहा- 'विरोध मेरे लिए विनोद है।' अनुकूल-प्रतिकूल हर स्थिति में गुलाब की तरह मुस्कराते रहना, यही समता-साधना की सही कला है और आप उसी समता-साधना के साधक शिरोमणि रहे।

सं. २०४१ के जोधपुर चातुर्मास में क्षमापना के उपलक्ष्य में युवाचार्य महाप्रज्ञ रेनबो हाउस पधारे तब उन्होंने कहा था- "लोग कहते हैं आप अल्पभाषी हैं, कम बोलते हैं। पर कहाँ हैं आप अल्पभाषी? आप बोलते हैं, बहुत बोलते हैं। आपकी जीवन बोलता है, संयम बोलता है।"

अस्वस्थता की स्थिति देख संतों ने सहारा लेकर विराजने का निवेदन किया तो आचार्य भगवंत बोले-"धर्म का सहारा ले रखा है।" यही बात पाली में विदुषी महासती श्री मैनासुन्दरीजी के कहने पर भगवंत ने कही थी-"आपने मेरे गुरुदेव को नहीं देखा, नहीं तो ऐसा नहीं कहती।"

आप संघ में रहे तब भी एवं बाहर रहे तब भी सभी महापुरुषों का आपके प्रति समान आदर भाव रहा। आचार्य श्री आमाराम जी म.सा. आपके लिये 'पुरिसवरगंधहत्थीणं' पद का प्रयोग करते थे। आचार्य श्री आनन्दऋषि जी म.सा. समय-समय पर समस्या का समाधान मंगाते थे। आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.सा. स्वयं को साहित्य के क्षेत्र में लगाने में आपका उपकार मानते थे। प्रवर्तक श्री पन्नालाल जी म.सा. आपको विचारक एवं सहायक मानते थे और प्रत्येक स्थिति में साथ रहे। आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. ने आपको सिद्धान्तवादी एवं परम्परावादी माना।

आप गुणप्रशंसक व गुणग्राहक रहे तथा परनिंदा से सदैव दूर रहे और जीवन पर्यन्त इसी की प्रेरणा की। आप प्रचार के पक्षधर थे, किन्तु आचार को

गौण करके प्रचार के पक्ष में नहीं रहे। "जिनके मन में गुरु बसते हैं, वे शिष्य धन्य हैं, पर जो गुरु के मन में रहते हैं, जिनकी प्रशंसा शोभा गुरु करते हैं, वे उनसे भी धन्य धन्य हैं।" आपश्री पर यह कथन आपके माहात्म्य को स्पष्ट करता है।

भगवंत शिथिलाचार रूप विकार की विशुद्धि कर सारणा, वारणा, धारणा के पोषक रहे। आपने संघ के संगठन, संचालन, संरक्षण, संवर्धन, अनुशासन एवं सर्वतोमुखी विकास व अभ्युत्थान हेतु जीवन समर्पित कर दिया।

**"सतगुरु की महिमा अनंत, अनंत किया उपकार।**
**लोचन अनंत उघारिया, अनंत दिखावन हार।।"**

सद्गुरु पूज्य भगवंत के चरणों में भक्तों की भीड़ लगी रहती थी। जिज्ञासु अपनी जिज्ञासाएँ लेकर आते और संतुष्टि प्राप्त कर चले जाते। आशावादी अपनी आशाएँ लेकर आते और प्रसन्नता से आप्लावित होकर जाते। श्रद्धालु अपनी श्रद्धा लेकर आते और व्रत-नियम के उपहार से उपकृत होकर जाते। भक्त अपनी भक्ति से आते और आत्मिक शक्ति लेकर चले जाते। भावुक अपने भावनायुक्त अरमान लेकर आते और भाव-विभोर होकर लौट जाते। सभी समस्याओं का समाधान, आपश्री के चरणों में होता था।

संध्या-समय सूर्य जब अस्ताचल की ओर जाता है तो उसका प्रकाश भी मंद हो जाता है। किन्तु आचार्य भगवन्त सूर्य से भी अधिक विलक्षण व्यक्तित्व के धनी थे। जीवन की सांध्य-वेला में भी उनका ज्ञानसूर्य नई-नई किरणें फेंककर सबको सावधान कर रहा था, समाधि-साधना चमत्कृत कर रही थी। आप आंख बंद करके भी चौबीस घंटे जागृत थे, आत्मस्थ थे, अपने आप में लीन थे, अप्रमत्त थे। आपने भोजन तो छोड़ दिया, पर भजन नहीं छोड़ा। चौबीसों घंटे माला आपके हाथ में सुशोभित थी। अंगुलियों पर ललाई आने पर, आपके हाथ से माला लेने पर भी पौर पर माला चलती रहती, परिणामस्वरूप माला फिर हाथ में देनी पड़ती। चरणों में बैठकर ऐसा महसूस होता था कि मानो ज्ञान-सिंधु के चरणों में बैठे हैं। नित्य नवीन अनुभव मिलते रहते थे।

आपकी विशेषताओं का और गुणों का कथन करना असंभव है। क्या कभी विराट् सागर को अंजलि में भरा जा सकता है? मेरु को तराजू में तोला जा सकता है? पृथ्वी को बाल चरण से नापा जा सकता है? कदाचित् ये सब संभव हो सकता है, परन्तु गुण-खान पूज्य गुरुभगवन्त के गुणगान संभव नहीं।

जिनका जीवन कथनी का नहीं करणी का, राग का नहीं त्याग का संदेश देता है, जन-जन के हृदय सम्राट साधकों के जीवन निर्माता, भक्तों के भगवान, साधु मर्यादा के उत्कृष्टपालक एवं संरक्षक, असीम गुणों के अक्षय

भंडार, संयमजीवन प्रदाता, इस जीवन के कुशल शिल्पकार परम पूज्य आचार्य भगवन्त को मैंने अपने चर्मचक्षुओं से जिस रूप में देखा, वह महज अनुभूति का विषय है। इस जीवन में हर क्षण उन महनीय गुरुवर्य का अनन्त उपकार रहा है, संयम के हर कदम पर उनकी महती प्रेरणा रही है, उनका वरदहस्त सदा पाथेय बन सम्बल देता रहा है। साधक जीवन की अभिव्यक्ति वाले अनेक सूत्र भगवन्त के जीवन में साकार सिद्ध थे। उनके जीवन-सूत्र शिक्षा बन साधक-जीवन का पथ प्रशस्त कर रहे हैं।

संवत् २००६ के नागौर चातुर्मास में आचार्य भगवंत ने अपने जीवन में सधा हुआ एक सूत्र दिया-

**खण निकम्मो रहणाो नहीं, करणो आतम काम।**
**भणणो, गुणणो, सीखणो, रमणो ज्ञान आराम।।''**

चौदह वर्ष की वय में इस बालक ने (मैंने) नागौर चातुर्मास में देखा कि समग्र संसार जिस समय गहन निद्रा में सोया रहता है, उस समय भी वह अप्रमत्त साधक स्मरण व ध्यान में लीन रहता। रात्रि १२ से ३ बजे के बीच जब भी भगवन्त जाग जाते, मैंने उन्हें सीढ़ियों में एक पांव ध्यानस्थ खड़े होकर साधना करते पाया। भोगियों के लिये जो निद्रा का सयम है, उन आत्मयोगी महापुरुष के लिये वह निर्जरा का समय होता था। संसारी जन दिन में भी सूखपूर्वक विश्रान्ति के लिए ही तो यत्नशील रहते हैं, पर महापुरुष तो रात्रि में भी आत्मा के अनन्त प्रकाश के प्रकटीकरण के लिये यत्नशील रहते हैं। जागरमाणा उन महामनीषी के लिये रात्रि भी दिन के समान ही थी।

श्रमण भगवान महावीर का कथन "देवावि तं नमंसन्ति जस्स धम्मे सया मणो" भगवन्त के जीवन में साकार देखा। जिनके मन में धर्म रम गया है, उन दृढ़ संयमी श्रमण भगवन्त के चरणों में देवता भी झुकें, तो आश्चर्य क्या? अनन्तपुरा आदि अनेक स्थानों पर उन पूज्यपाद के पावन पदार्पण व प्रभावक प्रेरणा से पशुबलि बन्द हो जाना जैसे अनेक उदाहरण उनके साधनानिष्ठ जीवन प्रबल प्रभाव बताते हैं। अहिंसा, संयम एवं तप से भावित रत्नाधिक महापुरुषों के लिये न कोई भय है, न उनके जीवन में स्व-पर का कोई भेद है और न कोई खेद है। "अहिंसा प्रतिष्ठायां वैरत्यागः" जिनके रोम-रोम में दया का वास हो, प्रत्येक प्राणी के कल्याण की कामना हो, उन अभय के देवता से भला किसका वैर हो सकता है, नागराज एवं अरण्य के राजा सिंहराज भी नतमस्तक हो जायें, तो भला आश्चर्य क्या? भव-भव से संचित कर्म शत्रु भी तो उनकी आत्मा के पुरुषार्थ या सिंहनाद के समक्ष कहाँ टिक पाते हैं। अलवर के विहार क्रम में मैं साथ था। रात्रि में शेर की दहाड़ सुनी, पर शेर जैसे आया, वैसे चल दिया।

षट्कायप्रतिपालक महापुरुष स्वयं तो निर्भय होते ही हैं, अपने संसर्ग, सान्निध्य में आने वालों के लिये भी अभयप्रदाता बन जाते हैं। सं. २०२२ में आचार्य भगवन्त का बालोतरा चातुर्मास था। मेरी दीक्षा का दूसरा वर्ष था। उस समय भारत-पाकिस्तान की लड़ाई का प्रसंग आया। भगवन्त उस समय श्रमण संघ में उपाध्याय थे। आचार्य श्री आनन्दऋषिजी ने पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी महाराज के लिये लिखवाया कि ऐसी स्थिति में कभी स्थान बदलना पड़े तो आप स्थान बदल दें। उस लड़ाई में बाड़मेर से वायुयान बालोतरा होकर जोधपुर जाते। वायुयानों की गड़गड़ाहट सुनी जाती, बम गिरते। कुछ बम जोधपुर से पहले भी गिरे, जोधपुर में सैकड़ों बम गिरे, लेकिन नुकसान नहीं हुआ। आचार्य सम्राट् के समाचार आने पर भी भगवन्त ने स्थान नहीं बदला, निर्भयता से वहीं चातुर्मास किया।

संयमनिष्ठ महापुरुष कभी चमत्कार नहीं दिखाते। ऋद्धियाँ, सिद्धियाँ व चमत्कार तो उनके अनुचर होते हैं। उनका जीवन स्वयं चमत्कार बन जाता है। स्वयं भगवन्त से पीपाड़ में सुना- बारह वर्ष तक यदि कोई 'तच्चिते तम्मणे' होकर सत्य भाषण व सद् आचरण करे तो उसे वचन सिद्धि हो जाती है। निर्मल मतिश्रुत के धारक उन महामनीषी के अल्प संभाषण में भी भक्तों को भविष्य का सहज संकेत मिल जाता था। श्रद्धालु भक्तजन आने वाली विपत्तियों का आभास पा श्रद्धावनत हो जाते थे।

समत्व साधक भगवन्त जहाँ-जहाँ पधारे, वैषम्य दूर होता गया। सिवांची का विवाद जो कई सन्त-महापुरुषों की प्रेरणा से न सुलझ पाया, धड़ेबन्दी भी इतनी मजबूत कि घर आया जामाता भोजन नहीं करे, राखी बांधने आई भगिनी भाई के घर का पानी भी नहीं पीये। परस्पर विभेद इतना कि विवाद का निपटारा करने बैठे पंच भी एक जाजम पर बैठने को तैयार नहीं, लूनी नदी से रेत मंगाकर उस पर बैठे। सामाजिकों के मन में कैसी गहरी खाई! सामायिक के आराधक आचार्य भगवन्त का समत्व का सच्चा संदेश सिवांचीवासी भाइयों के गले उतरा और वहाँ जन-जन में स्नेह सरिता प्रवाहित हुई। समदड़ी, किशनगढ़, बालेसर आदि अनेक स्थानों पर समाज में व्याप्त धड़ेबंदी व कलह के बादल आपके पावन पदार्पण व प्रेरणा से छंट गये।

जिनके स्वयं के मन में पक्षपोषण व साम्प्रदायिकता की भावना न हो, वह महापुरुष ही समाज को समत्व व एकत्व का संदेश दे सकता है। आपके जीवन में अनेक बार ऐसे प्रसंग आये जब अन्य परम्परा के असंतुष्ट संत गुरुचरणों से विमुख हो आपकी सेवा में आये, पर आपने कभी उन्हें प्रोत्साहित नहीं किया, वरन् समझा-बुझा कर सत्परामर्श देकर पुनः गुरु चरणानुयायी

बनाया। मोहनीय के उदय से कभी किसी सम्प्रदाय का कोई संत कभी भटक गया तो हवा उड़ाने की बजाय पुनः श्रावकों का मार्गदर्शन कर उन्हें स्थिर ही किया व उन परम्पराओं का सम्मान व जिनशासन की गरिमा को अक्षुण्ण बनाये रखा। तभी तो सभी परम्पराओं के महापुरुषों का आपके प्रति अनन्य स्नेह व श्रद्धाभाव था। विपरीत परिस्थिति होने पर आपसे मार्गदर्शन, सहयोग व संरक्षण लेने में किसी को कोई संकोच नहीं हुआ।

सं. २०१२ में भगवन्त का चातुर्मास अजमेर में था। आचार्य सम्राट् पूज्य आनन्दऋषि जी म.सा. के कुछ संत भी वहीं थे। दो संत अस्वस्थ हो गये। आचार्य सम्राट ने संतों को पत्र लिखवाया- "मेरे में और पूज्य श्री में कोई भेद नहीं है, तुम उनकी सेवा में रहकर स्वास्थ्य लाभ करके आओ।"

जप-साधक गुरुदेव के जीवन की बुजुर्गों से सुनी हुई घटना है। जयपुर में एक सम्प्रदाय के विशिष्ट पद वाले महापुरुष का एक संत रात्रि में गायब हो गया। खोजबीन प्रारम्भ हुई। संत के संयम-जीवन व संघ की प्रतिष्ठा का सवाल था। श्रावकगण पूज्यपाद की सेवा में पहुंचे, निवेदन किया। ध्यान योगी आचार्य भगवन्त के ध्यान के बाद कुन्दीघर भैरूजी के रास्ते में मिलने का संकेत फरमाया। श्रावकगण पहुंचे व पुनः उसे गुरु चरणों में संभलाया। ध्यान की कैसी एकाग्रता! सामान्य जन जैसे रील में देखते हैं, आचार्य भगवन्त को ध्यान में वैसे दृष्टिगोचर हो जाता था। ध्यान-साधना से जिनकी ग्रन्थियों का छेद हो जाता है, वे महासाधक ही साधना की ऐसी उच्च स्थिति को प्राप्त कर सकते हैं।

महापुरुषों का दर्शन, वन्दन व समागम ही संकटनाशक बन जाता है। उन महापुरुष का व्यक्तित्व ही ऐसा महिमामय था, साधना ही ऐसी अत्युच्च कोटि की थी, उनके सान्निध्य के परमाणु पुद्गल ही इतने पवित्र थे, उनका आभा मण्डल ही इतना दिव्य देदीप्यमान था कि मानव की तो बिसात ही क्या? सुर-असुर कृत बाधाएँ भी टिक नहीं पाती थीं। संकटग्रस्त भक्तों का सहज समाधान हो जाता था। मैंने स्वयं साधक जीवन में उनके सान्निध्य में रहते हुए अनेक भक्तों को, जिन्होंने जीवन की, संकट मुक्ति की सभी आशाएँ छोड़ दी, सहज ही संकट मुक्त होते देखा है।

मैंने उन ज्ञान सागर साधना सुमेरु गुरु भगवन्त को चर्म चक्षुओं से जो देखा है, उसका अंश मात्र कह पा रहा हूँ। एक प्रवचन क्या, समग्र जीवन ही उन ज्ञान सागर के बारे में बोलता रहूँ तो भी बोलना शेष ही रहेगा। ज्ञान चक्षुओं से उन महापुरुष के अन्तर गुणों का अवलोकन अतिशय ज्ञानियों के सामर्थ्य का विषय है।

# माया

*श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा*

चार कषायों में 'माया' तीसरा कषाय है। अठारह पापों में 'माया' आठवाँ पाप है। विचार और प्रवृत्ति में एकरूपता का अभाव 'माया' है। माया का अर्थ कपट व छल है। अपने स्वार्थ के लिये दूसरों को ठगने या धोखा देने की चेष्टा की जाती है, उसे माया कहते हैं। माया-कपट विकार हैं जो मनुष्य की सद्वृत्तियों को घुन की तरह धीरे-धीरे खोखली बना देते हैं। आत्मबल की शत्रु माया है। माया प्रज्वलित अग्नि के समान है, जिसका स्पर्श करने से आत्मा के श्रेष्ठ गुण क्षण भर में जल कर भस्म हो जाते हैं। माया भी मुक्ति की प्रतिबन्धक है। माया के कारण मायावी तो कर्मबंध करता ही है, दूसरे प्राणी को भी कष्ट में डालता है, अतः माया भयंकर पाप है।

प्रतिक्रमण में चौथे श्रमण सूत्र में बोला जाता है-

**''पडिक्कमामि तीहिं सल्लेहिं य, मायासल्लेणं, नियालसल्लेणं मिच्छदंसण सल्लेणं।।''**

तीन प्रकार के शल्य जीव को दुर्गति में ले जाने वाले हैं। पहला शल्य है- माया शल्य। भगवान ने कहा मा+या = इसके पास न जा। माया के जाल में फंसा मानव धर्म की या संसार की कोई क्रिया करते हुए अन्तःकरण में माया रखता है तो उसके परिणामस्वरूप उसे सही लाभ नहीं मिल पाता है।

मायावी व्यक्ति बाहर से कुछ कहता है और करता कुछ है। माया के साथ मीठे वचन बोलकर धोखा देने से मित्रता टूट जाती है। माया के कारण मनुष्य के हृदय में कुटिलता का प्रवेश होने पर उसके अन्य सद्गुण स्वतः समाप्त हो जाते हैं। सूत्रकृतांग सूत्र में भगवान महावीर ने कहा है-

**''जइ वि य नगिणे किसे चरे, जइ वि य भुंजिय मासमंतसो।**
**जे इह मायाहि भिज्जई, आगन्ता गब्भायणन्तसो।।''** 1.2.1

कहने का तात्पर्य है कि साधनों के क्षेत्र में साधक वस्त्र, पात्रादि का परित्याग करता है, वर्षों तक नग्न रह कर घोर तपस्या कर शरीर का खून व मांस सुखा देता है, किन्तु यदि वह माया की ग्रन्थि का भेदन नहीं करता है तो अनन्त बार उसे गर्भ में आना पड़ता है। जो मनुष्य कपट का त्याग नहीं करता और कपट व्यवहार करता है, उसको तिर्यंच गति प्राप्त होती है।

**''माया तैर्यग्योनस्य''**

माया के कारण तिर्यंच योनि का बंध होता है।

**''धम्मविसएवि सुहमा माया होइ अणत्था य, जहा मल्लिस्स महाबल-**

भवम्मि तित्थयर नामबन्धे वि तव विसय–थोवमाया, जाया जुवइति होउति।

– ज्ञातासूत्र 8/9

भगवती मल्ली ने महाबल के भव में तीर्थंकर नाम कर्म उपार्जन किया। तपस्या में थोड़ी-सी माया के कारण स्त्री बनना पड़ा। माया के कारण मनुष्य को बार-बार तिर्यंच योनि में जन्म लेना पड़ता है। उसे कोई बोध प्राप्त नहीं होता है और न अपनी आत्मा को ही शुद्ध कर पाता है।

आचारांग सूत्र में कहा है-

**"माई पमाई पुण एइ गब्भं।।"1.3.1**

इसका तात्पर्य है कि मायावी और प्रमादी पुनः पुनः गर्भ में जन्म-मरण करता है। जो व्यक्ति माया में फंस जाता है, वह अनन्त बार गर्भ के दुःखों को पाता है। माया का त्याग दुःख से बचने के लिये करना चाहिए।

एक कहावत है "मुख में राम बगल में छुरी"। मायावी का व्यवहार बाहर से अच्छा होता है और उसका व्यवहार अन्दर से कुछ और होता है। मायावी बाहर से बड़े अच्छे मधुर वचन बोलता है, विनम्र होता है, धार्मिक स्वभाव वाला दिखता है, परन्तु उस व्यक्ति का हृदय अन्दर से काला होता है। ऐसा व्यक्ति धोखेबाज और कपटी होता है। बहुत से मनुष्य मन से कुछ सोचते हैं, वाणी से कुछ और बोलते हैं और कर्म से कुछ और ही करते हैं। ऐसे मनुष्यों को बहुत माया वाले जान कर उन पर विश्वास नहीं करना चाहिए। उनकी मित्रता भी स्वार्थ के कारण होती है।

**"माया मित्ताणि नासेई"–दशवैकालिक सूत्र 8.38**

माया मित्रता का विनाश करने वाली होती है।

मायावी मनुष्य के संबंध में उचित ही कहा है-

**"तन उजला, मन सांवला, बगुला कपटी भेख।**
**या सूं तो कागा भला, बाहर भीतर एक।।"**

उत्तराध्ययन सूत्र में तो यहाँ तक कहा गया है कि अगर भिक्षु भी सदाचारी नहीं है तो उसको नरक में जाना पड़ेगा। अगर कोई गृहस्थ सुव्रतों का पालन करता है तो वह देवलोक में जा सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि अगर साधु की साधना सच्ची नहीं है, दोषपूर्ण है, उसमें कपट है, दिखावा है तो वह निरर्थक है। उत्तराध्ययन सूत्र में कहा गया है-

**"पिंडोलए व दुस्सीले, णरगाओ न मुच्चइ।**
**भिक्खाए वा गिहत्थे वा, सुव्वए कम्मई दिवं।।"**

–उत्तराध्ययन 5.22

भिक्षा से जीवन चलाने वाला भी यदि कुशील हो तो वह नरक से नहीं

छूटता है। भिक्षु हो या गृहस्थ, यदि वह सुव्रती है तो स्वर्ग में जाता है। अतः माया और कपट से बचें। किसी भी स्थिति में कपट व्यवहार न करें। कपट व्यवहार नहीं होगा तो निन्दा के पात्र नहीं बनेंगे।

यह जानना आवश्यक है कि माया कितने प्रकार की होती है-

1. **अनंतानुबंधी माया**– ऐसी माया दूर होना अत्यन्त दुष्कर है।
2. **अप्रत्याख्यानी माया**– अत्यन्त परिश्रम से दूर हो सकती है।
3. **प्रत्याख्यानवरण माया**– ऐसी माया सरलतापूर्वक दूर हो सकती है।
4. **संज्वलन माया**– ऐसी माया सावधानी से शीघ्र स्वतः दूर हो जाती है।

अब प्रश्न पैदा होता है कि माया को कैसे जीता जा सकता है? सरल व्यवहार से माया पर विजय प्राप्त की जा सकती है। दशवैकालिक सूत्र में कहा गया है-

**"मायमज्जवभावेण।"** 8.39

माया कपट को सरलता से जीता जा सकता है। सरल व्यवहार से माया पर विजय प्राप्त की जा सकती है। इस संबंध में उत्तराध्ययन सूत्र में कहा गया है-

**"मायाविजएणं अज्जवं जणयइ।।"** 29.69

माया पर विजय पा लेने से ऋजुता-सरलता आती है। सरल स्वभावी का व्यवहार कपटपूर्ण नहीं हो सकता। वह सम्यग्दृष्टि होता है। धर्म सरल आत्मा में टिक सकता है। सरलता के अभाव में धर्मसाधना पूर्ण नहीं हो सकती। मायावी या कपट व्यवहार करने वाला मिथ्यादृष्टि होता है।

इसी तरह भगवती सूत्र में कहा गया है-

**"माई मिच्छादिट्ठी अमाई सम्मदिट्ठी।** 5.4.28

इतना जानना आवश्यक है कि मान को देखने वाला व्यक्ति माया को देखकर उससे बच सकता है। जैसाकि आचारांग में कहा गया है- "जे माणदंसी से मायादंसी।" जो व्यक्ति मानदर्शी होता है वह मायादर्शी भी होता है।

माया हमारे लिये बहुत हानिप्रद है। माया, कपट और छल का त्याग करके अपने जीवन में सरलता को स्थान देना चाहिए। बिना सरलता के साधना में शारीरिक कष्ट तो अवश्य होता है, परन्तु धर्म के अंकुर उत्पन्न नहीं होते हैं। पाठकों से नम्र निवेदन है कि माया को तिलांजलि देकर सुखी जीवन बिताएँ। सरल आत्मा में शुद्धता आ जाती है तो धर्म भी आ जाता है।

*-पूर्व न्यायाधिपति, राजस्थान उच्च न्यायालय*
*संरक्षक-अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ*
*'चन्दन' बी-२, रोड़, पावटा, जोधपुर*

# प्राकृत-साहित्य में भगवान महावीर का उपदेश

*डॉ. हुकमचन्द जैन*

यह निर्विवाद सत्य है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। भगवान महावीर के समय समाज असभ्य, बर्बर तथा हिंसक था। समाज में निराशा का निविड़ अंधकार छाया हुआ था। ऐसा लगता था मानो इस संसार में मानवीय गुण, नैतिक आदर्श एवं जीवन मूल्य नाम की कोई चीज ही नहीं बची हो। ऐसे अंधकारमय एवं बर्बर समाज में एक टिम-टिमाती हुई ज्योति दिखाई दी, जो भगवान महावीर के उपदेश थे।

भगवान महावीर के दिव्य उपदेश आगमों, टीकाओं, व्याख्याओं एवं चूर्णि साहित्य में उपलब्ध हैं। सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, करुणा, समता आदि दिव्य संदेश धीरे-धीरे कथाओं एवं चरित साहित्य में भी उपलब्ध होने लगे। इन सारे उपदेशों को सार स्वरूप अहिंसा, अनेकांत एवं अपरिग्रह के रूप में समेट लिया गया। इन तीनों सिद्धान्तों के समन्वित रूप से लोगों की सभी समस्याओं का समाधान होने लगा।

अहिंसा में मूल रूप से भावना पर विशेष बल दिया गया है। जैसा आप सोचेंगे वैसा ही करेंगे, इसलिए जीवों को मारना तो दूर रहा, उनके प्रति बुरे विचार भी हिंसा के रूप में प्रस्तुत किए गए। आचारांग में कहा है- "सभी प्राणियों को अपनी जिन्दगी प्यारी है, सबको सुख अच्छा लगता है व दुःख बुरा, वध सबको अप्रिय है और जीवन प्रिय है।"[1] आगे कहा है "हिंसा से ही दुःख उत्पन्न होता है।"[2] आचारांग में हिंसा के दुष्परिणाम समझाते हुए कहा है "हिंसा ही वस्तुतः बंधन है, यही मोह है, यही मृत्यु है और यही नरक है।"[3] आचारांग में कहा है कि हिंसा के कई कारण हैं। कुछ लोग यह मुझे मारता है, इसने मुझे मारा है और यह मुझे मारेगा, ऐसा विचार कर हिंसा करते है।"[4] ऐसी छोटी से छोटी तुच्छ भावना कभी-कभी प्राणी की जान भी ले लेती है। जीवों को मारने की भावना से दूर रखने के लिए आचारांग में महावीर के उपदेश हैं, यथा-"हे जीव! जिसे तू मारना चाहता है, वह तू ही है, जिसे तू शासित करना चाहता है, वह तू ही है, जिसे तू परिताप देना चाहता है, वह भी तू ही है।"[5] सूत्रकृतांग में कहा है कि "ज्ञानी होने का सार यही है कि किसी भी प्राणी की हिंसा न करे। अहिंसा मूलक समता ही धर्म का सार है।[6] इसलिए प्राणी आपस में वैर-विरोध न बढ़ायें।[7] भगवती सूत्र में तो "जीव चाहे स्थावर हो या त्रस, सभी को बचाने के भाव दर्शायें हैं।[8] एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय जीवों की रक्षा के

भाव हैं। एक त्रस जीव की हिंसा करता हुआ आत्मा तत्संबंधित अनेक जीवों की हिंसा करता है। वनस्पति जीवों की रक्षा के भाव भगवती सूत्र में कूट-कूट कर भरे पड़े हैं।[9] प्रश्नव्याकरण में कहा है कि कई जीव प्रयोजन से हिंसा करते हैं तथा कई बिना प्रयोजन के ही जीवों की हिंसा कर देते हैं।[10] भ. महावीर कहते हैं कि कुछ लोग क्रोध से हिंसा करते हैं, तो कुछ लोग लोभ से हिंसा करते हैं, और कुछ लोग अज्ञान से हिंसा करते हैं।[11] अहिंसा त्रस एवं स्थावर (चर-अचर) सब प्राणियों की कुशलक्षेम करने वाली है।[12] उत्तराध्ययन में अहिंसा के स्वर गूंजते हैं। इसमें महावीर ने सीधे ही कह दिया है कि "किसी प्राणी को कष्ट नहीं देना चाहिये।"[13]

निर्युक्तियों में भी अहिंसा प्रस्फुटित है। ओघनिर्युक्ति में कहा है "कुछ लोग अपने सुख की खोज में दूसरों को दुःख पहुंचाते हैं।"[14] प्रवचनसार में कहा है "यदि साधक प्रत्येक कार्य चेतना से करता है तो वह जल में कमल की भांति निर्लेप रहता है।"[15] निशीथभाष्य में वैचारिक शुद्धि पर बल देते हुये कहा है "किसी के प्रति निर्दयता का भाव रखना वस्तुतः दुःखदायी है।"[16] निर्युक्ति, टीकाओं के साथ चूर्णि ग्रंथों में भी अहिंसा की ध्वनि है। आचारांगचूर्णि में कहा है "जैसे मुझे सुख-दुःख इष्ट-अनिष्ट होते हैं, वैसे ही सब जीवों को होते हैं।"[17] इसलिये दूसरों को भी अपने समान समझना चाहिये।

भक्तपरिज्ञा में अहिंसा का महत्त्व समझाते हुये कहा है कि "अहिंसा के समान दूसरा धर्म नहीं है।"[18] किसी भी अन्य प्राणी की हत्या वस्तुतः अपनी हत्या है और अन्य जीव पर दया अपनी दया है।"[19] संस्कृत ग्रन्थ सिन्दूर प्रकरण में अहिंसा का महत्त्व दर्शाते हुएं कहा गया है "यदि पानी में पत्थर तिर जाय, सूर्य पश्चिम में उदय हो जाय, अग्नि ठंडी हो जाय, कदाचित् यह पृथ्वी जगत के ऊपर हो जाय तो भी हिंसा में कभी धर्म नहीं होता।"[20] अहिंसा के महत्त्व व जीव दया के रूप में ज्ञाताधर्मकथा में मेरुप्रभ के पूर्वभव की कथा के रूप में हाथी की कथा आती है जिसमें हाथी अपने पांव खुजलाने के लिए ऊपर उठाता है तभी अनेक जीव उसके पांव के नीचे आ जाते हैं, जीव-दया एवं हिंसा का ध्यान रखते हुए वह स्वयं एक पांव पर ही खड़ा रहता है, किन्तु जीव-रक्षा के लिए कटिबद्ध है।"[21]

मानव समस्याग्रस्त है। कहीं तनाव की समस्या है तो कहीं लाभ और लोभ की समस्या है तो कहीं झूठ, कपट, धोखाधड़ी तो कहीं अहंतुष्टि की समस्या है, तो कहीं लोक कल्याण आदि की। इन सभी समस्याओं के समाधान

हेतु भगवान महावीर ने भगवती सूत्र में कहा है "पदार्थ की सिद्धि उसे अनंतधर्मा माने बिना नहीं हो सकती।"[22] चिन्तन की यह अनंत धर्मात्मक शैली अनेकांतवाद कहलाती है। यह एक वस्तु में सुप्रतिपक्ष और स्वरूपों का प्रतिपादन करती है।[23] विभज्यवाद, सप्तभंगी आदि के आधार से अनेकांतवाद की पुष्टि होती है। अर्थात् कोई भी वस्तु एवं पदार्थ अपने आप में न पूर्ण है, न अपूर्ण है अर्थात् वह किसी दृष्टिसे पूर्ण भी है व अपूर्ण भी है, यह सापेक्ष दृष्टि ही अनेकांतवाद है।

आचारांग में कहा है "जो एक को जानता है, वह सबको जानता है और जो सबको जानता है, वह एक को जानता है।[24] जो बंधन के हेतु हैं, वे दृष्टि बदलने पर कभी मोक्ष के हेतु हो सकते हैं और जो मोक्ष के हेतु हैं, वे भी कभी बंधन के हेतु बन सकते हैं। जो व्रत, उपवास आदि संवर के हेतु हैं कभी-कभी संवर के हेतु नहीं भी हो सकते हैं और जो आश्रव के हेतु हैं वे कभी-कभी आश्रव के हेतु नहीं भी हो सकते हैं। अर्थात् आश्रव और संवर मूलतः साधक के अन्तरंग भावों पर आधारित है।[25] स्थानांग सूत्र में अनेकांत के स्वर गुंजित हैं।[26] भगवती सूत्र में कहा है "जीव शाश्वत भी है और अशाश्वत भी। द्रव्य दृष्टि (मूल स्वरूप) से शाश्वत है और भाव दृष्टि से अशाश्वत।"[27] इसीलिये जैन दर्शन में न तो एकांत भेदभाव मान्य है न एकांत अभेदभाव। जैन दर्शन भेदाभेदवादी दर्शन है। सम्मति तर्क में अनेकांतवाद का महत्त्व समझाते हुए कहा है। "जिसके बिना विश्व का कोई भी व्यवहार सम्यग् रूप से घटित नहीं होता है, जो त्रिभुवन का एक मात्र गुरु है, उस अनेकांतवाद को मेरा नमस्कार।"[28] अतः सत्य विचार दृष्टियां (नय) अपने-अपने स्थान (विचार केंद्र) पर शुद्ध हैं। कोई भी नय अपने स्थान पर अशुद्ध (अनुपयुक्त) नहीं है।[29]

भगवान महावीर ने अपरिग्रह की भावना पर भी बल दिया। आज के आर्थिक युग में व्यक्ति निन्यानवें के फेर में पड़ा रहता है। उसे स्वयं के अलावा कोई भी चीज दिखाई नहीं देती है। तुच्छ स्वार्थ के पीछे महान् अनर्थ भी कर बैठता है। ऐसी परिस्थितियों में प्राणी रक्षक नहीं भक्षक बन जाता है। प्राणी में मानवीय गुणों का अभाव हो जाता है। ऐसी विषम परिस्थितियों में महावीर ने प्राकृत साहित्य में जो संदेश दिये, उससे मानव की आत्मा जाग उठी। संसार में कहीं आर्थिक विषमता है तो कहीं सामाजिक विषमाएँ, तो कहीं राजनैतिक, धार्मिक। इन सभी के मूल में परिग्रह की भावना है। इसीलिए महावीर ने अपरिग्रह की बात को आचारांग में बड़ी दबंगता के साथ कहा है "अधिक

मिलने पर भी संग्रह न करे। परिग्रह वृत्ति से अपने को दूर रखें।"[30] आगे सूत्रकृतांग में कहते हैं "जो परिग्रह में फंसे हैं, वे संसार में अपने प्रति वैर ही बढ़ाते हैं।"[31] दशवैकालिक में कहा है-"लोभी सभी सद्गुणों का विनाश करता है।"[32] इसीलिए लोभ को संतोष से जीतना चाहिए। महावीर ने उत्तराध्ययन में कहा है "लोभ से दोनों ही लोक नष्ट होते हैं।"[33] स्थानांग में लोभरूप परिग्रह को मुक्ति का बाधक कहा है। ऋषिभाषित में परिग्रह रूपी तृष्णा के दुष्परिणाम बताते हुये कहा है "बाहर से जलती हुई अग्नि को थोड़े से जल से शांत नहीं किया जा सकता है।"[34]

उपर्युक्त परिग्रह पाप या तृष्णा के दुष्परिणाम बताते हुये संस्कृत ग्रंथ उपदेशमाला में भी कहा है "लोभ पाप का मूल है, रसासक्ति रोगों का मूल है और स्नेह शोकों का मूल है। इन तीनों को त्याग कर सुखी बनो।"[35]

उपर्युक्त अहिंसा, अनेकांत और अपरिग्रह की भावना के अतिरिक्त भी भगवान महावीर की वाणी सत्य, शील, तप, संयम, करुणा, ब्रह्मचर्य आदि अनेक मानवीय गुणों के प्रतिपादन से ओत-प्रोत है। इन समस्त गुणों को प्रत्यक्ष- अप्रत्यक्ष रूप में अहिंसा, अनेकांत, अपरिग्रह में समेट लिया जाता है। अहिंसा में विचार शुद्धि, जीवरक्षा एवं पर्यावरण संरक्षण की भावना पर बल दिया है तो अनेकांत से सहिष्णुता, सहअस्तित्व, कदाग्रह, हठधर्मिता से दूर रहकर वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को बल मिला है।

अपरिग्रह से लोभ, तृष्णा, महत्त्वाकांक्षा, चोरी आदि दुर्भावनाओं का शमन माना गया है। इसीलिये संतोष का महत्त्व आंका है। इससे प्राणी में सरलता, विनय, सेवा, दान आदि की भावना का विकास होता है।

यदि उपर्युक्त सिद्धांतों को कथाओं के माध्यम से समझाया जाय तो साधारण से साधारण व्यक्ति भी जीवन में ग्रहण कर सकता है।

## संदर्भ


1. सव्वे पाणा पिआउया, सुहसाया, दुक्खपडिकूला, अप्पियवहो पियजीविणो जीविउकामा, सव्वेसिं जीवियं पियं। आचारांग 1.2.3
2. आरंभजं दुक्खमिणं। आचारांग 1.3.11
3. वही, 1.1.2
4. वही, 1.2.6
5. वही, 1.5.5
6. एयं खु नाणिणो सारं जं न हिंसइ किंचण। सूत्रकृतांग 1.1.4.10
7. भूएहिं न विरुझेज्जा। वही, 1.15.14, एवं डॉ. प्रियदर्शनाकृत, सूक्तिसुधारस, भाग-6, पृ. 59
8. भगवती सूत्र 9.34 एवं मुनि मधुरकर, जैन धर्म की हजार शिक्षाएँ पु. 34
9. जैन, प्रेम सुमन, भगवती सूत्र में पर्यावरण संरक्षण के बीज (आलोक) पृ.2

10. प्रश्न का कारण, 1.1 अट्ठा हणंति, अणट्ठा हणंति।
11. वही, पृ. 1.1
12. अहिंसातसथावरसव्वभूयखेमंकरी। वही, 2.1
13. उत्तराध्ययन, 2.2
14. ओघनिर्युक्ति, 94
15. प्रवचनसार 3.18
16. दुःखं खु णिरणुकंपा। निशीथ भाष्य 5633
17. आचारांगचूर्णि 1.1.6
18. भक्तपरिज्ञा 91
19. वही, 93
20. सिन्दूरप्रकरण, 26
21. ज्ञाताधर्मकथा, अध्ययन 4
22. सिंघवी, सुषमा, भगवती सूत्र के विभिन्न आयाम, 20–21 नवम्बर 1993
स्याद्वाद मंजरी, सम्पादक–जगदीशचन्द्र जैन, राजचंद शास्त्रमाला, मुम्बई, 1935, गा. 22, पृ. 267
23. जैन दार्शनिक प्रकरण संग्रह, सम्पादक–नवीन जी शाह, भारतीय संस्कृति विद्या मन्दिर, अहमदाबाद 1973, पृ. 161
24. जे एगं जाणइ, से सव्वं जाणइ, जे सव्वं जाणइ, से एगं जाणइ। आचारांग 1.3.4
25. वही, 11.4.2
26. जं जीवा अजीवा भविस्संति, अजीवा वा जीव भविस्संति। स्थानांग 10
27. भगवती, 7.2
28. संन्मति तर्क, 3.47
29. वही, 3.70
30. जं पि लद्धे न निहे, परिग्गहाओ अप्पाणं अवसकिज्जा। आचारांग 1.2.5
31. परिग्गहनिविट्ठाणं वेरं तेसिं पवड्ढई। सूत्रकृतांग 1.9.3
32. दशवैकालिक, 8.13
33. उत्तराध्ययन सूत्र 9.54
34. ऋषिभाषित, 3.10
35. उपदेशमाला, पृ. 20



*-सह आचार्य एवं अध्यक्ष*
*जैन विद्या एवं प्राकृत विभाग*
*सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)*


## बच्चे सीखें धार्मिक गिनती

*प्राणिमित्र नितेश नागोता 'जैन'*

वन– पापों को हन।
टू– धर्म को छू।
थ्री– पापों से हो जा फ्री।
फोर–कभी न बनना चोर।
फाइव– सुन्दर बनाओ लाइफ।
सिक्स– धर्म का टाइम हो फिक्स
सेवन–जीवन बनाओ ए वन।
ऐट– खोलो मोक्ष का गेट।
नाइन– जीवन बनाओ सुपर फाइन
टेन– गर्व से कहो हम हैं जैन

*-भवानीमण्डी (राज.)*

# सार्स : क्या भोजन का असंयम सार्स की वजह है?

*श्री जितेन्द्र डागा*

हम सफल जीवन जीने के लिये स्वास्थ्य चाहते हैं, दीर्घायु चाहते हैं, सुख चाहते हैं, शान्ति चाहते हैं। ज्ञानीजन यह तथ्य प्रतिपादित करते हैं कि विवेक बिना शान्ति नहीं, शान्ति बिना सुख नहीं, सुख बिना स्वास्थ्य नहीं, स्वास्थ्य बिना दीर्घायु नहीं। जब विवेक की चेतना जागृत होती है तब क्या हेय है? क्या उपादेय है? यह स्पष्ट हो जाता है। किसे छोड़ना है? किसे स्वीकार करना है? यह समझ में आ जाता है। विवेकशून्य प्रवृत्ति से स्वास्थ्य खतरे में पड़ जाता है। व्यक्ति रोग से घिर जाता है। स्वयं रोगी होता है एवं आस-पास का वातावरण भी चपेट में आ जाता है।

विश्लेषकों का मानना है कि A typical Pneumonia (जिसकी वजह SARS Virus-Severe Acute respiratory Syndrom है) भी इस विवेकशून्यता एवं भोजन के असंयम की ही देन है। सार्स जिसकी परिकल्पना शुरुआती दिनों में प्लेग की भाँति की गई, उसने सैकड़ों लोगों को लील लिया, हजारों को प्रभावित किया एवं सम्पूर्ण विश्व को आतंकित कर दिया। सर्वत्र समाचार प्रसारित होने के कारण सभी के हृदय में ऐसा डर बैठा कि हांगकांग, चीन, सिंगापुर, ताइवान आदि से लोगों ने मुँह मोड़ लिया। अर्थव्यवस्था को गहरा आघात लगा। ऐसा भय व्याप्त हुआ कि रेस्टोरेंट, सिनेमा-शापिंग, भीड़-भाड़ की जगह पर लोगों ने जाना ही छोड़ दिया। खचाखच भरी रहने वाली हांगकांग की सड़कें डेढ़-दो महीने तो दिन ढलने के बाद कर्फ्यूग्रस्त इलाके जैसी लगने लगती थी। विदेशी व्यक्ति अपने मूल निवास की ओर पलायन कर चुके थे। व्यक्ति की एक छींक आस-पास बैठे सभी के रोंगटे खड़े कर देती थी। (सार्स पीड़ित) व्यक्ति की एक छींक के कारण निकलने वाली बूँदें पास में बैठे दूसरे व्यक्ति को संक्रमित कर सकती है)। इस अविश्वास एवं भयपूर्ण स्थिति ने सभी को सोचने पर मजबूर कर दिया कि सार्स का उद्गम क्या है? कैसे यह महामारी फैली?

हांगकांग के मुख्य अंग्रेजी दैनिक South China Morning Post ने यह चौंकाने वाला तथ्य प्रकाशित किया कि सार्स सबसे पहले गुआनडांग प्रान्त (Guangdong Province of China) के बावर्ची (Chefs) एवं कसाइयों (Butchers) को अपने शिकंजे में लिया।

मनुष्य के मूल स्वभाव सरलता, कोमलता, करुणा-आत्मीयता के विपरीत आचरण करने वाले; एवं प्रभु महावीर के अनुपम-अनमोल सिद्धान्त- "जीओ और जीने दो" (Live & Let Live) के प्रतिकूल आचरण करने

वाले बावर्ची एवं कसाइयों को प्रकृति ने सार्स से संक्रमित कर, दीर्घकाल तक याद रखे जाने वाला, एक सबक सिखाया है।

पशुओं में पाये जाने वाले कोरोना ग्रुप के इस वायरस ने (A typical Pneumonia) महामारी के उद्गम स्थल गुआंगडांग प्रान्त में सबसे पहले बावर्ची एवं कसाइयों को इनके अप्राकृतिक कृत्य की वजह से लपेटा। उनका इलाज करते डॉक्टर एवं नर्सिंग स्टाफ इसकी चपेट में आये। प्रशासन कुछ समझता, इसके पहले अन्य रोगी जो कि डॉक्टर एवं नर्सिंग स्टाफ की देखरेख में थे, वे भी संक्रमित हो गये। धीरे-धीरे इस प्रांत से जुड़े हांगकांग में भी इस बीमारी ने दस्तक दे दी। हांगकांग से फिर आवागमन होने की वजह से यह बीमारी सिंगापुर, कनाड़ा, बैंकाक, ताइवान आदि अनेक देशों में फैलने लगी एवं धीरे-धीरे सम्पूर्ण विश्व के लिये चिन्ता का कारण बन गई।

समाचार-पत्र (SCMP) ने आगे दूसरा मुख्य कारण बताया इस गुआंगडांग प्रान्त में रहने वाले चीनी लोंगों के खाने के असंयम को। ये लोग कुछ भी खा जाते है, यहाँ तक कि सांप, बिल्ली इत्यादि को भी नहीं बख्शते। पत्र ने लिखा (Eating any organism, even exotic animals seems to be root cause of development of SARS Virus in the people of Guangdong Province) क्षुधापूर्ति एवं स्वाद लोलुपता के कारण परिचित-अपरिचित किसी भी जानवर का मांस खा जाना ही सार्स की चपेट में आने का मुख्य कारण है।

एक और खास बात यह है कि सार्स का मुख्य बचाव है- संतुलित भोजन (Balanced Diet)। तकरीबन एक वर्ष पहले हांगकांग में जगह-जगह (MTR-Public Places) संतुलित भोजन (Balanced Diet) के पोस्टर्स लगे थे। उन पोस्टर पर संतुलित भोजन का एक पिरामिड बना था, जिसमें चित्र अंकित था। पाश्चात्य संस्कृति या मांसाहारी समाज के डॉक्टर एवं स्वास्थ्य विभाग के द्वारा शोध के बाद संतुलित भोजन का अनुपात इस पिरामिड में डॉक्टरों के अनुसार दिया गया है-

Eat less (कम खाएँ)
Eat Moderate (थोड़ा खाएँ)
Eat More (ज्यादातर खाएँ)
Eat Most (ज्यादा से ज्यादा खाएँ)

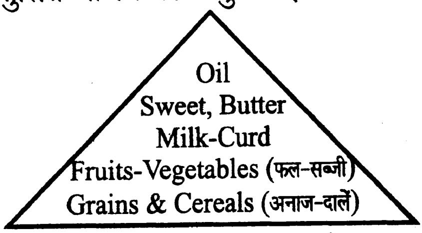


यह पोस्टर इस धारणा को स्पष्ट खण्डित करता है कि " शाकाहार से शरीर में कमजोरी रह जाती है।" मनुष्य को रोग प्रतिरोधक शक्ति अनाज व

दालों के ज्यादा से ज्यादा सेवन करने से मिलती है। शरीर को हृष्ट -पुष्ट बनाते हैं-सब्जियाँ एवं फल। सामिष भोजन (माँस व अण्डे) मात्र स्वाद लोलुपता की वजह से खा रहे हैं लोग। पर यह स्मरण रहना चाहिये कि मूक जानवरों को खून के आँसुओं से रुलाने वाले लोग सार्स इत्यादि महामारी-रोगों को सहज निमन्त्रण दे रहे हैं। दूध व दही ही शरीर को उतनी शक्ति प्रदान कर देते हैं जितनी सामिष भोजन से शरीर को मिलती है। मनुष्य की प्रकृति के प्रतिकूल, अनावश्यक ही स्वाद लोलुपता की वजह से, मनुष्य सामिष भोजन करता है तो भूख सीमित रह जाती है एवं वह फल-सब्जी, अनाज-दालें ले ही नहीं पाता है, जिससे उसकी रोग-प्रतिरोधक शक्ति बन नहीं पाती है। फिर सार्स जैसे वायरस की चपेट में आसानी से फंस जाते हैं।

फैशन परस्त एवं आधुनिकता की ओर दौड़ने वाली नवीन पीढ़ी को यह समझ लेना चाहिये कि हमारी संस्कृति एवं परम्पराओं में सुख प्राप्ति के रहस्य निहित हैं। हम गलतियाँ करें, फिर उनसे सीखें, उसके लिये हमारे पास आयु बहुत कम एवं बुद्धि की भी सीमितता है। इसलिये अनुभवी एवं ज्ञानियों के दिखाये मार्ग पर श्रद्धा से अनुसरण कर ही एवं सप्तकुव्यसन त्याग रूपी लक्ष्मण रेखा का सम्मान कर ही आध्यात्मिक, भौतिक एवं शारीरिक सुख प्राप्त कर सकते हैं। सीधी-सादी सरल भाषा में सार कहा जाये तो यह है कि सुखी-निरोगी जीवन जीना हो तो एक ही उपाय है "दाल-रोटी खाओ प्रभु के गुण गाओ।"

*-१३७०, ताराचन्द नायब का रास्ता,*
*जौहरी बाजार, जयपुर*

<◆X◆X◆X◆X◆X◆> <◆X◆X◆X◆X◆X◆> <◆X◆X◆X◆X◆X◆>

# दानवीर भामाशाह

## दिलीप धींग

राजा भामाशाह (लगभग 1542-1598 ईस्वी) मेवाड़ (राजस्थान) के अनुश्रुत वीर-नायक, महाराणा प्रताप के बालसखा, सहयोगी और सलाहकार थे। भामाशाह की स्वामि-भक्ति ने महाराणा के जीवन में, उनके राज्याभिषेक के समय से लेकर, महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। भामाशाह एक साहसी एवं अनुकरणीय सैन्य-कौशल के धनी थे। उन्होंने शक्तिशाली मुगल सेना के खिलाफ मेवाड़ के अनेक सैन्य- अभियानों में निर्णायक-भूमिका निभाई थी, जिनमें हल्दीघाटी की प्रसिद्ध लड़ाई भी शामिल है। महाराणा प्रताप द्वारा उन्हें मेवाड़ का दीवान नियुक्त किये जाने के बाद, उन्होंने राज्य के चहुँमुखी विकास के लिए काम किया और राज्य की अर्थव्यवस्था के साथ-साथ सैन्य-प्रबंधन में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी उपलब्धियाँ इतनी व्यापक थीं कि आधुनिक इतिहासकारों ने उनका 'मेवाड़ के उद्धारक' के रूप में वर्णन किया। (भारतीय डाकविभाग द्वारा 31 दिसम्बर 2000 को जारी डाक टिकट के अवसर पर प्रकाशित विवरण)

*-बम्बोरा, जिला-उदयपुर (राज.)*

# आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

✯ श्री धर्मचन्द जैन

प्र.10 उपशम समकित के कितने प्रमुख विकल्प (भांगे) संभव हैं?

उत्तर उपशम समकित के प्रमुख तीन विकल्प हैं- जो इस प्रकार हैं-

**प्रथम विकल्प**

(अ) अनन्तानुबंधी चौक का क्षयोपशम (प्रदेशोदय होना) तथा दर्शनत्रिक का उपशम होना। यह विकल्प त्रिपुंज होने पर (मिथ्यात्व मोहनीय को मिथ्यात्व, मिश्र व समकित मोह, इन तीन टुकड़ों में विभाजित कर देना 'त्रिपुंज' कहलाता है) बनता है।

(ब) अनन्तानुबंधी चौक का क्षयोपशम, मिथ्यात्व मोहनीय का उपशम। प्रथम विकल्प में त्रिपुंज नहीं करने वाला जीव अन्तर्मुहूर्त की स्थिति पूर्ण होने पर नियमा उपशम समकित से गिर जाता है तथा मिथ्यात्व में आ जाता है। जबकि त्रिपुंज करने वाला जीव उपशम समकित से क्षयोपशम समकित भी प्राप्त कर सकता है अथवा उपशम समकित से मिथ्यात्व में भी जा सकता है। अर्थात् दोनों ही स्थितियां संभव हैं।

**दूसरा विकल्प**

अनन्तानुबंधी चौक तथा दर्शनत्रिक इन सातों ही प्रकृतियों का उपशम हो जाना।

**तीसरा विकल्प**

अनन्तानुबंधी चौक की विसंयोजना(अस्थायी क्षय) तथा दर्शनत्रिक का उपशम होना।

प्रथम विकल्प प्रथमोपशम में संभव है, जबकि दूसरा, तीसरा विकल्प द्वितीयोपशम में संभव होता है।

तीनों विकल्पों को ध्यान से देखने पर यह तथ्य उजागर होता है कि तीनों ही विकल्पों में दर्शनत्रिक का उपशम है। अनन्तानुबंधी चौक का क्षयोपशम, उपशम एवं विसंयोजना ये तीन स्थितियाँ बनती हैं। इसी कारण उपशम समकित के तीन विकल्प बनते हैं।

प्र. 11 उपशम और विसंयोजना में क्या अन्तर है?

उत्तर यद्यपि उपशम और विसंयोजना इन दोनों ही अवस्थाओं में संबंधित

प्रकृति-अनन्तानुबंधी चौक का किसी प्रकार का उदय नहीं होता है, किन्तु इन दोनों में प्रमुख अन्तर यह है कि उपशम में कर्म सत्ता में विद्यमान होता है, जबकि विसंयोजना में कर्म सत्ता में भी विद्यमान नहीं रहता है, सत्ता में से भी समाप्त हो जाता है।

**प्र.12** उपशम समकित की प्राप्ति कैसे होती है?

**उत्तर** जब जीव शुद्ध परिणामी बनता है तब आयु कर्म को छोड़कर शेष सात कर्मों की स्थिति पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम एक कोड़ाकोड़ी सागरोपम जितनी कर देता है, उस समय चार करण होते है- १. यथाप्रवृत्तिकरण २. अपूर्वकरण ३. अनिवृत्तिकरण और ४. अन्तरकरण। इन चार करणों को पूर्ण करने पर जीव उपशम समकित (ग्रन्थिभेद जन्य) प्राप्त करता है।

**प्र. 13** यथाप्रवृत्तिकरण किसे कहते हैं?

**उत्तर** अनन्तकाल के दुःखों को सहते-सहते जब जीव शुद्ध परिणामी बनता है, तब आयुकर्म को छोड़कर शेष सात कर्मों की स्थिति अन्तः कोटाकोटि सागरोपम कर लेता है। अर्थात् पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम एक कोड़ाकोड़ी सागरोपम जितनी कर लेता है, उस स्थिति को यथाप्रवृत्तिकरण कहते हैं। यह करण अभवी जीव भी अनन्त बार कर लेता है।

**प्र.14** अपूर्वकरण किसे कहते हैं?

**उत्तर** यथाप्रवृत्तिकरण में जीव मिथ्यात्व की दुर्भेद्य गाँठ तक पहुँच जाता है, किन्तु उसे तोड़ नहीं पाता, जबकि इस करण में अपूर्व आत्मिक श्रद्धान रूप परिणाम होने से मिथ्यात्व की गाँठ को तोड़ देता है। यह करण भवी जीव ही कर पाता है, अभवी नहीं। इस करण के होने पर भी समकित का लाभ प्राप्त होना अनिवार्य नहीं है।

**प्र. 14** अनिवृत्तिकरण किसे कहते हैं?

**उत्तर** मिथ्यात्व की गांठ टूटने पर जब जीव के परिणाम पहले की अपेक्षा अधिक शुद्ध होतें हैं, उस अवस्था को अनिवृत्तिकरण कहते हैं। इस परिणाम को प्राप्त करने वाला जीव समकित को अवश्य प्राप्त करता है। समकित प्राप्त किये बिना वापस नहीं लौटता, इसी कारण इसका नाम अनिवृत्ति करण है। इसकी स्थिति अन्तर्मुहूर्त की है।

**प्र. 15** अन्तरकरण किसे कहते हैं?

**उत्तर** अनिवृत्तिकरण की अन्तर्मुहूर्त प्रमाण जो स्थिति बतलायी है, उसका

एक भाग शेष रहने पर अन्तरकरण होता है। इसमें मिथ्यात्व मोहनीय के कर्मदलिकों को एक अन्तर्मुहूर्त के लिये आगे-पीछे कर दिया जाता है। कुछ दलिकों को तो अनिवृत्तिकरण के अन्त तक उदय में आने योग्य कर्मदलिकों के साथ कर दिया जाता है तथा कुछ को अन्तर्मुहूर्त के बाद उदय में आने वाले कर्म दलिकों के साथ कर दिया जाता है। अनिवृत्तिकरण के बाद में एक अन्तर्मुहूर्त काल ऐसा हो जाता है, जिसमें मिथ्यात्वमोहनीय का कोई कर्म दलिक उदय में नहीं रहता, उस स्थिति में जीव को उपशम समकित प्राप्त हो जाती है। उपशम समकित प्राप्त होते ही जीव को स्पष्ट एवं असंदिग्ध प्रतीति-श्रद्धान होने लगता है।

**प्र. 16** अनादि मिथ्यादृष्टि को सर्वप्रथम कौनसी समकित प्राप्त होती है?

**उत्तर** यद्यपि कर्मग्रन्थकारों के मतानुसार अनादि मिथ्यादृष्टि को सर्वप्रथम उपशम समकित प्राप्त होती है, किन्तु आगमकारों के (विशेषावश्यक भाष्य आदि) मतानुसार उपशम अथवा क्षयोपशम दोनों में से कोई भी एक समकित प्राप्त हो सकती है।

**प्र.17** उपशम समकित किन जीवों में पायी जाती है?

**उत्तर** उपशम समकित नारकी, देवता, मनुष्य और तिर्यंच इन चारों ही गति के सन्नी जीवों में संभव है। नारकी, तिर्यंच और मनुष्य इन तीन गति में तो सन्नी जीवों के पर्याप्त में ही संभव है, जबकि देवता में अपर्याप्त तथा पर्याप्त दोनों प्रकार के सन्नी देवों में उपशम समकित संभव है।

*-रजिस्ट्रार, अ.भा. श्री जैन रत्न आ.शिक्षण बोर्ड, जोधपुर*

## देह का द्रव्य स्वास्थ्य एवं आत्मा का भाव -स्वास्थ्य

*पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकर विजयजी*

वात रोग से व्यक्ति वातुल हो जाता है, पर ज्ञान के आने पर वाचाल भी मौन हो जाता है। विकृत ज्ञान राग है, विकृत श्रद्धा दोष है एवं विकृत वर्तन मोह है। रागी दोष को नहीं देखता, द्वेषी गुण को नहीं देखता एवं मोही जानता हुआ भी विपरीत वर्तन करता है। गुण एवं दोष का यथार्थ ज्ञान करने हेतु राग एवं द्वेष को तथा यथार्थ वर्तन करने हेतु मोह को जीतना चाहिए। जहाँ आचरण में दोष होगा वहाँ ज्ञान दूषित होगा ही, यह नियम नहीं है। ज्ञान यथार्थ होते हुए भी आचरण के दूषित होने का कारण प्रमादशीलता, दुस्संग एवं अनादि असद्भ्यास हैं। इस कारण रागादि दोषों का निग्रह करने हेतु यथार्थ ज्ञान एवं दूसरी तरफ यथार्थ आचरण का अभ्यास आवश्यक है। *-प्रेषक- नवरतनमल डोसी, जूनी धानमण्डी, जोधपुर*

(क्रमशः 7)

# दशवैकालिक सूत्र : नवम अध्ययन

डॉ. अमृतलाल गांधी

दशवैकालिक सूत्र का नवम अध्ययन 'विनय समाधि' है। 'विनय' धर्म का मूल है और उसका फल मोक्ष है, ऐसा इस अध्ययन के द्वितीय उद्देशक की दूसरी गाथा में इस प्रकार कहा है-

**एवं धम्मस्स विणओ मूलं परमो से मुक्खो।**

विनय का तात्पर्य मात्र नम्रता नहीं है, अपितु आचार की विविध धाराओं से इसका संबंध है, जिनमें अनुशासन और विनम्रता अधिक स्फुट है। इस अध्ययन में चार उद्देशक हैं। प्रथम उद्देशक में आचार्य के प्रति शिष्य के विनय गुण का प्रतिपादन करते हुए अनेक उपमाओं द्वारा आचार्य की आशातना का दुष्परिणाम बतलाया है। दूसरे उद्देशक में विनय और अविनय का भेद बतलाते हुए कहा है कि अविनीत को विपदा और विनीत को सम्पदा प्राप्त होती है। तीसरे उद्देशक में पूज्य के लक्षणों का निरूपण और चौथे उद्देशक में विनय, श्रुत, तप और आचार रूप चार समाधियों का उल्लेख किया गया है। इस प्रकार इस अध्ययन में विनय की सर्वांगीण व्याख्या है।

शिष्य का कर्त्तव्य है कि गुरु छोटे हों या बड़े, शास्त्रों के जानकार हों या मंदबुद्धि, उनकी श्रद्धापूर्वक भक्ति करे अन्यथा गुरु की हीलना से शिष्य में श्रद्धा और संयम में कमी आकर अशुभ कर्मों के कारण, उसके ज्ञान गुण में भी क्षीणता आती है। जो साधु मंदबुद्धि गुरु का अनादर करता है वह निश्चय ही विविध योनियों में जन्म-मरण प्राप्त करता है। गुरु की आशातना महाविष है, जो अनेक भवों तक दुःख देती है। अतः शिष्य को चाहिये कि वह गुरु को देव तुल्य समझे, क्योंकि संसार में गुरु से बढ़कर कोई भव-भव का उपकारी नहीं होता। यह जनश्रुति प्रसिद्ध है 'गुरु दीपक, गुरु चांदणा, गुरु बिन घोर अंधार।' शिष्य का कर्त्तव्य है कि जिन गुरु के पास वह धर्मपदों को सीखे, उनका उचित विनय कर सदैव नमन कर तन, मन और वाणी से सत्कार और बहुमान करे, क्योंकि धर्म गुरु ज्योतिर्धर हैं।

आगे विनय की महिमा में कहा है कि संसार में जो स्त्री पुरुष अविनीत स्वभाव वाले व अहंकारी होते हैं, वे शारीरिक एवं मानसिक दुःख भोगते हैं। अविनयशील होने के कारण उनके घर परिवार में प्रसन्नता नहीं होती। इसके विपरीत विनयशील पुरुष जन-जन में प्रेम पात्र होते हैं एवं सत्कार और ऋद्धि प्राप्त कर सुख भोगते हैं। जिनशासन विनय प्रधान है। विनय जिनशासन का

आदर्श है। अतः शिष्य को ध्यान दिलाया गया है कि वह गुरु के बुलाने पर आसन से उत्तर नहीं दे, अपितु आसन छोड़कर विनय भाव से उत्तर प्रदान करे। विनीत शिष्य गुरु की अनुकूलतानुसार आहार आदि की व्यवस्था करे और अविनय का परित्याग कर गुरु की सेवा करते हुए संसार सागर को तिरकर सम्पूर्ण कर्मों का क्षय कर उत्तम सिद्धगति को प्राप्त करे।(*क्रमशः*)

# तुमको लाखों प्रणाम

*(रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर का गुणगान)*

*श्री जवाहरलाल कर्णावट*

हस्ती गुरु के पट्टधर, तुमको लाखों प्रणाम-2
जैन जगत के पूज्यवर, तुमको लाखों प्रणाम-2
मोतीलालजी के नन्दन प्यारे, मोहिनी माँ के नयन दुलारे।
गांधी कुल उजियारे, तुमको लाखों प्रणाम-2।।

संसारी सुख वैभव छोड़ा, शिवरमणी से नेहा जोड़ा।
बंधन कर्म का तोड़ा, तुमको लाखों प्रणाम-2।।

जिनशासन के उज्जवल तारे, रत्नसंघ के दिव्य सितारे।
सर के ताज हमारे, तुमको लाखों प्रणाम-2।।

वचनकला सुन हर्षे सारे, आगम-शास्त्र सूत्र भंडारे।
सुन्दर भाव उच्चारे, तुमको लाखों प्रणाम-2।।

ब्रह्मचर्य का पालन करते, निशदिन ध्यान प्रभु का धरते।
पंच महाव्रत धारी, तुमको लाखों प्रणाम-2।।

गुरुवर पूज्य हैं हीरा हमारे, व्यसन मुक्ति के हैं प्रचारे।
गुण के अमर पुजारी, तुमको लाखों प्रणाम-2।।

सूरज के सम चमक रहे हो, चन्दा के सम बरस रहे हो।
छत्तीस गुणों के धारी, तुमको लाखों प्रणाम-2।।

वाणी प्रेम सुधा बरसाते, धर्म अहिंसा जग में फैलाते।
ओ मोक्ष पत्री दातार, तुमको लाखों प्रणाम-2।।

*-कोलकाता*

# दो तोला मांस की कीमत ?

मगध नरेश श्रेणिक तथा रानी धारिणी का आत्मज अभयकुमार भगवान महावीर का परम भक्त और व्रतधारी श्रावक था। उसकी जैन धर्म पर अटूट श्रद्धा थी। उसके काल में जैनधर्म की बहुमुखी प्रभावना हुई। अहिंसा व शाकाहार का विशेष प्रचार हुआ।

अभयकुमार राजा श्रेणिक का पुत्र तो था ही तथा औत्पत्तिकी बुद्धि के कारण राजा का महामंत्री भी था। अभयकुमार के पास हर मुश्किल सवाल का न्यायसंगत व सटीक उत्तर होता था। अतः राजा श्रेणिक अभयकुमार से अवश्य मंत्रणा करते थे।

एक दिन राजसभा में 'आहार' विषय पर चर्चा हो रही थी। इस चर्चा में राजा श्रेणिक, महामंत्री अभयकुमार व अन्य सभासद शामिल थे। प्रश्न यह था कि कौनसा आहार सस्ता, सुलभ एवं आरोग्यदायी है। इस विषय पर मतभेद उत्पन्न हुआ। शाकाहारी सभासदों ने कहा- "राजन्! अन्न, फल आदि शाकाहारी भोजन आरोग्यदायी, सुपाच्य, पुष्टिकारक होने के साथ सस्ता व सबको सुलभ है। शाकाहार करने से मनुष्य के विचार भी सात्त्विक रहते हैं।" मांसाहारी सामन्तों ने कहा- "महाराज! अन्न और फल न सस्ता है और न ही सबको सुलभ है। गरीबों को तो फल कभी-कभी नसीब होता है। अन्न उपजाने के लिए एक कृषक को कठोर परिश्रम करना पड़ता है। अन्न उपजाने के लिए कृषक पूर्णतः प्रकृति व भाग्य पर निर्भर रहता है। अतः शाकाहार से अच्छा तो मांसाहार है जो सस्ता व सुलभ है। यदि एक हिरण का शिकार किया जाए तो पूरे परिवार का पेट भर जाता है।"

इस तर्क-वितर्क को सुनकर महाराज श्रेणिक सोच में पड़ गए। उन्होंने सही उत्तर के लिए अभयकुमार की ओर देखा। अभयकुमार ने कहा- "महाराज! मैं इस विषय पर अपना निर्णय पूर्ण जानकारी के बाद दूंगा।"

लगभग १५ दिन बाद रात को अभयकुमार एक सामन्त के घर पहुँचा और द्वारपाल से कहा कि मुझे इसी समय महासामन्त से मिलना है। महामंत्री अभय के आने की सूचना पाते ही सामन्त हड़बड़ाया और महामंत्री से मिलने पर पूछा- "आप इस समय, क्या बात है? अभयकुमार बोला- "अचानक ही महाराज किसी गंभीर रोग से ग्रस्त हो गए हैं। राजवैद्य का कहना है- किसी मनुष्य के हृदय का दो तोला ताजा मांस चाहिए। महाराज की जीवन रक्षा के लिए आपको इतना-सा कष्ट करना पड़ेगा, बदले में आप चाहें तो एक लाख स्वर्ण

मुद्राएँ ले सकते हैं।" यह सुनते ही सामन्त घबरा गया। उसकी आंखों के सामने अंधेरा छा गया। वह बोला- "महामात्य जी मुझ पर कृपा कीजिए। राजगृह में और भी सामन्त हैं। उनका मांस ले लीजिए इस कृपा के बदले मैं दो लाख स्वर्ण मुद्राएँ आपको भेंट देता हूँ।"

अभयकुमार ने दो लाख स्वर्णमुद्राओं का बक्सा अपने रथ में रखवाया। इसी प्रकार अभयकुमार अन्य मांसाहारी सामन्तों के निवास पर गया और हृदय के दो तोला मांस की याचना की, किन्तु कोई भी सामन्त दो तोला मांस देने के लिए तैयार न था। उल्टा बदले में किसी ने दो लाख, किसी ने तीन लाख स्वर्ण मुद्राएँ अभयकुमार को भेंट दीं।

इस घटना के दूसरे दिन सभी सामन्तों ने जब दरबार में राजा श्रेणिक को पूर्णतः स्वस्थ देखा तो आश्चर्यचकित रह गए। कुछ समय बाद अभयकुमार ने वह धन मंगवाया जो उन मांसाहारी सामन्तों ने अपने प्राणों के बदले भेंट किया था। राजा श्रेणिक को अभयकुमार ने सम्पूर्ण वृतान्त से अवगत कराया। इस वृतान्त को सुनकर महाराज श्रेणिक समझ गए थे कि सर्वोत्तम आहार शाकाहार है जो सभी श्रेष्ठ गुणों से युक्त है। अभयकुमार ने मांसाहारी सामन्तों से प्रश्न किया- "आज से पन्द्रह दिन पहले तो आप लोगों ने मांस को सस्ता व सुलभ आहार बताया, परन्तु कल रात केवल दो तोला मांस के लिए आपमें से किसी ने दो लाख तो किसी ने तीन लाख स्वर्ण मुद्राएँ दीं। अब बताइए क्या मांस सस्ता, सुलभ व आरोग्यदायी है?"

यह प्रश्न सुनकर मांस को अच्छा बताने वाले सामन्तों के सिर शर्म से झुक गए। अभयकुमार ने उन सामन्तों को समझाया कि जिस प्रकार सबको अपना शरीर और प्राण प्यारे हैं वैसे ही पशु-पक्षी को भी अपना शरीर व प्राण प्यारे हैं। मांसाहार करना महापाप है, दूसरों के लिए भयानक कष्टकारी व राक्षसी कृत्य है।

यह सब सुनकर मांसाहारी सामन्तों ने मांसाहार का आजीवन त्याग कर दिया व राजा श्रेणिक ने पूरे राज्य में मांसाहार करने पर रोक लगा दी।

*—संकलन-सम्पादन—कनीनिका जैन,*
*3 के 25, कुड़ी भगतासनी, जोधपुर*

## सूचना

'जिनवाणी' का अंक प्रायः 80 पृष्ठों का प्रकाशित होता है, किन्तु इस अंक में पुणे में अक्षयतृतीया, दीक्षा आदि के प्रसंग से समाचारों की अधिकता होने के कारण प्रस्तुत अंक 88 पृष्ठों का प्रकाशित किया जा रहा है। *—प्रकाशचन्द डागा, मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर*

# भगवान से साक्षात्कार

मैंने स्वप्न देखा कि मैंने भगवान से साक्षात्कार किया।
"अच्छा! तो तुम मेरा साक्षात्कार लेना चाहते हो?" भगवान ने पूछा।
"अगर आपके पास समय हो", मैंने कहा।
भगवान मुस्कराए (और बोले), "मेरा समय तो अनन्त है।
तुम मुझसे क्या पूछना चाहते हो?"
"आपको मनुष्यों के बारे में सर्वाधिक आश्चर्यचकित क्या बात करती है?"
मैंने पूछा।
भगवान ने उत्तर दिया-
"कि वे बाल्यकाल से उकता जाते हैं।
उन्हें हमेशा बड़े होने की जल्दी मची रहती है तथा
बड़े होने पर वे फिर से बालक होना चाहते हैं।"
"कि वे धन के लिये अपना स्वास्थ्य खो देते हैं तथा
स्वास्थ्य को पुनः प्राप्त करने के लिये अपना धन खो देते हैं।"
"कि भविष्य की चिंता में आतुर वे अपना वर्तमान भूल जाते हैं;
इस प्रकार कि वे न तो वर्तमान में जीते हैं,
न ही भविष्य में"
"कि वे ऐसे जीते हैं जैसे कि वे कभी नहीं मरेंगे और
ऐसे मरते हैं जैसे कि कभी जिये ही नहीं।"
भगवान ने मेरा हाथ पकड़ा और कुछ देर हम मौन रहे और
तब मैंने पूछा-
"परमात्मा होने के नाते आप अपने बालकों को क्या शिक्षा देना चाहेंगे?"
भगवान ने मुस्कराकर उत्तर दिया-
"कि वे यह जान लें कि किसी का प्रेम बलात् नहीं पाया जा सकता।
वे केवल यह कर सकते हैं कि स्वयं को दूसरों के प्यार के योग्य बनावें।"
"कि स्वयं की दूसरों से तुलना करना अच्छा नहीं है।"
"कि धनवान होने का अर्थ यह नहीं है कि उसके पास सर्वाधिक है,
बल्कि यह कि उसे न्यूनतम आवश्यकता है।"
"कि वे यह जान लें कि जिन्हें हम हृदय से चाहते हैं
उन्हें ही (चुभती बातों से)
कुछ ही क्षणों में ऐसे मार्मिक घाव दिये जा सकते हैं
जिन्हें भरने में वर्षों लगते हैं।"

"कि वे क्षमा अपनाकर क्षमा करना सीखें।"
"कि वे यह जान लें कि ऐसे लोग भी हैं जो उन्हें हृदय से चाहते हैं,
किन्तु
केवल वे अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त नहीं कर पाते हैं।"
"कि वे यह जान लें कि दो व्यक्ति एक ही वस्तु को देखें
और उसे अलग-अलग रूप से देखें"
"कि दूसरे उन्हें क्षमा कर दें इतना ही पर्याप्त नहीं है।
वे इस योग्य बनें कि
वे अपने आप को भी क्षमा कर सकें।"
"और यह जान लें कि मैं (उनके साथ) हूँ, हमेशा और हर समय।"

*-अज्ञात लेखक द्वारा लिखित*
*"Interview With God" का हिन्दी रूपान्तरण*
*पूर्व कर्नल दलपतसिंह बया द्वारा*
*ई-२८, भूपालपुरा, उदयपुर (राज.)*

क्रमशः(3)

# रत्नसंघ के मूल महापुरुष

*भंडारी सरदारचन्द जैन*

**चतुर्थ पट्टधर आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री कजोड़ीमलजी म.सा.**

माता-बदनकंवरजी
पिता- श्री शंभूमल जी सोनी, ओसवंशीय
जन्म- किशनगढ़ (राज.)
दीक्षा- वि.सं. १८८७, माघ सुदि ७, अजमेर (राज.)
स्वर्गवास- वि.सं. १९३६, वैशाख सुदि ३, अजमेर (राज.)

**पंचम पट्टधर आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री विनयचन्दजी म.सा.**

माता-रंभाबाई जी
पिता- श्री प्रतापमल जी पुंगलिया, ओसवंशीय
जन्म- वि.सं. १८९७, आसोज सुदि १४, पोकरण फलोदी, जि.जोधपुर (राज.)
दीक्षा- वि.सं. १९१२, मिगसर वदि २, अजमेर(राज.)
स्वर्गवास- वि.सं. १९७२, मिगसर वदि १२, जयपुर (राज.)

*-त्रिपोलिया बाजार, जोधपुर*

# पुणे में प्रव्रज्या पथ पर आरोहण चार मुमुक्षु बहिनों का

*श्री नौरतन मेहता*

रत्नवंश के अष्टम पट्टधर आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसन मुक्ति के प्रबल प्रेरक, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्रजी म.सा. महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा ८ एवं व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. आदि ठाणा २१ के पावन सान्निध्य में आनन्द तीर्थ, पूना में वीरमाता श्रीमती पिस्तादेवीजी कांकरिया (धर्मपत्नी स्व. श्री रिखबचन्दजी कांकरिया) मूल निवासी भोपालगढ़ हाल मुकाम-चैन्नई, मुमुक्षु सुश्री बबिता गुगलिया सुपुत्री वीरपिता सुश्रावक श्री सुकनराजजी गुगलिया-हैदराबाद, मुमुक्षु सुश्री माला जैन एवं मुमुक्षु सुश्री नूतन जैन सुपुत्री वीरपिता सुश्रावक श्री श्रवणकुमारजी जैन-गंगापुर सिटी ने वैशाख शुक्ला एकादशी, सोमवार, दिनांक १२ मई, २००३ को पावन प्रव्रज्या अंगीकार की। दीक्षा महोत्सव पर पूना शहर एवं उपनगरों के अलावा मुम्बई, जलगांव, धुलिया, वापी, सतारा, जालना, नन्दूरबार, तोंडापुर, मांडल, मुकटी, कजगांव, सूरत, जयपुर, जोधपुर, पाली,, ब्यावर, अजमेर, मदनगंज-किशनगढ़, सोजत रोड़, भोपालगढ़, पीपाड़, गोटन, कोटा, सवाईमाधोपुर, बजरिया, नदबई, खेरली, गंगापुरसिटी, अलीगढ़-रामपुरा, कुश्तला, चौरु, हिण्डौन सिटी, चेन्नई, पल्लीपट, बैंगलोर, मैसूर, हैदराबाद-सिकन्द्राबाद, दिल्ली, कानपुर आदि-आदि क्षेत्रों के श्रीसंघ एवं श्रद्धालुओं ने पूना पहुंचकर दीक्षा की अनुमोदना का लाभ लिया। दीक्षा महोत्सव के पूर्व चारों दीक्षार्थिनी बहिनों ने रत्नवंशीय संत-सतीवृन्द की सेवा में पहुँचकर दर्शन-वन्दन के लाभ के साथ मांगलिक श्रवण की। आचार्यप्रवर श्री सुदर्शनलालजी म.सा. के दर्शन-वन्दन कर विरक्ता बहिनों ने उनसे भी मंगलपाठ सुना। चैन्नई, हैदराबाद और गंगापुर सिटी में पारिवारिक-परिजनों ने मुमुक्षु बहिनों के स्वागत-सत्कार एवं प्रीतिभोजों के विशेष कार्यक्रम रखे।

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर ने जैन सकल संघ, पूना की विनति पर तप और दान का विशिष्ट पर्व अक्षय तृतीया एवं जैन भागवती दीक्षा की स्वीकृति पहले प्रदान कर दी थी, अतः वैशाख शुक्ला अष्टमी के दिन आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. के पुण्य दिवस पर गुण कीर्तन-गुण स्मरण का सहज सुयोग भी पूनावासियों को प्राप्त हुआ। आचार्यप्रवर का पूना में प्रथम बार

प्रवेश होता देखकर महाराष्ट्र शासन की ओर से पर्यटन राज्यमंत्री माननीय श्री चन्द्रकान्तजी छाजेड़, पूना शहर के महापौर सौ. दीप्तिजी चौधरी, नगर सेवक श्री सुभाषजी लोढ़ा, नगर सेवक श्री अभयजी छाजेड़, पूना शहर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री मोहनजी जोशी, कॉन्फ्रेन्स के पूर्व अध्यक्ष श्री बंकटलालजी कोठारी, कॉन्फ्रेन्स के उपाध्यक्ष श्री विजयकान्तजी कोठारी सहित शहर के अनेक गणमान्य श्रावकों ने आचार्यप्रवर की अगवानी की। नानापेठ स्थित साधना-सदन में साधना सदन के अध्यक्ष-मंत्री आदि पदाधिकारी तो उपस्थित थे ही, बिबवेवाड़ी संघाध्यक्ष श्री दीपचन्द जी पावेचा, धनकवड़ी संघाध्यक्ष श्री हरकचन्द जी मूथा, कासारवाड़ी संघाध्यक्ष श्री अमृतराजजी भंडारी, शिवाजीनगर के अध्यक्ष श्री पृथ्वीराजजी बाबूसेठ बोथरा आदि प्रबुद्ध श्रावकों ने आचार्यप्रवर के पूना पधारने पर वचनों से हार्दिक स्वागत-अभिनन्दन किया।

आचार्यप्रवर ०१ मई को साधना-सदन पधारे तो पूनावासियों को आचार्यप्रवर की सरलता, समता एवं सौहार्द का परिचय प्राप्त हुआ। विभिन्न क्षेत्रों की विनतियां श्रीचरणों में होने लगी। सकल जैन संघ पूना के अध्यक्ष श्री पोपटलालजी ओस्तवाल, मंत्री श्री बाबालालजी गांधी, स्वागताध्यक्ष श्री हरकचन्दजी ओस्तवाल, स्वागतमंत्री श्री सुभाषजी बाफना ने कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार करके सबके सहयोग से कार्यक्रम की सफल क्रियान्विति की, जो सदा स्मरणीय रहेगी। सुश्रावक श्री उपेन्द्रजी बोथरा एवं श्री नितीनजी ओस्तवाल ने अपने सहयोगियों के साथ समन्वय का सुन्दर रूप प्रदर्शित करते हुए भोजन-चाय-नाश्ते, आवास-निवास एवं आने-जाने के साधनों की समुचित व्यवस्था को कारगर बनाये रखा, वह प्रेरणादायी है। आनन्द तीर्थ में आचार्यप्रवर आदि संतों के लिए स्कूल, महासतियों के लिए कन्या छात्रावास एवं श्रावक-श्राविकाओं के लिए फ्लेट्स की सुविधा एवं प्रवचन आदि सभी व्यवस्थाएं एक स्थान पर होने से कार्यक्रम का आनन्द तो मिला ही, श्रावक-श्राविकाओं को समीप आने का सुन्दर अवसर भी प्राप्त हुआ। दीक्षा महोत्सव कार्यक्रम इस प्रकार रहे-

## शोभा यात्रा

वैशाख शुक्ला दशमी, रविवार, दिनांक ११ मई, २००३ को प्रातः ७-३० बजे सतारा रोड़ स्थित पुष्प-मंगल कार्यालय पर श्रावक-श्राविकाओं के पहुंचने के साथ सुसज्जित रथ, घोड़े, ऊंट, बैण्ड और आदिनाथ सोसायटी की नूतन मरुदेवा मण्डल, भवानी पेठ की मोक्षा जैन मण्डल की बहिनों के समय पर आगमन से राहगीरों को बिना सूचना आभास मिल चुका था कि आज यहां से

दीक्षार्थिनी बहिनों की भव्य शोभायात्रा प्रारम्भ होने वाली है। आठ बजे के आसपास मुमुक्षु बहिनें आचार्यप्रवर आदि संत-मुनिराजों के एवं महासती मण्डलों के दर्शन-वन्दन का लाभ प्राप्त कर एवं मांगलिक श्रवण कर पुष्प मंगल कार्यालय पहुंची तो जन समुदाय ने श्रमण भगवान महावीर स्वामी, सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा., आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनन्दऋषिजी म.सा., आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा., निर्ग्रन्थ संत-सतीवृन्द की जय-जयकार के जयनाद एवं 'गुरु हस्ती के दो फरमान सामायिक-स्वाध्याय महान्', 'गुरु हीरा का क्या सन्देश-व्यसन मुक्त हो सारा देश' आदि गगनभेदी नारे लगाए मुमुक्षु बहिनें सुसज्जित रथ में सबको हाथ जोड़कर अभिवादन करती हुई खड़ी हुई। व्यवस्था में सहयोग प्रदाता श्रावकों ने हरी झण्डी का संकेत कर शोभायात्रा को प्रारम्भ किया।

शोभायात्रा के आगे एक सूमो गाड़ी थी जिसमें नमस्कार महामंत्र एवं आत्म-जागृति हेतु भजनों की कैसेट से भक्तियुक्त वातावरण आदि से अंत तक बना रहा। सूमो गाड़ी के ठीक पीछे सुसज्जित ऊंट-घोड़े कतारबद्ध चल रहे थे। पूना का प्रसिद्ध राजकमल बैण्ड वाद्य यंत्रों पर भक्ति गीत की समा बांधे चल रहा था। नूतन मरुदेवा मण्डल की बहिनें एक-से परिधान में मंगल गीत गाते गाड़ी पर सवार थी। मोक्षा जैन मण्डल की बहिनें भी अपने परिधान में कभी सुमधुर भजन तो कभी दीक्षा के प्रसंग के नारे लगाती हुई चल रही थी। भजन मण्डलियों के ठीक पीछे पूना की युवतियां सुसज्जित वेश में जय-जयकार करती चल रही थी। शोभायात्रा में श्रावक-श्राविकाओं की विशाल उपस्थिति सबको आकर्षित कर रही थी। दीक्षार्थिनी दो-दो बहिनें दो अलग-अलग रथों पर खड़े-खड़े सबका अभिनन्दन कर रही थी।

बिबवेवाड़ी से प्रेमनगर, ऋतुराज सोसायटी, मार्केट यार्ड जहां जैन समुदाय की बहुलता है, क्षेत्रों से होती हुई करीब डेढ़ घंटे अन्तराल पश्चात् शोभायात्रा सतारा रोड़ स्थित आदिनाथ सोसायटी जहां आचार्यप्रवर आदि संत-मुनिराज स्थानक में विराजित थे, पहुंचकर धर्म सभा के रूप में परिवर्तित हो गई।

विशाल एवं भव्य शोभायात्रा के कारण पूना जैसे व्यस्त शहर में जिधर से शोभायात्रा गुजरी सड़क पर वाहन स्वतः रुक गये, पैदल यात्रियों के पांव थम गये और हजारों-हजार लोगों ने भव्य शोभायात्रा को अपलक देखा। पुष्प मंगल कार्यालय की भांति बीच-बीच में सुज्ञ श्रावकों ने शीतल पेय एवं अल्पाहार की

व्यवस्था कर स्वधर्मी वात्सल्य सेवा का लाभ लिया।

श्री आदिनाथ स्थानकवासी जैन भवन पूना में श्री कपिलमुनिजी म.सा., श्री मनीषमुनिजी म.सा., श्री योगेशमुनिजी म.सा., महासती श्री यशप्रभाजी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. ने अपने संक्षिप्त किन्तु प्रभावी प्रवचन में संयम की महत्ता बतलाई । तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. ने अपना प्रवचन "मुक्तिपुरी में चलें मोह की करनी विदाई, संयम सदा सुखदाइ" भजन प्रस्तुत कर अपना प्रवचन पूर्ण किया।

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्बोधन में संयम की महत्ता और असंयम के दुष्परिणामों का विवेचन करते हुए फरमाया कि शांति-समाधि और सौहार्दपूर्ण जीवन के लिए संयम जरूरी है। चारित्र धर्म का हार्द समझाते हुए आचार्यप्रवर ने दीक्षा की अनुमोदना में पधारे श्रावक-श्राविकाओं से अपेक्षा रखी कि आप मात्र जय-जयकार करके ही न रहें। ये बहिनें जीवन पर्यन्त के लिए संयम स्वीकार कर रही हैं, आप चौबीस घंटे में से एक घंटा भी समता की साधना के लिए निकालें तो आपका यहां पधारना सार्थक हो सकेगा।

आचार्यप्रवर के मंगल पाठ के साथ धर्मसभा का विसर्जन हुआ।

## अभिनन्दन समारोह

रविवार, दिनांक ११ मई को मध्याह्न १ बजे पश्चात् आनन्द तीर्थ में वीर माता-पिता एवं मुमुक्षु बहिनों के स्वागत में अभिनन्दन समारोह संघाध्यक्ष श्री रतनलालजी बाफना की अध्यक्षता में एवं संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत के मुख्य आतिथ्य में रखा गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ मंगलाचरण से हुआ। संघ के अतिरिक्त महामंत्री श्री हस्तीमलजी गोलेच्छा ने मंगलाचरण की प्रस्तुति की। मंचासीन अतिथियों में समारोह के अध्यक्ष श्री रतनलालजी बाफना का स्वागत स्वागताध्यक्ष श्री हरकचन्दजी ओस्तवाल ने किया। मुख्य अतिथि श्री मोफतराजजी मुणोत का पूना सकल संघ के अध्यक्ष श्री पोपटलालजी ओस्तवाल ने एवं मुख्यवक्ता श्री नेमीचन्दजी कर्नावट का श्री सुखलालजी ओस्तवाल ने माल्यार्पण कर स्वागत किया एवं शॉल ओढ़ाकर उनका बहुमान किया।

स्वागतमंत्री श्री सुभाषचन्दजी बाफना ने अभ्यागतों का स्वागत करने के क्रम में पुण्यधरा पूना की प्रबल पुण्यवानी बताते कहा कि सकल जैन संघ की विनति मान्य कर परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्रजी म.सा. अपने आज्ञानुवर्ती संत-सतीवृन्द के साथ पूना पधारे हैं इसकी हमें परम प्रसन्नता है। स्वागतमंत्रीजी ने आचार्यप्रवर की समता-सरलता-सौहार्द के

सन्दर्भ में कहा कि पूनावासी आचार्यप्रवर को देखकर आचार्यसम्राट् पूज्य श्री आनन्दऋषिजी म.सा. की आपमें कृति देख रहे हैं। पूना में चार मुमुक्षु बहिनों की भागवती दीक्षा के सुयोग को हम महान् पुण्यवानी का कारण समझ रहे हैं। वीर माता-पिता एवं मुमुक्षु बहिनों के स्वागत-अभिनन्दन में पधारे सभी श्रावक-श्राविकाओं का मैं सकल जैन संघ, पूना की ओर से एवं आनन्द तीर्थ की ओर से हार्दिक स्वागत करता हूँ। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री रतनलालजी बाफना, संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के पदाधिकारियों का स्वागत करते हुए श्री सुभाषजी ने कहा कि संघ के मार्गदर्शन में एवं आचार्यप्रवर की समाचारी के अनुसार हमने व्यवस्था सुनिश्चित की है। आप सब दीक्षा के अनुमोदनार्थ पधारे हैं, इसलिए हमें विश्वास है कि व्यवस्था में यदि कहीं कुछ भी कमी है तो आप उसे नजर-अन्दाज कर हमें सहयोग प्रदान करेंगे। बाफना साहब ने पूना के विभिन्न क्षेत्रों के अध्यक्षों के सहयोग के लिए भी साधुवाद ज्ञापित किया।

मुख्यवक्ता श्री नेमीचन्दजी कर्नावट ने आनन्द तीर्थ को जैन संस्कृति की पहिचान देने वाला स्थान बताते हुए कहा कि यहां चार मुमुक्षु बहिनों की भागवती दीक्षा होना महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए श्री कर्नावट साहब ने कहा कि उस महापुरुष ने सामायिक-स्वाध्याय की प्रबल प्रेरणा करके जिनशासन की प्रभावना की, वह हमें सदा सम्बल प्रदान करेगी। आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की व्यवहार की सरलता और आचार की निष्ठा को संघ-समाज के लिए हितावह बताते कर्नावट साहब ने कहा कि उनके मुखारविन्द से कल इन चार मुमुक्षु बहिनों की दीक्षा होने जा रही है। ये बहिनें साध्वी के रूप में संघ-समाज को नई दिशा देंगी। दीक्षा क्या है, विषय को स्पष्ट करते कर्नावट साहब ने कहा- दीक्षा आन्तरिक चेतना का रूपान्तरण है। तीन करण, तीन योग से सावद्य पापों का त्याग कर ये अपना जीवन तो धन्य-पावन करेंगी ही, हमको भी प्रेरणा देकर हमें धर्म के सम्मुख करेंगी। श्री कर्नावट साहब ने मुमुक्षु बहिनों के त्याग की सराहना करते हुए इनके माता-पिता और पारिवारिक-परिजनों के मोह-त्याग को अनुकरणीय बताया।

कार्यक्रम संचालक श्री गौतमचन्दजी ओस्तवाल ने देखा कि जैन जगत् की जानी-मानी हस्तियाँ इस कार्यक्रम में उपस्थित हैं, जलगांव संघाध्यक्ष श्री दलुभाऊ जैन, श्री शांतिलालजी चौधरी, इंजीनियर श्री जयन्तकुमारजी

ओस्तवाल को मंच पर पधारने का निवेदन किया और समारोह के मुख्य अतिथि श्री मोफतराजजी मुणोत से निवेदन किया कि जैन सकल संघ एवं आनन्द तीर्थ के अध्यक्ष श्री पोपटलालजी ओस्तवाल जिनकी विनति से आचार्यप्रवर पूना पधारे हैं और पूनावासियों को अक्षय तृतीया के साथ जैन भागवती दीक्षा का सुयोग प्राप्त हुआ है, ऐसे उदारमना सुज्ञ श्रावकरत्न का आप अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की ओर से सम्मान करें। मुख्य अतिथि श्री मुणोत साहब ने रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन-पत्र पूना जैन सकल संघ के अध्यक्ष श्री पोपटलालजी ओस्तवाल को समर्पित किया।

स्वागत-अभिनन्दन का मुख्य कार्यक्रम मुमुक्षु बहिनों एवं वीर माता-पिताओं का होता है। उसी क्रम में सर्वप्रथम वीरमाता श्रीमती पिस्तादेवीजी कांकरिया का माल्यार्पण से स्वागत करवाया गया, चून्दड़ी ओढ़ाकर बहुमान करवाने के पश्चात् वीरमाता के सम्मान में अभिनन्दन-पत्र का वाचन करवाया गया। अभिनन्दन में पारिवारिक-परिचय तो था ही ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप और विरक्त अवस्था की जानकारी के साथ हार्दिक मंगल कामना के लिए भी शब्दाभिव्यक्ति थी। जैन सकल संघ पूना एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की ओर से अभिनन्दन-पत्र वीरमाता को समर्पित किया गया। मुमुक्षु सुश्री बबिता गुगलिया, मुमुक्षु सुश्री माला जैन और मुमुक्षु सुश्री नूतन जैन का भी इसी तरह माल्यार्पण से स्वागत, शॉल ओढ़ाकर बहुमान एवं अभिनन्दन-पत्रों के वाचन व समर्पण का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

महाराष्ट्र शासन के पर्यटन राज्यमंत्री माननीय श्री चन्द्रकान्तजी छाजेड़ १२ मई को दीक्षा समारोह में पधारने वाले थे, परन्तु अपरिहार्य कारणों की वजह से दीक्षा समारोह में उपस्थित नहीं हो सकने से अभिनन्दन समारोह में पहुंचकर उन्होंने मुमुक्षु बहिनों को अपना आशीर्वाद दिया। मंत्री महोदय का माल्यार्पण से स्वागत एवं शॉल ओढ़ाकर पूना सकल संघ के अध्यक्ष श्री पोपटलालजी ओस्तवाल ने बहुमान किया।

इसके अनन्तर आनन्द तीर्थ में व्यवस्था में योगदान करने वाले श्री उत्तमचन्दजी कांकरिया, श्री ज्ञानचन्दजी ओस्तवाल, श्री उपेन्द्रजी बोथरा, श्री नितीनजी ओस्तवाल, श्री विकासजी बोहरा, श्री नितीनजी भंसाली, श्री प्रसन्नचन्दजी ओस्तवाल, श्री सोहनसिंहजी ड्राइवर का माल्यार्पण से स्वागत और शॉल ओढ़ाकर उनका बहुमान किया गया।

विरक्त बन्धु श्री जितेन्द्रजी ने अपने विचार रखते कहा कि पूना में चार बहिनों की दीक्षा के साथ मेरी दीक्षा होती तो मुझे विशेष प्रसन्नता होती, लेकिन आचार्य भगवन्त की मेरे पर कृपा है, अतः जब भी उचित लगेगा मेरी दीक्षा हो सकेगी। मेरी दो बहिनें दीक्षित हो रही हैं, एक भाई के नाते मेरा उनसे निवेदन है कि वे आज्ञा-आराधन में सदा तत्पर रहें और संघ-सेवा में समर्पित रहें। श्री जसवन्तराजजी जैन-पूना ने भी विरक्ता बहिनों के प्रति अपनी शुभकामना व्यक्त की।

वीर माता-पिता के सम्मान-क्रम में सर्वप्रथम वीरमाता मुमुक्षु बहिन पिस्तादेवीजी कांकरिया के देवर श्री मनोहरराजजी कांकरिया को मंच पर आमन्त्रित किया गया। माल्यार्पण से स्वागत, शॉल ओढ़ाकर बहुमान कर उनको वीरता का प्रतीक साफा पहनाया गया। वीरमाता के तीनों सुपुत्र श्री राजेन्द्रजी, नरेन्द्रजी, वीरेन्द्रजी एवं तीनों पुत्र वधुएँ श्रीमती रूपल, श्रीमती मनीषा और श्रीमती शशि को मंच पर आमन्त्रित कर रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन-पत्र समर्पित किया गया। तीनों सुपुत्रों का माल्यार्पण से स्वागत एवं शॉल से बहुमान किया गया और पुत्रवधुओं को चून्दड़ी ओढ़ाकर सम्मानित किया गया।

वीरपिता श्री सुकनराजजी गुगलिया, वीरमाता श्रीमती कमलादेवीजी गुगलिया को मंच पर आमन्त्रित कर वीर माता-पिता का माल्यार्पण से स्वागत किया गया। वीरपिता को शॉल ओढ़ाकर एवं साफा पहनाकर एवं वीरमाता को चून्दड़ी ओढ़ाकर उन्हें रजत पट्टिका पर मुद्रित अभिनन्दन-पत्र समर्पित किया गया। वीरपिता श्री श्रवणकुमारजी जैन एवं वीरमाता श्रीमती कमलादेवीजी जी जैन को भी मंच पर आमन्त्रित कर उसी प्रकार अभिनन्दित किया गया।

उपस्थित जन समुदाय ने हर्ष-हर्ष, जय-जय के जयनाद कर इस अवसर पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की।

स्वागत-अभिनन्दन के पश्चात् वीर परिवारों में कुछ सदस्यों को आशीर्वाद देने हेतु समय दिया गया। वीरपिता श्री सुकनराज जी गुगलिया-हैदराबाद ने अपनी आत्मजा के चारित्र धर्म अंगीकार करने पर प्रसन्नता व्यक्त करते कहा कि मेरी दो सुपुत्रियाँ रत्नवंश में पहले से दीक्षित हैं, तीसरी सुपुत्री भी दीक्षित होकर संयम-साधना में आगे बढ़ेगी ऐसी आशा है। श्री गुगलिया साहब ने चारों दीक्षार्थिनी बहिनों के प्रति अपनी मंगल भावना व्यक्त की। श्रीमती बसन्ताबाई जी भण्डारी-बैंगलोर ने अपने हृद्योद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि संयम की भावना आने पर दीक्षित हो जाना श्रेयस्कर है।

श्रमण-श्रमणी छः काय के जीवों के अभयदाता हैं और इससे बढ़कर कोई धर्म नहीं है। श्री नरेन्द्रजी कांकरिया-चैन्नई ने कहा-'माँ' में सृष्टि का अर्थ समाया हुआ है। मातृभक्त नरेन्द्रजी ने कहा कि माताश्री की कई वर्षों से प्रबल भावना रही कि दीक्षा अंगीकार कर स्व-पर कल्याण करूँ। हमारा मोह था अतः हमने माँ की भावना होने पर भी आज्ञा नहीं दी। मां हमें बराबर समझाती रही और मां की भावना के आगे हमें झुकना पड़ा। मां चार वर्षों से विरक्त अवस्था में रहकर विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. आदि ठाणा की छत्रछाया में ज्ञान-ध्यान सीख रही है और पाद-विहार करने के साथ व्रत-प्रत्याख्यानों का पालन कर रही है। श्री नरेन्द्रजी कांकरिया ने चारों मुमुक्षुओं के प्रति मंगल कामना व्यक्त करते हुए पूना सकल संघ की सुन्दर व्यवस्था के लिए आभार प्रदर्शित किया।

वीरमाता दीक्षार्थिनी बहिन श्रीमती पिस्तादेवीजी कांकरिया ने संसार की असारता और संयम में सच्चा सुख बताया। चारों गतियों के जीवों के सन्दर्भ में उन्होंने कहा- नरक, तिर्यंच में घोर दुःख है। देव गति में सुख है, पर वे त्याग-तप नहीं कर सकते। एकमात्र मनुष्य गति ऐसी है जिसमें व्रताराधन संभव है। दीक्षार्थिनी बहिन ने एक रूपक रखते कहा-मकान बनाने वाला एक से दूसरी, दूसरी से तीसरी मंजिल पर ऊपर उठता जाता है, वहीं कुंआ खोदने वाला नीचे से और नीचे जाता है। गुणस्थान स्वरूप पर विचार रखते मुमुक्षु बहिन ने मनुष्य जन्म को सार्थक बनाने का आह्वान किया। मुमुक्षु सुश्री बबिता गुगलिया, मुमुक्षु सुश्री माला जैन, मुमुक्षु सुश्री नूतन जैन ने संयम के प्रति अपने-अपने मनोभाव व्यक्त किये।

समारोह के मुख्य अतिथि एवं संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत ने अपने आशीर्वचन में कहा कि संत-सतीवृन्द हमारी प्रेरणा के स्रोत हैं। हम दीक्षार्थिनी बहिनों के एवं उनके माता-पिताओं के त्याग की सराहना करके ही नहीं रहें पर हमें हमारा कर्त्तव्य क्या है, इसे समझना होगा। श्रावक संघ की जवाबदारी के सन्दर्भ में मुणोत साहब ने कहा कि दीक्षा के पश्चात् इनकी शिक्षा एवं स्वास्थ्य समाधि के प्रति हमें हमारी जवाबदारी पूरी निष्ठा से निभानी है। मुख्य अतिथि महोदय ने सारगर्भित शब्दों में कर्त्तव्य के प्रति जागरूक रहने और शासन के प्रति समर्पित रहने की सीख दी।

समारोह के अध्यक्ष एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री रतनलालजी बाफना ने गद्य-पद्य भाषा-भाव में दीक्षा का महत्त्व बताते कहा कि ये मुमुक्षु बहिनें पूर्वभव के सुकृत्य से एवं इस जन्म के

पुरुषार्थ से संयम धर्म की साधना में प्रवृत्त हो रही हैं, इसकी हमें प्रसन्नता है। संघाध्यक्ष महोदय ने राग-विराग को लेकर कहा-रागी उसे पसन्द करता है जिसके प्रति उसका राग है। जबकि विरागी सबको पसन्द करता है। अध्यक्ष महोदय ने कांकरिया, गुगलिया और जैन परिवारों का परिचय देते कहा कि वीरमाताजी की दो सुपुत्रियाँ रत्नवंश में पहले से दीक्षित हैं, अब माताश्री दीक्षा ले रही हैं, ६१ वर्ष की अवस्था में उनकी भावना अनुकरणीय है। गुगलिया परिवार की दो बहिनों ने जलगांव चातुर्मास में दीक्षा ली, तीसरी बहिन दीक्षित होने जा रही है। वीरपिता श्री श्रवणकुमारजी जैन ने स्वतः होकर अपनी दो पुत्रियों व एक पुत्र का आज्ञा-पत्र दिया यह अपने आपमें महत्त्वपूर्ण बात है। इस परिवार की संघ भक्ति प्रेरणादायी है। तीनों परिवारों के प्रति अपनी ओर से और संघ की ओर से धन्यवाद-आभार व्यक्त करते हुए बाफना साहब ने सुन्दर आयोजन के लिए जैन सकल संघ पूना के अध्यक्ष श्री पोपटलालजी ओस्तवाल एवं भोपालगढ़ मूल के ओस्तवाल परिवारों को धन्यवाद ज्ञापित किया। दीक्षा महोत्सव के प्रसंग से पधारे समीपवर्ती-सुदूरवर्ती क्षेत्रों के श्रावक-श्राविकाओं के प्रति भी बाफना साहब ने धन्यवाद-साधुवाद दिया।

संघ महामंत्री श्री अरुण जी मेहता ने आभार प्रदर्शन करते कहा कि पुण्यधरा पूना की प्रबल पुण्यवानी का सुफल है कि आपको परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर आदि संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति का सुन्दर सुयोग प्राप्त हुआ है। अक्षय तृतीया, आचार्य भगवन्त का १२वां पुण्य दिवस और दीक्षाभिषेक जैसे पावन प्रसंग प्राप्त होना वस्तुतः पूर्व सुकृत्य का कारण ही कहा जा सकता है। मैं पूनावासियों की श्रद्धा-भक्ति और सेवाभावना के लिए हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। सकल जैन संघ, पूना के अध्यक्ष श्री पोपटलालजी ओस्तवाल, मंत्री श्री बाबालालजी गांधी, स्वागताध्यक्ष श्री हरकचन्दजी ओस्तवाल, स्वागतमंत्री श्री सुभाषजी बाफना एवं इनके सभी सहयोगी बन्धुओं का हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने रात-दिन श्रम कर कार्यक्रम को सफल बनाने का सत्कार्य किया है। पूना शहर क्षेत्र के विभिन्न श्रीसंघों का जिन्होंने आचार्यप्रवर आदि संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में सहयोग किया उन्हें साधुवाद देना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ। नानापेठ, आदिनाथ सोसायटी, बिबवेवाड़ी, धनकवड़ी श्रीसंघों ने भक्ति भावना का सुन्दर रूप प्रदर्शित किया एतदर्थ धन्यवाद ! आनन्द तीर्थ जहां अक्षय तृतीया का सफल आयोजन हुआ और अब जैन भागवती दीक्षा होने जा रही है, इस तीर्थ की क्या महिमा कहूँ ? दीक्षार्थी परिवारों एवं आगत लोगों की समुचित आवास, भोजन-चाय-नाश्ते की व्यवस्था और पूना

शहर आने-जाने हेतु साधनों की व्यवस्था अपने आपमें अनुकरणीय है। मैं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ परिवार की ओर से आप सबका हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

हर्ष-हर्ष, जय-जय के जयनादों के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

## अभिनिष्क्रमण यात्रा

१२ मई को प्रातः ८ बजे से पूर्व आनन्द तीर्थ और शत्रुंजय तीर्थ पर श्रावक-श्राविकाओं का आना-जाना प्रारम्भ हो गया था। शत्रुंजय तीर्थ की तलहटी पर रथ-घोड़े-बैण्ड तैयार थे। दीक्षार्थिनी बहिनें अपने पारिवारिक-परिजनों के साथ दीक्षा हेतु तत्पर थी। अभिनिष्क्रमण यात्रा प्रारम्भ हो इसके पूर्व आचार्यप्रवर अपने आज्ञानुवर्ती संत-मुनिराजों के साथ आनन्द तीर्थ पधार गये। कुछ अन्तराल पश्चात् महासती मण्डलों का भी आनन्द तीर्थ पदार्पण हो गया। दीक्षार्थिनी बहिनों ने आचार्यप्रवर आदि संत-सतीवृन्द के दर्शन-वन्दन कर मांगलिक श्रवण की। देश के कोने-कोने से दीक्षा समारोह में पधारे श्रावक-श्राविकाओं ने शत्रुंजय तीर्थ पहुंचकर अभिनिष्क्रमण यात्रा में भाग लिया।

आनन्द तीर्थ पहुंचने के साथ चारों मुमुक्षु बहिनों ने आचार्यप्रवर आदि संत-सतीवृन्द को वन्दन किया और श्रावक-श्राविकाओं को हाथ जोड़कर उनका अभिवादन किया।

## दीक्षा महोत्सव

१२ मई को प्रातः ६ बजे बिना किसी आग्रह-अनुरोध के लोग दीक्षा स्थल पर बने विशाल प्रांगण में सामायिक वेश में अपना स्थान सुरक्षित करते गये और देखते-देखते पांडाल भरने लगा। पूना शहर के विभिन्न क्षेत्रों से श्रावक-श्राविकाओं का आने का क्रम प्रारम्भ हुआ तो पूनावासियों को यह देखकर सुखद आश्चर्य हुआ कि सैंकड़ों की संख्या में भाई-बहिन स्वेच्छा से सामायिक साधना में बैठे हैं।

नियत-निर्धारित कार्यक्रमानुसार मुख्य अतिथि महाराष्ट्र शासन के खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के संरक्षक माननीय श्री सुरेशदादा जैन पधारे तो पूना सकल संघ के अध्यक्ष श्री पोपटलालजी ओस्तवाल, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री रतनलालजी बाफना, संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत, स्वागताध्यक्ष श्री हरकचन्दजी ओस्तवाल

आदि पदाधिकारियों ने मुख्य अतिथि की अगवानी की, आचार्यप्रवर आदि संतों के दर्शन-वन्दन के पश्चात् मुख्य अतिथि महोदय को दीक्षा स्थल तक लेकर पधारे। पूना शहर के जैन समाज के प्रमुख पदाधिकारियों ने भी यथा समय आनन्द तीर्थ पहुंचकर दीक्षाभिषेक के पावन प्रसंग पर अपनी भागीदारी निभाई। विशिष्ट अतिथियों में सर्व श्री शांतिलालजी मूथा, अध्यक्ष श्री जैन संघटना, श्री कचरदासजी पोरवाल अध्यक्ष माजी साधना सदन, कॉन्फ्रेन्स के पूर्व अध्यक्ष श्री बंकटलालजी कोठारी, श्री हरसुखलालजी बोरा, श्री बाबूसेठ बोथरा, श्री गुलाब सेठ बाफना, श्री हरकचन्दजी मूथा, श्री पुखराजजी रांका, श्री माणकचन्दजी दुगड़, न्यायाधिपति श्री रमेशजी गांधी, श्री दलुभाऊ जैन जलगांव संघाध्यक्ष, श्री चेतनप्रकाशजी डूंगरवाल-अध्यक्ष सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, श्री ईश्वरलालजी ललवाणी-कार्याध्यक्ष सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, श्री प्रकाशचन्द जी डागा-मंत्री सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, श्री गुलाबचन्दजी बाफना, श्री अमृतलालजी भण्डारी, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के संरक्षक श्री कनकमलजी चोरड़िया, डॉ. सम्पतसिंहजी भाण्डावत, शासन सेवा समिति के सदस्य श्री रिखबराज जी बाफना, श्री गणेशमल जी भण्डारी, श्री ताराचन्दजी सिंघवी, श्री रामदयालजी जैन, श्री विमलचन्द जी डागा, डॉ. (श्रीमती) मंजुलाजी बम्ब, संघ कार्याध्यक्ष श्री कैलाशचन्दजी हीरावत, उपाध्यक्ष श्री राधेश्यामजी गोटेवाला, महामंत्री श्री अरुणजी मेहता, अतिरिक्त महामंत्री श्री हस्तीमलजी गोलेच्छा, संघमंत्री श्री कांतिलालजी चौधरी, श्री बस्तीमलजी चोरड़िया, श्री सुबाहुकुमारजी जैन, महाराष्ट्र क्षेत्र के प्रधान श्री नवरतनमल जी मुणोत, मध्य राजस्थान क्षेत्र के प्रधान श्री प्रतापचन्दजी साण्ड, जयपुर क्षेत्रीय प्रधान श्री सुरेशचन्दजी कोठारी, आन्ध्रप्रदेश क्षेत्रीय प्रधान श्री किशोरकुमार जी छाजेड़, मध्यप्रदेश क्षेत्रीय प्रधान श्री कल्याणमलजी बाफना, पल्लीवाल-पोरवाल क्षेत्रीय प्रधान श्री बुद्धिप्रकाशजी जैन, स्वाध्याय संघ की संयोजक श्रीमती सुशीलाजी बोहरा, श्राविका मण्डल कार्याध्यक्ष श्रीमती विजयाजी मलारा आदि-आदि प्रमुख पदाधिकारी विशिष्ट अतिथियों की दीर्घा में विराजमान थे। पूना शहर के विभिन्न क्षेत्रों के अध्यक्ष/मंत्री एवं ट्रस्टियों को भी विशिष्ट अतिथियों के कक्ष में स्थान सुलभ करवाया गया।

एक अन्य कक्ष वीर परिवार के लिए आरक्षित था जिसमें कांकरिया, गुगलिया, जैन परिवार के सदस्य तो थे ही, रत्नवंश में दीक्षित संत-सतीगणों के पारिवारिक-परिजनों को भी उस कक्ष में बैठाया गया। सामायिक करने वाले भाई-बहिनों के अलग-अलग कक्ष पहले से निर्धारित थे।

कार्यक्रम संचालक श्री गौतमचन्दजी ओस्तवाल ने उपस्थित जनसमुदाय से अपील की कि आचार्यप्रवर आदि संत-सतीवृन्द यथा समय पधार कर दीक्षाभिषेक करवायेंगे। जब तक आचार्यप्रवर आदि संत-सतीवृन्द नहीं पधारें, हम अतिथियों के हृदयोद्गार, मुमुक्षु बहिनों के मनोभाव, वीर परिवारों के आशीर्वचन श्रवण करेंगे। अतः मैं मंगलाचरण हेतु भाई श्री हस्तीमलजी गोलेच्छा को आमन्त्रित करता हूँ। श्री हस्तीमलजी गोलेच्छा ने नमस्कार महामंत्र बोलकर मंगलाचरण की प्रस्तुति की।

सकल जैन संघ, पूना की ओर से मुख्य अतिथि माननीय श्री सुरेशदादा जैन, विशिष्ट अतिथि श्री शांतिलाल जी मूथा, संघ-सरंक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत, संघाध्यक्ष श्री रतनलालजी बाफना, श्री ईश्वरलालजी ललवाणी, श्री दलुभाऊ जैन, श्री बंकटलालजी कोठारी, श्री कचरदासजी पोरवाल, श्री हरसुखलालजी जैन, श्री बाबूसेठ बोथरा, श्री दीपचन्दजी पावेचा, श्री गुलाब सेठ बाफना, श्री हरकचन्दजी मूथा, श्री पुखराजजी रांका का माल्यार्पण से स्वागत एवं शॉल ओढ़ाकर बहुमान किया गया।

स्वागत के पश्चात् स्वागत-गीत की प्रस्तुति की सौ. शंकुतला बाई मूथा ने। स्वागत-गीत के बोल थे-

**हो स्वागतम् हम करते अभिनन्दन**
**हम गाते बधाई हो सुस्वागतम।।**

स्वागत-गीत के पश्चात् जैन सकल संघ, पूना के अध्यक्ष श्री पोपटलालजी ओस्तवाल ने अपने स्वागत भाषण में परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के प्रथम बार पूना पधारने एवं अक्षय तृतीया व दीक्षा महोत्सव जैसे प्रसंगों पर पावन सान्निध्य पर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि आज दीक्षा महोत्सव पर हमारे बीच महाराष्ट्र शासन के खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री जो जैन समाज के भूषण हैं, मौजूद हैं, माननीय श्री सुरेशदादा जैन हमारे बीच हैं। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री शांतिलालजी मूथा हैं तो अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के संरक्षक-मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत, श्री रतनलालजी बाफना एवं पूना के विभिन्न संघों के अध्यक्षगण आदि अनेक विशिष्ट महानुभाव उपस्थित हैं, मैं सबका हार्दिक स्वागत करता हूँ। श्री पोपटलालजी ओस्तवाल ने आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की सरलता-समता-सहिष्णुता की चर्चा करते कहा कि पूनावासी आचार्यश्री में आचार्य सम्राट् की छवि देख रहे हैं, ज्ञान-क्रिया के संगम आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से अभी कुछ देर बाद चार

बहिनों की दीक्षा होने जा रही है, मैं दीक्षार्थिनी बहिनों का और इनके माता-पिताओं का हार्दिक स्वागत करता हूँ। दीक्षा महोत्सव में पधारे श्रावक-श्राविकाओं के स्वागत में दो शब्द कहकर श्री ओस्तवालजी ने आज के आयोजन को पूना के लिए सदा-सर्वदा स्मरणीय बताया।

कार्यक्रम संचालकजी ने मुमुक्षु बहिनों से अनुरोध किया कि वे संक्षेप में अपने उद्गार व्यक्त करें। मुमुक्षु सुश्री बबिता गुगलिया ने अनन्त उपकारी माता-पिता और परिवारजनों से विनति की कि आप किसी प्रकार का आर्त्त-रौद्र न करें और मुझ अबोध बालिका से कोई गलती हुई हो तो उसे क्षमा करें। उपस्थित जनसमुदाय से क्षमायाचना करते मुमुक्षु सुश्री बबिता गुगलिया ने विराम लिया। वीरमाता मुमुक्षु बहिन श्रीमती पिस्तादेवीजी कांकरिया ने संयम को सुखकारी बताते कांकरिया और मेहता परिवार से क्षमायाचना की। उन्होंने कहा कि आज मेरे मन की मुराद पूरी होने जा रही है और मैं बहुत आनन्द का अनुभव कर रही हूँ। मुमुक्षु सुश्री माला जैन व नूतन जैन ने-"संयम हमें है प्यारा, चाहे जहां वतन में संयम शब्द सलौना, संयम सुखद अपन" गीत की चन्द पंक्तियों के साथ सभी से क्षमायाचना की।

आनन्द तीर्थ के ट्रस्टी श्री अशोकजी पगारिया ने आनन्द तीर्थ का परिचय रखते भावी योजनाओं की झांकी रखी और इसमें सहयोग करने का आह्वान किया।

माननीय श्री सुरेशदादा जैन ने आचार्यप्रवर आदि संत-सतीवृन्द के पूना पधारने एवं पूना में दीक्षा महोत्सव पर पधारे श्रावक-श्राविकाओं के प्रति अपनत्व दर्शाते कहा कि आज का आयोजन आनन्ददायक है। मुमुक्षु बहिनों ने पूर्व जन्म में अच्छे कार्य किए होंगे इसलिये इनकी दीक्षा की भावना जगी है। ये बहिन दीक्षित होकर स्वयं का कल्याण करेंगी और महावीर की वाणी सुनाकर दूसरों का उद्धार भी करेंगी। दीक्षित हो जाने पर ये पैदल चलेंगी, गुरु की आज्ञा में रहेंगी और श्रमण मर्यादा का पालन करेंगी। मैं इनका तो धन्यवाद करूँ ही, इनके माता-पिता का विशेष धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने अपनी पुत्रियों को समाज के लिए समर्पित किया। मैं अपनी ओर से एवं महाराष्ट्र सरकार के प्रतिनिधि के नाते दीक्षा की अनुमोदना करता हूँ।

समय की सीमा के अन्तर्गत अन्यान्य वक्ताओं से क्षमायाचना करते कार्यक्रम संचालक श्री ओस्तवालजी ने संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत से निवेदन किया कि वे अपने हृदयोद्गार व्यक्त करें। श्री मुणोत साहब ने मुमुक्षु बहिनों और वीर परिवारों के प्रति अपनी शुभकामना

व्यक्त करते कहा कि आज के प्रसंग में दो सवाल आते हैं ''आज और आगे'' इन बहिनों ने ज्ञान-दर्शन-चारित्र की साधना का मार्ग चुना। वीर परिवारों ने इनकी भावनाएँ समझी और सहयोग देकर आगे बढ़ाया। हम दीक्षा की अनुमोदना कर रहे हैं। यह आज की बात है। आगे ये बहिनें जिस मार्ग में जा रही हैं उस मार्ग में उत्तरोत्तर आगे बढ़ते हुए उच्च शिखर पर पहुँचें और स्व-पर कल्याण करें इसमें हमारा सबका सहयोग चाहिये। वीर परिवार मोह के वश ऐसा कोई काम न करें जिससे इनके पांव डगमगाने लगें। श्रावक संघ के कर्त्तव्य के प्रति जवाबदेही निभाने का आग्रह करते हुए मुणोत साहब ने कहा-हमारे आराध्य देव हैं गुरु हैं। संत-सतीमण्डल हमें सन्मार्ग दिखाते हैं। इनका जीवन जितना सुन्दर होगा धर्म के प्रति हमारी रुचि बढ़ेगी। हम संत-सतीवृन्द के ज्ञान-दर्शन-चारित्र में सहभागी बनें, लेकिन इनकी अवनति में साझीदार न बनें, यह हमारा कर्त्तव्य है। शास्त्र में हम श्रावकों को अम्मापिया कहा गया है, अतः हम इस कर्त्तव्य को निभाने में कितने कारगर हो रहे हैं, यह चिन्तन का विषय है। संत-सती हमारे पूजनीय हैं। वे समाचारी का बराबर पालन करें। यह राजनैतिक क्षेत्र नहीं है और न ही यह मार्ग प्रसिद्धि के लिए है।

विशिष्ट अतिथि सुश्रावक श्री कचरदासजी पोरवाल ने आचार्यप्रवर के प्रथम बार पूना पधारने एवं पूना में अक्षय तृतीया और दीक्षा महोत्सव का सुयोग प्राप्त होने में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री रतनलालजी बाफना एवं संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत के प्रति धन्यवाद के दो शब्द व्यक्त कर दीक्षार्थिनी बहिनों और उनके परिवारजनों को धन्यवाद दिया।

विशिष्ट अतिथि श्री शांतिलालजी मूथा ने अपने विचार रखते कहा कि अभी हमने जिन बहिनों को सजे-धजे वस्त्राभूषण में देखा है, दीक्षा पाठ लेने के साथ ये हमारी वन्दनीया-पूजनीया हो जायेंगी, यह ताकत है दीक्षा मंत्र में। जैन समाज में आज दस हजार से अधिक संत-सती हैं जिन्होंने सर्वस्व त्याग कर साधुत्व स्वीकार किया है, पर इतनी संख्या में संत-सती होने पर भी समाज में कोई परिवर्तन नहीं दिखाई दे रहा है। इसका मतलब है कहीं न कहीं कोई चूक है। हम मात्र कहलाने के लिए जैन हैं।

श्री शांतिलालजी मूथा ने स्वामी विवेकानन्द का कथन उद्धृत करते कहा कि स्वामीजी ने दुनियां बदलने के लिए तीन सौ लोग मांगे थे, आज दस हजार साधु होने पर भी जैन समाज में कोई बदलाव नहीं दिख रहा, यह चिन्तन का विषय है। आप इस पर चिन्तन कर कोई रास्ता निकाले तो

युवक-युवतियां जो धर्म के सम्मुख नहीं है, वे स्वतः अग्रसर आयेंगे।

आचार्यप्रवर आदि संत-मुनिराजों के पदार्पण के साथ जनसमुदाय ने भक्ति भावना से अपने स्थान पर खड़े होकर जय-जयकार कर अपना हर्ष व्यक्त किया। आचार्यप्रवर आदि संत-मुनिराज विराजते तब तक व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा., विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. आदि ठाणा का दीक्षा-स्थल पर पदार्पण हुआ। संत-सतीवृन्द के विराजने के अनन्तर श्रावक-श्राविकाओं ने अपना-अपना स्थान ग्रहण किया।

कार्यक्रम संचालकजी ने आचार्यप्रवर आदि संत-सतीवृन्द के पधारने के पूर्व माइक खोल कर हटा दिया, फोटोग्राफरों को पाण्डाल से कैमरे हटा देने का अनुरोध किया। उपस्थित जनसमुदाय को यह भी सूचित किया गया कि दीक्षार्थिनी बहिनें आचार्यप्रवर से मांगलिक श्रवण कर वस्त्र परिवर्तन और केश कर्तन कक्ष से शीघ्र यहाँ उपस्थित होने वाली हैं, आप सभी शांति बनाए रखें और कार्यक्रम को व्यवस्थित चलने में सहयोग करें।

इसके अनन्तर आदिनाथ सोसायटी के अध्यक्ष श्री बोराजी ने आदिनाथ सोसायटी की विनति रखी कि आपश्री वहां कुछ दिन और विराजने की कृपा करें। धनकवड़ी संघाध्यक्ष श्री हरकचन्दजी मूथा ने बड़ी दीक्षा के लिए अपने संघ की विनति रखी। विनतियों के चलते जय-जयकार का जयनाद सुनाई दिया तो जनसमुदाय को सहसा आभास हो गया कि दीक्षार्थिनी बहिनें साध्वी वेश में उपस्थित हो रही हैं। दीक्षार्थिनी बहिनें अपने पारिवारिक-परिजनों व इष्ट-जनों के साथ आचार्यप्रवर आदि विराजित संत-मुनिराजों के समक्ष उपस्थित हुईं और वन्दन-नमन कर चारों मुमुक्षु बहिनों ने उपस्थित जनसमुदाय से हाथ जोड़कर क्षमायाचना की।

आचार्यप्रवर ने कांकरिया, गुगलिया और जैन परिवार के सदस्यों जिनमें माता-पिता एवं अन्य पारिवारिक सदस्य थे, से आज्ञा-अनुमति मांगी। माता-पिता और पारिवारिक-परिजनों ने खड़े होकर दीक्षा की आज्ञा प्रदान की। आचार्यप्रवर ने तदनन्तर पूना सकल जैन संघ एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के पदाधिकारियों से अनुज्ञा हेतु फरमाया तो पूना सकल संघ एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के पदाधिकारियों ने खड़े होकर दीक्षा की आज्ञा प्रदान की।

माता-पिता और संघ की स्वीकृति के पश्चात् आचार्यप्रवर ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में फरमाया कि विकार हरने के संसार में अनेक मंत्र हैं। सांप-बिच्छू का जहर मंत्र से उतरते आपने देखा होगा। गारुढ़ मंत्र का स्मरण

करते हुए भी आपने सुना है। मंत्र प्रभाव से जहर उतारा जाता है तो मंत्र प्रभाव से भूत-भविष्य का कथन भी किया जाता है। कुछ मंत्र ऐसे हैं जिनके प्रभाव से देवों का सिंहासन तक चलायमान किया जा सकता है और उनको उपस्थित भी किया जा सकता है। तीर्थंकर भगवन्तों ने ऐसा मंत्र बतलाया जिससे दस मिनट पहले जो आपको हाथ जोड़कर वन्दन कर रही थी, दीक्षा मंत्र लेने के साथ आपकी वन्दनीया बन जायेंगी। यह मंत्र वीतरागता की ओर आगे बढ़ाने वाला है। मैं चतुर्विध संघ की साक्षी से इन चारों मुमुक्षु आत्माओं को वही मंत्र सुनाने जा रहा हूँ। आचार्यप्रवर ने इच्छाकारेणं, तस्सउत्तरी, चतुर्विंशतिस्तव आदि पाठ बोलकर चारों मुमुक्षु आत्माओं को 'करेमि भन्ते' के पाठ से तीन करण-तीन योग से सभी पापों का त्याग करवाया। 'करेमि भंते' के पाठ के साथ उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं ने जय-जयकार के चन्द जयनाद कर अपना हर्ष व्यक्त किया।

आचार्यप्रवर ने फरमाया कि जैन धर्म में जाति व कुल की प्रधानता नहीं है। इस धर्म को क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य और शूद्र हर व्यक्ति अपना सकता है। हर व्यक्ति को आत्मा से महात्मा और महात्मा से परमात्मा बनने का अधिकार है, तथापि गणधर भगवन्तों का-तीर्थंकर भगवन्तों का वर्णन किया जाता है तो जाति सम्पन्न, कुल सम्पन्न, ज्ञान सम्पन्न, दर्शन सम्पन्न, चारित्र सम्पन्न आदि गुणों का वर्णन आता है। जातिवान-कुलवान ली हुई प्रतिज्ञा को लक्ष्य तक पहुँचायेगा। जातिवाला बैल कंधा तोड़ देगा, पर लिये भार को पार लगायेगा। चातक प्यासा मर जायेगा, पर वर्षा के अलावा अन्य पानी नहीं पीयेगा। इसी तरह जातिवान-कुलवान ने जो व्रत-नियम ग्रहण किये हैं, वह समाधि के साथ शरीर छोड़ना तो मंजूर कर लेगा, किन्तु ली हुई प्रतिज्ञा को टूटने नहीं देगा। इसी लक्ष्य से जाति व कुल की प्रधानता कही है।

आचार्यप्रवर ने उपस्थित जनसमुदाय का आह्वान किया कि आप इन मुमुक्षु आत्माओं की दीक्षा की अनुमोदना करना चाहते हैं, तो छोटी दीक्षा के रूप में ब्रह्मचर्य व्रत की प्रतिज्ञा ग्रहण करके अपने कदम चारित्र में बढ़ा सकते हैं। आचार्यप्रवर की प्रभावी प्रेरणा से शीलव्रत के खंद हुए, वे इस प्रकार हैः-

१- श्रीमती व श्री किशनदासजी ओस्तवाल-पूना

२- श्रीमती व श्री सुखलालजी ओस्तवाल-पूना

३- श्रीमती व श्री लक्ष्मीचन्दजी ओस्तवाल-पूना

४- श्रीमती व श्री अजयराज जी मेहता-चैन्नई

५- श्रीमती व श्री केवलचन्दजी बोहरा-बैंगलोर

६- श्रीमती व श्री किशनचन्द जी कटारिया-पूना
७- श्रीमती व श्री राजेन्द्रजी मेहता-मुम्बई
८- श्रीमती व श्री कांतिलाल जी लोढ़ा-पूना
९- श्रीमती व श्री मनोहरराज जी कांकरिया-चैन्नई
१०- श्रीमती व श्री कांतिलालजी गांधी-बैंगलोर
११- श्रीमती व श्री श्रवणकुमार जी जैन-गंगापुरसिटी
१२- श्रीमती व श्री प्यारेलाल जी गुगलिया-हैदराबाद
१३- श्रीमती व श्री गणपतराज जी जैन-सवाईमाधोपुर
१४- श्रीमती व श्री जवाहरलालजी मूथा-पूना

शीलव्रत ग्रहण करने वालों में श्री श्रवणकुमारजी वीरपिता हैं, जिनकी दो सुपुत्रियों ने भागवती दीक्षा अंगीकार की। श्री मनोहरराजजी कांकरिया नवदीक्षिता महासती श्री पिस्तादेवीजी के सांसारिक देवर हैं। श्री प्यारेलालजी गुगलिया नवदीक्षित महासती श्री बबिताजी के सांसारिक परिजन में से हैं। जैन सकल संघ, पूना ने शीलव्रत के खंद करने वालों का माल्यार्पण किया और श्रावकों को शॉल तथा बहिनों को चून्दड़ी ओढ़ाकर उनका सम्मान किया। आचार्यप्रवर की प्रेरणा से दीक्षा महोत्सव पर सामायिक-स्वाध्याय, ध्यान-मौन एवं त्याग-तप के अनेक प्रत्याख्यान भी हुए।

आचार्यप्रवर ने फरमाया कि इन चार मुमुक्षु बहिनों ने चारित्र में चरण बढ़ाया है, आप इन्हें देखकर अपने जीवन में पवित्रता लाने की चेष्टा करें। पूना में सुनने वाले बहुत हैं, साधना करने वाले भी हैं, पर कुर्त्ता-टोपी उतारना इन्हें भारी लगता है। आपके यहाँ बड़े-बड़े संतों के चातुर्मास हुए हैं, आचार्य सम्राट् के चातुर्मास भी यहां हुए हैं, सम्मेलन हुआ है इतना सब कुछ होते हुए भी सामायिक कैसे करना यह अधिकांश लोगों को याद नहीं। आप दीक्षा की अनुमोदना में यहाँ आए हैं तो कम-से-कम इतनी प्रतिज्ञा लेकर जाएँ कि एक सामायिक धर्म-स्थान में जाकर करेंगे। एक सामायिक भारी नहीं है। चौबीस घंटे में अड़तालीस मिनट निकालना चाहो तो निकाल सकते हैं। सामायिक स्थानकवासी समाज का प्राण है। अतः धर्म-स्थान में सामायिक का सिलसिला शुरु करें, तो मैं समझूंगा आप दीक्षा में आकर खाली हाथ नहीं लौटे।

आचार्यप्रवर के मंगलपाठ से दीक्षा महोत्सव कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। दीक्षा महोत्सव कार्यक्रम का सफल संचालन सुश्रावक श्री गौतमचन्दजी ओस्तवाल ने किया।

—कार्यालय प्रभारी, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

## पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत ५८ से भी अधिक वर्षों से सन्त-सतियों के चातुर्मासों से वंचित गांव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहां जैन सन्त-सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष **पर्युषण पर्व 24 अगस्त से 31 अगस्त 2003** तक रहेंगे। अतः देश-विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक **15 जुलाई 2003** तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

**1. गांव/शहरका नाम..............जिला.............प्रान्त...............**
**2. श्री संघ का नाम व पूरा पता.........................................**
**3. संघाध्यक्ष का नाम व पता..............................................**
**4. संघ मंत्री का नाम व पता...............................................**
**5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन................................**
**6. समस्त जैन घरों की संख्या..............................................**
**7. क्या आपके यहां धार्मिक पाठशाला चलती है?.........................**
**8. क्या आपके यहां स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?...........**
**9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव.................................**
**10. अन्य विशेष विवरण.....................................................**

***आवेदन करने का पता-*****संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 2624891, फैक्स- 2636763**

## स्वाध्यायियों के लिये आवश्यक सूचना

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के समस्त स्वाध्यायियों को सूचित करते हुए परम प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि आगामी पर्वाधिराज पर्युषण पर्व **24 अगस्त से 31 अगस्त 2003** तक मनाये जायेंगे। आप सभी स्वाध्यायी बन्धुओं से निवेदन है कि आप पर्युषण पर्व में अवश्य पधारकर अपनी अमूल्य सेवायें संघ को प्रदान करावें। बाहर गांव पधारने से आपकी धर्म-साधना सुचारु रूप से होगी ही, अन्य भाई-बहिनों की साधना में भी आप निमित्त बन सकेंगे। अतः आपसे निवेदन है कि आप अपनी पर्युषण स्वीकृति स्वाध्याय संघ कार्यालय, घोड़ों का चौक, जोधपुर-३४२००१ (राज.) फोन नं. २६२४८९१ के पते पर अवश्य भिजवाने का श्रम करावें।

*सुशीला बोहरा* — संयोजक
*रिखबचन्द मेहता* — सचिव

# समाचार-संकलन

## विचरण-विहार

### आचार्यप्रवर का पूना से सतारा होते इचलकरंजी विहार

- **परम श्रद्धेय आगममर्मज्ञ, प्रवचन प्रभाकर आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.**, महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म. सा. आदि ठाणा ८ का धनकवड़ी-पूना में चारों नवदीक्षिता महासतियांजी महाराज की बड़ी दीक्षा के पश्चात् पूना से सतारा की ओर विहार हुआ। दिनांक २० मई को आचार्यप्रवर फातिमानगर पधारे। फातिमानगर से आचार्यप्रवर ने सेवाभावी श्री नन्दीषेणजी म.सा. तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा ४ को विहार करवाया जो बड़ की नाल पधारे। जब कि आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा ४ सतववड़ी विराजे। सतववड़ी में सुश्रावक श्री अशोकजी भण्डारी ने आजीवन झूठ का त्याग किया। दिनांक २२ मई को आचार्यप्रवर सतववड़ी से विहार कर बड़ की नाल पधारे। सेवाभावी श्री नन्दीषेणजी म.सा. आदि ठाणा ४ कोलवाड़ी पधारे। दिनांक २३ मई को आचार्यप्रवर कोलवाड़ी, २४ मई को सासवड़ पधारे जहां सभी संत-मुनिराजों का एक साथ विराजना रहा। सासवड़ में सुश्रावक श्री वृद्धिचन्दजी सांखला ने आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से शीलव्रत अंगीकार किया। दिनांक २७ मई को शिवरी, २८ मई को जेजूरी, २९ मई को वाल्हेगांव, ३० मई को नीरा ग्राम में सामायिक-स्वाध्याय की प्रेरणा की। गांव-गांव में धर्मस्थान में सामायिक करने के नियम हुए। सेवाभावी श्री नन्दीषेणजी म.सा. आदि ठाणा का आगे विहार चल रहा है। पूना से जैन सकल संघ के अध्यक्ष श्री पोपटलालजी ओस्तवाल, सुश्रावक श्री उपेन्द्रजी बोथरा आदि कई श्रावकों ने विहार सेवा का लाभ लिया। सतारा से सुश्रावक श्री हिम्मतमलजी मूथा, इचलकरंजी से सुश्रावक श्री जवाहरलालजी बोहरा आदि श्रावकगण भी समय-समय पर विहार सेवा का लाभ ले रहे हैं। संघाध्यक्ष श्री रतनलालजी बाफना बड़ी दीक्षा पर आचार्यप्रवर की सेवा में पधारे तो संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत रास्ते में दर्शन-वन्दन हेतु उपस्थित हुए। आचार्यप्रवर के रक्तचाप में यदा-कदा न्यूनाधिकता से श्वास की तकलीफ हो जाती है। श्रमणोचित औषधोपचार से विहार का क्रम बराबर बना हुआ है। आचार्यप्रवर जून के प्रथम सप्ताह में सतारा पधारें, ऐसी संभावना है। सतारा से अग्र विहार इचलकरंजी की ओर संभावित है। सतारा और इचलकरंजी सम्पर्क

सूत्र इस प्रकार है:- (1) **श्री हिम्मतमलजी मूथा, मैसर्स मूथा एजेन्सीज, 41-मूथा कॉलोनी, सतारा केम्प-सतारा (महाराष्ट्र), फोन नं. 02162-234727,234445(ऑ.) 231105(घर), (2) श्री जवाहरलालजी बोहरा, 9/507, बोहरा भवन, महावीर भवन के पास, इचलकरंजी-416115 (जिला-कोल्हापुर) महा., फोन नं. 0230-2433056(ऑ.) 2436820(घर)**

## उपाध्यायप्रवर का मारवाड़ की ओर विहार

- **परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा.,** सेवाभावी श्री मंगलमुनि जी म.सा., विद्याभिलाषी श्री यशवन्तमुनि जी म.सा. ठाणा ३ कोटा-बून्दी-देवली-केकड़ी आदि क्षेत्रों में धर्मप्रभावना करते अक्षय तृतीया के पूर्व कंवलियास पधारे। आचार्य भगवन्त का पुण्य दिवस कंवलियास मनाकर बिजयनगर-मसूदा क्षेत्रों को पावन करते उपाध्यायप्रवर २८ मई को ब्यावर पधारे। ब्यावर में पीपलिया बाजार स्थानक में प्रवचन सभा में अच्छी उपस्थिति रही और धर्म-ध्यान का ठाट लगा रहा। ब्यावर से चांग-नानणा-गिरी-हाजीवास-निमाज आदि मध्यान्तर के ग्रामों में ज्ञान-गंगा प्रवाहित कर उपाध्यायश्री के जून के प्रथम सप्ताह में जैतारण पधारने की संभावना है। पीपाड़सिटी का एक शिष्ट मण्डल उपाध्यायश्री की सेवा में पहुंचा और चातुर्मासार्थ जोधपुर पधारने के पूर्व पीपाड़ पधारने की भावभरी विनती रखी। भोपालगढ़ जहां शान्तस्वभावी तपस्विनी महासती श्री शांतिकंवरजी म.सा. आदि ठाणा ४ सकारण विराजमान हैं, ने दर्शन-वन्दन की भावना पूर्व में उपाध्यायश्री के चरणों मे भिजवाई थी, भोपालगढ़ के शिष्ट मण्डल ने भावना श्रीचरणों मे प्रस्तुत की कि क्रियोद्धारक आचार्यश्री रत्नचन्द्र जी म.सा. के पुण्य दिवस ज्येष्ठ शुक्ला चतुर्दशी उपाध्यायश्री की सन्निद्धि में हो।

  उपाध्यायश्री चातुर्मासार्थ जोधपुर पधारें, इसके पूर्व भोपालगढ़-पीपाड़ क्षेत्र की भावना साकार करें ऐसी संभावना है। सम्पर्क सूत्र- **श्री सुमेरनाथ जी मोदी, मंत्री-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर, फोन नं. 0291-2636763 का. 2632681 नि.**

- **मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.,** तपस्वी श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. ठाणा २ ने जोधपुर क्षेत्र के विभिन्न उपनगरों में विचरण-विहार कर जोधपुरवासियों की भावना साकार की। उपाध्यायश्री मारवाड़ पधार रहे हैं इसे लक्ष्य में रखकर मुनिद्वय ने जोधपुर से विहार कि या और पीपाड़सिटी पधारे। पीपाड़ में ग्रीष्मकालीन संस्कार शिविर चल रहा है, जिसमें ८०-८५ शिविरार्थी भाग ले रहे हैं। मुनिद्वय उपाध्यायश्री के विहार को ध्यान में रखकर पीपाड़ से अग्र विहार का चिन्तन कर रहे हैं।

- **साध्वीप्रमुखा सरलहृदया महासती श्री सायरकंवर जी म.सा.** आदि ठाणा ३ घोड़ों का चौक सुख शांति पूर्वक विराजमान हैं। **शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.** आदि ठाणा जो नेहरूपार्क क्षेत्र को लाभान्वित कर रहे थे, साध्वीप्रमुखा की सेवा में घोड़ों का चौक पधारे और करीब एक पखवाड़ा विराजकर सोजती गेट स्थित उम्मेद कन्या पाठशाला पधारे और दो दिन वहाँ विराजकर २५ मई को पब्लिक पार्क के पीछे सुश्रावक श्री रूपराज जी मेहता के मकान पर एक दिन विराज कर वर्द्धमान भवन, पावटा पधारे हैं। पावटा से महामंदिर-लक्ष्मीनगर क्षेत्र फरसने की भावना है। **सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा.**आदि ठाणा अप्रेल के प्रथम सप्ताह में कुम्भट भवन-सरदारपुरा से पावटा पधारे, करीब डेढ़ माह पश्चात् पावटा से विहार कर इनकम टैक्स कॉलोनी स्थित स्थानक पधारे हैं।
- **शान्तस्वभावी तपस्विनी महासती श्री शान्तिकंवर जी म.सा.** आदि ठाणा ४ सकारण भोपालगढ़ विराजमान हैं।
- **व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा.** आदि ठाणा १२ का दीक्षा प्रसंग से पूना पधारना हुआ। १६ मई को बड़ी दीक्षा पश्चात् चातुर्मासार्थ निफाड़ पधारने की भावना से पूना से निफाड़ की ओर विहार चल रहा है।
- **व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवर जी म.सा.** आदि ठाणा ५ प्रेम सोसायटी, शाही बाग, अहमदाबाद विराजमान हैं। महासती श्री उषा जी म.सा. का ऑपरेशन सफलतापूर्वक हो गया है। महासती मण्डल का राजस्थान स्थानकवासी जैन संघ, अहमदाबाद की विनति पर शाहीबाग चातुर्मास स्वीकार किया गया है। अतः समीपवर्ती क्षेत्रों में विचरण की संभावना है।
- **विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा.** आदि ठाणा ६ का अक्षय तृतीया के पूर्व पूना पर्दापण हो गया था। अक्षय तृतीया, आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का पुण्य दिवस, दीक्षा समारोह एवं बड़ी दीक्षा पश्चात् महासती मण्डल का पूना से सतारा की ओर आचार्यप्रवर के प्पीछे-पीछे विहार चल रहा है। महासती मण्डल के जेजूरी गांव तक पधारने के समाचार ज्ञात हुए हैं। आचार्यप्रवर ने बीजापुर संघ को आश्वासन दे दिया है कि बीजापुर खाली नहीं रहेगा। पूना से सतारा की ओर विहार से लगता है कि आगे उस क्षेत्र की ओर बढ़ने की संभावना है।
- **व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवती जी(सोहनजी) म.सा.** आदि ठाणा ४ अजमेर से विजयनगर-कंवलियास-धनोप आदि क्षेत्रों को पावन कर २ जून को देवली पधारे हैं। आचार्यप्रवर ने कोटा श्रीसंघ की विनति मान्य कर

महासती मण्डल का चातुर्मास कोटा स्वीकार किया है, अतः देवली से कोटा की ओर अग्र विहार की संभावना है।

- **व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. एवं व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा.** आदि ठाणा ६ अलीगढ़ (टोंक) विराज रहे हैं। आचार्यप्रवर ने चौथ का बरवाड़ा और कुश्तला चातुर्मास खोले हैं। अतः पोरवाल क्षेत्र में विहार क्रम बना हुआ है।
- **व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा.** आदि ठाणा ३ दीक्षा पूर्व आचार्यप्रवर की सेवा में पधार गये थे। पूना दीक्षा पश्चात् पाँच ठाणों का सतारा की ओर विहार चल रहा है। सतारा-इचलकरंजी क्षेत्र की चातुर्मास की विनतियों के परिप्रेक्ष्य में लगता है कि उधर ही चातुर्मास की स्वीकृति हो।
- **व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा.** आदि ठाणा ३ पोरवाल क्षेत्र में धर्म-प्रभावना करके पल्लीवाल क्षेत्र को लाभान्वित कर रहे हैं। नदबई श्री संघ की विनति स्वीकार कर आचार्यप्रवर ने महासती मण्डल का चातुर्मास नदबई स्वीकार कर लिया है अतः आसपास के क्षेत्रों को संभाल कर महासती मण्डल यथा समय नदबई की ओर विहार करें, ऐसी संभावना है।

## वि.सं. २०६० के अब तक स्वीकृत चातुर्मास

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने साधु मर्यादा में रखने योग्य आगारों के साथ वि.सं. २०६० के अब तक जो चातुर्मास स्वीकार किए हैं, वे इस प्रकार हैं-

1. इचलकरंजी –परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा
2. घोड़ों का चौक,जोधपुर –परमश्रद्धेय उपाध्याय पं.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा
3. घोड़ों का चौक, जोधपुर –साध्वीप्रमुखा सरलहृदया महासती श्री सायरकंवर जी म.सा. आदि ठाणा
4. पावटा–जोधपुर –शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. आदि ठाणा
5. सरस्वती नगर–जोधपुर –सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा
6. भोपालगढ़ –शांतस्वभावी तपस्विनी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा. आदि ठाणा
7. निफाड़ (जि. नाशिक) –व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा
8. शाही बाग–अहमदाबाद –व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा
9. बीजापुर (कर्नाटक) –विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा
10. कोटा (राज.) –व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा
11. चौथ का बरवाड़ा(राज.) –व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा
12. नदबई (भरतपुर) –व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा
13. कुश्तला (सवाईमाधोपुर)–महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा

# आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के पूना पधारने पर पूनावासियों ने श्रद्धा-भक्ति का अनुपम आदर्श उपस्थित किया

जैन सकल संघ पूना की भावपूर्ण विनति स्वीकार कर आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र ज़ी म.सा. आदि ठाणा ने तप और दान के विशिष्ट पर्व अक्षय तृतीया एवं १२ मई को चार मुमुक्षु बहिनों की भागवती दीक्षा की स्वीकृति प्रदान की, तब से पूनावासी आचार्यप्रवर आदि संत-सतीवृन्द की उल्लसित मन से विहार-सेवा में भागीदारी प्रदर्शित करते हुए पूना पधारने की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे थे।

दिनांक १ मई को शिवाजी नगर से विहार कर आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा ८, नाना पेठ स्थित साधना सदन पधार रहे हैं, जानकर शहर के श्रावक-श्राविकाओं ने शिवाजीनगर से जय-जयकार के जयनाद करते हुए विहार-सेवाएँ दी। आचार्यप्रवर के शहर में प्रथम बार मंगलप्रवेश पर महाराष्ट्र के पर्यटन राज्यमंत्री श्री चन्द्रकांत जी छाजेड़, पूना शहर के महापौर सौ. दीप्ति जी चौधरी, नगर सेवक श्री अभय जी छाजेड़, नगर सेवक श्री सुभाष जी लोढ़ा, पूना शहर कांग्रेस कामेटी के अध्यक्ष श्री मोहनजी जोशी, कॉन्फ्रेंस के पूर्व अध्यक्ष श्री बंकटलाल ज़ी कोठारी, कॉन्फ्रेंस के उपाध्यक्ष श्री विजयकान्त जी कोठारी सहित शहर के विभिन्न क्षेत्रों के संघाध्यक्षों ने आचार्यप्रवर की अगवानी की।

साधना-सदन के अध्यक्ष श्री विजयकांत जी कोठारी, बिबवेवाड़ी संघ के अध्यक्ष श्री दीपचन्द जी पावेचा, धनकवडी के संघाध्यक्ष श्री हरकचन्द जी मूथा, कासारवाड़ी संघ के अध्यक्ष श्री अमृतराजजी भंडारी, शिवाजीनगर के अध्यक्ष श्री पृथ्वीराजजी बाबूशेठ बोथरा, साधना सदन के पूर्वअध्यक्ष श्री कचरदासजी पोरवाल, सादड़ी सदन के श्री पोपटलाल जी सोलंकी आदि अनेक प्रबुद्ध श्रावकों ने आचार्यप्रवर के पूना पधारने पर वचनों से हार्दिक स्वागत-अभिनन्दन करते हुए विनति रखी कि आपश्री हमारे क्षेत्र को पावन करने की कृपा करें। महाराष्ट्र शासन के पर्यटन राज्यमंत्री श्री चन्द्रकांत जी छाजेड़ ने आचार्यप्रवर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा कि आपश्री लगभग तीन वर्ष से महाराष्ट्र के गांव-गांव और नगर-नगर में व्यसनमुक्ति के माध्यम से जनता को संस्कारित कर रहे हैं, जो बेमिसाल है। महापौर सौ. दीप्ति जी चौधरी ने पूना शहर की ओर से आचार्य श्री के स्वागत में अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए।

साधना-सदन पधारने पर स्वागत-अभिनन्दन में और पूना शहर के विभिन्न क्षेत्रों की विनतियों में आचार्यप्रवर के श्रीचरणों में निवेदन किया गया कि आपश्री पहली बार पूना पधारे हैं, अतः हमें पर्याप्त समय देकर हमारी मनोभावना साकार करें। आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्बोधन में फरमाया कि आप सबकी श्रद्धा-भक्ति तो है, कर्त्तव्य के प्रति सजगता रहेगी तो जिनशासन की प्रभावना हो सकेगी। पूना के ऐतिहासिक स्थान शनिवारवाड़ा में आचार्यप्रवर की पूना संघ ने

अगवानी की।

## आनन्द तीर्थ, पूना में अक्षय तृतीया पर व्रत-प्रत्याख्यानों की अपूर्व प्रभावना

जैन सकल संघ पूना के तत्त्वावधान एवं आनन्द तीर्थ के प्रांगण में रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ८ तथा विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ६ के पावन सान्निध्य में तप और दान के विशिष्ट पर्व अक्षय तृतीया पर सुज्ञ श्रावक और श्राविकाओं ने व्रत-प्रत्याख्यान कर जिनशासन प्रभावना में अपनी भागीदारी प्रदर्शित की।

जैन सकल संघ, पूना के तत्त्वावधान में आयोजित तप-पूर्णाहुति समारोह में समीपवर्ती-सुदूरवर्ती तप-साधकों ने आचार्यप्रवर आदि संत-मुनिराजों के मुखारविन्द से तप और दान का महत्त्व श्रवण कर आनन्द तीर्थ के प्रांगण में पारणा किया। पूना, जोधपुर, चेन्नई, भोपालगढ़, जलगांव, धुलिया, रायचूर, मुकटि, नासिक, आकोला, श्रीगोंदा, औरंगाबाद आदि-आदि ग्राम नगरों के ६१ तपस्वी भाई-बहिनों का जैन सकल संघ पूना के अध्यक्ष श्री पोपटलाल जी ओस्तवाल, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री रतनलाल जी बाफना, जलगांव, रत्नसंघ संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई एवं शासनसेवा समिति के सदस्य श्री सुमेरसिंहजी बोथरा, जयपुर तथा तप-साधकों के पारिवारिक-परिजनों और इष्ट मित्रों ने तप के अनुमोदनार्थ तप साधकों का बहुमान किया।

जैन सकल संघ की ओर से तपस्वियों का स्वागत-अभिनन्दन अत्यन्त आत्मीयतापूर्वक किया गया। आचार्यप्रवर अपने आज्ञानुवर्ती संत मुनिराजों के साथ बालाजी सोसायटी, बिबवेवाड़ी से विहार कर प्रातः करीब ८.३० बजे आनन्दतीर्थ पधारे। विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ६ भी आचार्यप्रवर के पधारने के करीब आधा घंटा पश्चात् पधारीं। प्रातः करीब ६.३० बजे श्री कपिलमुनि जी म.सा. ने प्रवचन प्रारंभ किया और अक्षय तृतीया की महिमा शास्त्रीय आधार से समझाई। आचार्यप्रवर आदि संत-मुनिराज करीब १० बजे प्रवचन सभा में पधारे। आनंद तीर्थ का विशाल प्रांगण श्रद्धालुओं से खचा-खच भरा हुआ था।

प्रवचन सभा में जैन सकल संघ एवं आनन्द तीर्थ के अध्यक्ष श्री पोपटलाल जी ओस्तवाल ने तप साधकों का, पधारे श्रीसंघों का एवं श्रद्धालुओं का हार्दिक स्वागत किया। श्री पुनवानचन्द जी ओस्तवाल ने आनन्द तीर्थ की प्रवृतियों गतिविधियों का चित्रण रखते हुए शिक्षा, चिकित्सा और जनोपयोग क्षेत्र में सहयोग देने का आह्वान किया। जलगांव विद्यापीठ के प्राचार्य श्री प्रकाशचन्द जी जैन ने

आचार्यप्रवर की धर्मस्थान में सामायिक की प्रेरणा पर प्रकाश डालते हुए जलगांव में भाऊ मण्डल की तरह गांव-गांव और नगर-नगर में धर्मस्थान में सामायिक-साधना से स्थानकवासी परम्परा के पोषण को समय की आवश्यकता बताई। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री रतनलाल जी बाफना ने अपनी ओर से एवं संघ की ओर से तप साधकों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करते हुए नवीन व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार कर जिनशासन को दीप्तिमान करने का आह्वान किया।

तत्त्वचिंतक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ने उत्तराध्ययन सूत्र के छठे अध्ययन की पहली गाथा का हार्द समझाते हुए कर्मक्षय में तप और दान की महत्ता प्रतिपादित की। मुनिश्री ने चन्द्रमा से तिथि निर्धारण का उल्लेख करते हुए कहा कि चन्द्र मन का प्रतीक है, तो सूर्य आत्मा का। जो मन आत्मा का स्पर्श करे उसके कर्म क्षय हो सकते हैं। मुनिश्री ने कहा कि हमारा आयोजन आडम्बर के लिए नहीं है और न ही रस्म निभाने के लिए है; हम तप और दान के महत्त्व को समझकर उस पर आचरण करें तो अक्षय सुख प्राप्त हो सकता है।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने 'तप भव-भव में सुखदायी है' गीत की चन्द पंक्तियों के माध्यम से तप का स्वरूप प्रतिपादित करते हुए आदि तीर्थंकर श्री आदिनाथ भगवान के तप को निरन्न, निर्जल, निष्पाप, निष्काम, निर्लेप बताते हुए फरमाया कि हम तप जो कर्म काटने की रामबाण औषधि है, का सेवन करें। तप के साथ दान पर प्रकाश डालते हुए आचार्यप्रवर ने सुपात्र दान का हार्द विस्तार से समझाया। आचार्यप्रवर ने उपस्थित जन समुदाय को तपाराधन की प्रेरणा करते हुए फरमाया कि आप भावनापूर्वक तप करेंगे तो आप कर्मक्षय रूप निर्जरा की प्रगति कर सकेंगे। तप साधकों के पुरुषार्थ को प्रमोदजन्य बताते हुए फरमाया कि दस-बीस वर्षों से तप करने वाले हैं तो तेंयालिस वर्ष से एकान्तर तप करने वाले भी हैं। कुछ बेले-बेले तप करते हैं, कुछ आयंबिल करते हैं। आप अनशन नहीं कर सकते हैं तो मधुर वचन बोलकर भी तप कर सकते हैं। बंच्चा-बूढ़ा-जवान सभी तप कर सकते हैं। आचार्यप्रवर के प्रभावी प्रेरक प्रवचन को श्रवण कर अनेक नवीन व्रत-प्रत्याख्यान हुए। बेले-बेले तप के साथ एकान्तर तप, एकल ठाणा तप आदि कई नए प्रत्याख्यान हुए। क्रोध नहीं करने, मान नहीं करने जैसे भी कुछ नियम श्रावक-श्राविकाओं ने भावनापूर्वक अंगीकार किए। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री गौतमचन्द जी ओस्तवाल ने किया।

## आचार्यप्रवर श्री हस्ती का श्रद्धा भक्तियुक्त गुण-स्मरण

**पूना**—आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ८ एवं व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म. सा.; विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा २१ के सान्निध्य में

प्रतिपल स्मरणीय परमाराध्य महामहिम आचार्य भगवन्त पूज्य श्री १००८ श्री हस्तीमल जी म.सा. का १२वाँ पुण्य दिवस श्री आदिनाथ स्थानकवासी जैन स्थानक भवन, पूना में वैशाख शुक्ला अष्टमी, शुक्रवार तदनुसार ९ मई २००३ को श्रद्धा-भक्ति के साथ मनाया गया।

प्रवचन का शुभारंभ श्री कपिलमुनि जी म.सा. ने किया और युगद्रष्टा आचार्य भगवन्त के गुणकीर्तन-गुणस्मरण कर अपनी श्रद्धा व्यक्त की। मुनिश्री के प्रवचन के पश्चात् श्री मनोहरराज जी कांकरिया, चेन्नई, जलगांव संघाध्यक्ष श्री दलुभाऊ जैन, जलगांव विद्यापीठ के प्राचार्य श्री प्रकाशचन्द जी जैन, सौ. हेमलता सांखला, मुम्बई, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष श्री ईश्वरलाल जी ललवानी, श्रीमती उषा जी सुराना, जयपुर, श्री गौतमराजजी जी सुराना, चेन्नई, श्री महावीरचन्द जी ओस्तवाल, चेन्नई एवं श्री ताराचन्द जी सिंघवी, पाली ने आराध्य गुरुवर के गुणस्मरण-गुणकीर्तन एवं प्रेरक प्रसंग प्रस्तुत कर गुरु हस्ती के सामायिक-स्वाध्याय संदेश को घर-घर और जन-जन तक पहुंचाने का आह्वान किया।

श्री आदिनाथ स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के श्री बाबूलालजी गुगलिया ने आचार्य भगवन्त के पुण्य दिवस पर श्रद्धा व्यक्त करते हुए आदिनाथ सोसायटी में आचार्य भगवन्त का पुण्य दिवस मनाने के सुयोग को क्षेत्र की प्रबल पुण्यवानी बताया। श्री गुगलिया जी ने समीपवर्ती-सुदूरवर्ती क्षेत्रों से पधारे श्रद्धालुओं का स्वागत करते हुए त्याग-तप में सबके सहयोग की अपेक्षा रखी एवं संघ की ओर से धन्यवाद दिया।

आचार्यप्रवर के संकेत से विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. ने तपसाधक आचार्य भगवन्त की दूरदर्शिता एवं संघ-समाज पर किए उपकारों की झांकी रखते हुए आह्वान किया कि आप हम सब उस महापुरुष के अनेकानेक गुणों में से किसी एक गुण को जीवन-व्यवहार में चरितार्थ कर सकें, तो हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी। श्री मनीषमुनि जी म.सा. ने आचार्य भगवन्त के यशस्वी जीवन की झांकी रखते हुए बताया कि उस महापुरुष ने बचपन से कीर्तिमान प्रारम्भ किए और समाधिमरण का अनुपम आदर्श उपस्थित किया।

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ने जन्म-मरण का स्वरूप समझाते हुए फरमाया कि गुण बाहर से नहीं आते, वे हमारे भीतर विद्यमान हैं, जिनका प्रकटीकरण किया जा सकता है। मुनिश्री ने कहा- गुरु किसी को तार नहीं सकते, पर गुरु को देखकर भीतर में दृढ़ श्रद्धा जगती है। ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार और वीर्याचार को आचार्य भगवन्त ने अपने जीवन में रचा-पचाकर हमारे लिए अनुपम आदर्श रखा। मुनिश्री ने आचार्य भगवन्त के कतिपय संस्मरण रखते हुए उनके प्रबल पुरुषार्थ को जीवन में आत्मसात् करने का आह्वान किया।

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने अपने मंगल उद्बोधन में

फरमाया कि आज का दिन कथन का नहीं, करने का दिन है। आचार्य भगवन्त पाँच आचार, पाँच महाव्रत, पाँच समिति और दस धर्म के परिपालन में खरे उतरे। भगवन्त चलना जानते थे, चलाना भी जानते थे। भगवन्त सेवा की प्रतिमूर्ति रहे। उस महापुरुष में अनेकानेक गुण हैं, जिन पर घंटों तक कहा जा सकता है। मैं अन्यान्य गुणों का कथन करने के बजाय भगवन्त के सेवा गुण पर कुछ कहने की भावना रखता हूँ-

साधु के दो मुख्य कार्य हैं-स्वाध्याय और सेवा। स्वाध्याय के संदर्भ में आपने बहुत सुन लिया। जहाँ सामायिक-स्वाध्याय का नाम है, वहाँ गुरु हस्ती का सहज स्मरण स्वतः हो जाता है। सेवा की बात उतनी ज्ञात नहीं है। मैं वि.सं. २००६ में गुरुचरणों में आया। वि.सं. २०१० की बात कहूं-जोधपुर संयुक्त चातुर्मास में बहुश्रुत श्री समर्थमल जी महाराज को निमंत्रित करके बुलाने का काम आचार्य भगवन्त ने किया। आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनन्दऋषि जी महाराज मारवाड़ पधारे। सेवा कैसे होती है इसे आप समझें। भोपालगढ़ से आचार्य सम्राट् ने विहार किया, गुरुदेव पीछे- पीछे विहार करके पधार रहे थे। रामचौकी (बिराई) के पास विहार में श्री मोतीऋषि जी महाराज को सांप काट गया। आचार्य सम्राट् आगे थे, गुरुदेव पीछे। लोगों ने आचार्य सम्राट् को सांप काटे जाने की सूचना दी। आचार्य सम्राट् ने फरमाया कि पीछे पूज्य श्री पधार रहे हैं, वे संभाल लेंगे। पूज्य श्री पर आचार्य सम्राट् का कितना विश्वास रहा होगा, आप कल्पना कर सकते हैं। गुरुदेव को ज्ञात हुआ तो उस महापुरुष ने पन्द्रह-बीस मिनट स्मरण भजन कर मुनिश्री को स्वस्थ किया और पाठ सुनाने मात्र से वह जहर दूर हो गया।

वि.सं. २०१२ में वयोवृद्धा श्री छोगाजी महाराज की विशेष प्रार्थना पर आचार्य भगवन्त ने अजमेर चातुर्मास किया। आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनन्दऋषि जी महाराज के दो शिष्य श्री हिम्मतऋषि जी और श्री पुष्पऋषिजी अस्वस्थ हो गये। विहार की स्थिति नहीं देखकर आचार्य सम्राट् ने अपने दोनों शिष्यों को आचार्य श्री हस्ती के साथ चातुर्मास करने की आज्ञा दी। आचार्य भगवन्त ने कहलवाया इन मुनियों की सेवा में कोई कमी नहीं आयेगी। पूरे चातुर्मास में वे संत गुरुदेव के साथ रहे। आज कुछ दिन साथ रहना भी भारी होता है, लेकिन भगवन्त का सेवाभावी व्यवहार उन संतों को अनुकूल लगा।

साहित्य के क्षेत्र में आचार्य भगवन्त ने श्री देवेन्द्रमुनि जी को न केवल प्रेरणा ही दी, जोधपुर में उनकी अस्वस्थता में न्यायाधिपति श्री इन्द्रनाथ जी मोदी जो जोधपुर संघ के अध्यक्ष थे, उनसे कहा कि उपाध्यायश्री पुष्करमुनि जी महाराज और साहित्य मनीषी श्री देवेन्द्रमुनि जी महाराज की सेवा में कोई कमी न रहे।

वि.सं. १९९० के सम्मेलन में पंजाब के आचार्य पूज्य श्री सोहनलाल जी महाराज थे। पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज उस समय उपाध्याय थे। भगवन्त ने पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज का जोधपुर चातुर्मास करवाया और स्वयं चातुर्मास

में साथ रहे। शास्त्र वाचना का वह प्रसंग जोधपुरवासियों को आज भी याद है।

आचार्य भगवन्त का वि.सं. २०१५ का सब्जी मंडी दिल्ली में चातुर्मास था। पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज लुधियाना विराज रहे थे। उन्होंने गुरुदेव की सेवा में समाचार भिजवाये कि आप दिल्ली तक पधार गये हैं, कृपा कर लुधियाना पधारें, जिससे आप द्वारा की गयी सेवा का कर्ज उतार सकूं। आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज ने आचार्य भगवन्त के लिए 'पुरिसवरगंधहत्थीणं' शब्द का संबोधन लिखवाया। आचार्य भगवन्त लुधियाना पधारते तो उनका स्वागत होता, लेकिन सेवा को प्रमुखता देने वाले आचार्य भगवन्त लुधियाना के बजाय स्वामीजी श्री अमरचन्द जी महाराज की अस्वस्थता में उनकी सेवा हेतु जयपुर पधारे।

वि.सं. २०२० सैलाना से विहार करके आचार्य भगवन्त पधार रहे थे, रास्ते में ज्ञानगच्छ के संत अकेले रह गये या छोड़ दिये गये। आचार्य भगवन्त ने यह विचार कर कि एकाकी संत भगवान की आज्ञा में नहीं रहता। तपस्वी संत श्री मांगीलाल जी को साथ लिया। मेरी दीक्षा के समय वे संत आचार्य भगवन्त के साथ पीपाड़ में थे। चातुर्मास समाप्ति पर उनसे पूछा- आपकी इच्छा क्या है? भगवन्त ने उन तपस्वी संतरत्न को समझाकर उन्हें अपनी परम्परा में भेजा। कोई किसी परम्परा का संत हो, आचार्य भगवन्त ने सौहार्द दिया, सेवा की और सदैव सहयोग दिया।

वि.सं. २०२७ में श्री जयमल्ल जी महाराज की परम्परा के स्वामीजी श्री रावतमल जी अकेले रह गये। आचार्य भगवन्त को जानकारी मिली तो, भगवन्त ने मेड़ता विराजित पंडित रत्न श्री चौथमल जी महाराज जिनकी दीक्षा आचार्य भगवन्त के साथ हुई उनको आदेश दिया कि आप कुचेरा पहुंचकर एकाकी रह गये संतरत्न श्री रावतमल जी महाराज को संभालें। इधर आचार्य भगवन्त ने आदेश दिया, उधर युवाचार्य श्री मधुकरमुनि जी महाराज की ओर से समाचार आए कि मैं संत भेज रहा हूँ, आप कष्ट न करें। आज सेवा का वह आदर्श कहाँ? आज तोड़-फोड़ हो रही है, राजनीति की जा रही है, तिक्कड़म्बाजी चल रही है लेकिन आचार्य भगवन्त शास्त्र मर्यादा के रक्षण और सेवा में सदैव तत्पर रहे।

आचार्य भगवन्त ने सांपों को बचाया, तो कइयों को पापों से उबारा। अपनों पर ही नहीं, परायों पर भी अपने चारित्र की छाप छोड़ी। आचार्यसम्राट् का जीवन चरित्र लिखने को श्री तेजमल जी लोढ़ा से कहा गया। उन्होंने आचार्य सम्राट् का जीवन चरित्र लिखा भी। सम्पादकीय में श्री लोढ़ा जी ने लिखा है- कलम चलाने की प्रेरणा आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज ने दी। वे श्री लोढ़ा जी हों या श्री देवेन्द्रमुनि जी दोनों भगवन्त की प्रेरणा से आगे बढ़े और उन्होंने खुले मन से भगवन्त का उपकार माना। श्री गजसिंह राठौड़, डॉ. नरेन्द्र जी भानावत, श्री कन्हैयालाल जी लोढ़ा जैसे न जाने कितने लोग हैं, जिन्होंने आचार्य भगवन्त से प्रेरणा पाने की बात लिखी है।

श्री डी.आर. मेहता के छोटे भाई किसी जैन तीर्थ की पहाड़ी पर चढ़ रहे थे, रास्ते में एक मंदिरमार्गी संत से सेवा पूछी तो सन्त ने कहा-आप आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज के भक्त लगते हैं। हम संत सेवा करें उसमें नई बात क्या? हमारे श्रावकों के मन में सेवा धर्म का पाठ रचा-पचा है, आचार्य भगवन्त की यह देन सदा आगे बढ़ाने वाली है। मैं बहुत विस्तार से कह सकता हूँ पर समय की अपनी सीमा है। आप सामायिक करें, स्वाध्याय करें, सेवा करें, कुछ करेंगे तो उस महापुरुष के प्रति आपकी श्रद्धाभिव्यक्ति हो जायेगी। आचार्य प्रवर का मंगल उद्‌बोधन श्रावक-श्राविकाएँ दत्तचित्त हो श्रवण कर रहे थे, सवा बारह बज जाने के बाद भी कोई हिलने का नाम नहीं ले रहा था। आचार्य भगवन्त के प्रति श्रद्धा और आचार्यप्रवर के प्रति भावना के कारण विशाल प्रवचन सभा में अपूर्व शांति रही।

मंगलपाठ के पूर्व श्रावक-श्राविकाओं ने उपवास, आयंबिल, एकाशन, दया के प्रत्याख्यान आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से अंगीकार कर त्याग-तप की श्रद्धा समर्पित की।

## धनकवड़ी - पूना में
## नवदीक्षिता महासतियों की बड़ी दीक्षा सानन्द सम्पन्न

आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसनमुक्ति के प्रबल-प्रेरक परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के मुखारविन्द से आनन्द तीर्थ पूना में वैशाख शुक्ला एकादशी, सोमवार, दिनांक १२ मई, २००३ को जिन चार मुमुक्षु बहिनों की भागवती दीक्षा सम्पन्न हुई, धनकवड़ी-पूना में ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्थी, सोमवार, दिनांक १६ मई २००३ को आचार्यप्रवर ने उनको छेदोपस्थानीय चारित्र में आरुढ़ करवाया। बड़ी दीक्षा के समय परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्रजी म.सा. महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा ८, व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा., विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा., आदि ठाणा २५, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रतनलालजी बाफना, कांकरिया, गुगलिया, जैन परिवारों के सदस्यगण, समीपवर्ती-सुदूरवर्ती क्षेत्रों के श्रद्धालु और पूना के विभिन्न क्षेत्रों के अध्यक्षों सहित बड़ी संख्या में श्रावक और श्राविका उपस्थित थे। धनकवड़ी संघाध्यक्ष श्री हरकचन्दजी मूथा ने अलभ्य लाभ के लिए आचार्यप्रवर आदि संत-सतीवृन्द के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त की। बड़ी दीक्षा पर आचार्यप्रवर ने नवदीक्षिता महासतियों के नामकरण किए वे इस प्रकार है-

| | | नये नाम |
|---|---|---|
| १- | नवदीक्षिता श्री पिस्ताकंवरजी म.सा. | महासती श्री प्रभावतीजी म.सा. |
| २- | नवदीक्षिता श्री मालाजी म.सा. | महासती श्री प्रतिष्ठाप्रभाजी म.सा. |
| ३- | नवदीक्षिता श्री बबिताजी म.सा. | महासती श्री भक्तिप्रभाजी म.सा. |

४- नवदीक्षिता श्री नूतनजी म.सा. महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा.

**-अरुण मेहता, महामंत्री, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ**

## कोलकाता में पुण्यतिथि पर व्याख्यान

**कोलकाता**–आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. की बारहवीं पुण्य तिथि पर श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ ने 'वर्तमान युग में जैन धर्म की प्रासंगिकता' पर त्रिपुरा के पूर्व राज्यपाल जाने माने विद्वान आचार्य सिद्धेश्वर जी प्रसाद के एक व्याख्यान का ११ मई २००३, रविवार को आयोजन किया गया। इस आयोजन की अध्यक्षता जोधपुर विश्वविद्यालय के पूर्वकुलपति प्रो. कल्याणमल जी लोढ़ा ने की। आचार्य सिद्धेश्वर प्रसाद जी जैन ने कहा कि तेजी से बदलती दुनियां में जैन धर्म की प्रासंगिकता पर भी विचार आवश्यक है। हम बिना बीमारी समझे मरीज को दवा दे रहे हैं। सिर्फ जैन धर्म के साथ ही नहीं, सभी धर्मों के सामने यही समस्या है कि उसके अनुयायी अपने धार्मिक गुरुओं के सामने सिर झुकाते हैं, पर उनकी सुनते नहीं है। जो बात धर्म में बतायी गयी है आचरण उसके विपरीत करते हैं। आचार्य प्रसाद ने कहा कि जैन धर्म की आज भी उतनी ही प्रासंगिकता है, क्योंकि अपरिग्रह जैसे सिद्धान्त भारतीय परम्परा के मूल में हैं। सामाजिक परिवर्तन के लिये उनके सिद्धांतों को समझें एवं उनको जीवन में उतारें। आचार्य सिद्धेश्वर प्रसाद ने अपने वक्तव्य में वैज्ञानिक पहलुओं का उल्लेख करते हुए जैन धर्म के मानने वालों को उनके दायित्व का बोध करवाया।

इस अवसर पर हर्षद जी जोशी, नवरतन जी सुराणा, चिरंजीलाल जी बगरा, भंवरलाल जी सिंघी, रिखभदास जी भंसाली, दीपचन्द जी नाहटा एवं 'छपते-छपते' के मुख्य सम्पादक श्री विश्वम्भर जी नेवर ने भी संक्षिप्त वक्तव्य रखे। श्री सुमेरचन्द जी भंडारी ने आगत अतिथियों का स्वागत किया। श्री मदनरूपचन्द जी भंडारी ने संस्था की गतिविधयों पर प्रकाश डाला। चंदनबाला मंडल की सदस्याओं ने गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन श्रीमती रश्मि जी मेहता ने किया।

## स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा कर्मसिद्धान्त शिविर आयोजित

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा दिनांक २५.५.२००३ से २८.५.२००३ तक श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, जयपुर में कर्म सिद्धान्त विषय पर विशिष्ट स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया जिसमें जयपुर, जोधपुर, जलगांव, सवाईमाधोपुर, बजरिया, उदयपुर, नीमच, सुमेरगंज मण्डी, अलीगढ़ आदि स्थानों के स्वाध्यायियों ने भाग लिया। शिविर का समय प्रातः ५.०० बजे से रात्रि ९.३० बजे तक रखा गया, जिसमें प्रातःकाल ५.०० से ७.०० बजे तक प्रार्थना, ध्यान एवं उद्बोधन का कार्यक्रम रखा गया। तत्पश्चात् प्रथम सत्र ८.३० से ११.०० बजे तक, द्वितीय सत्र १.०० से ५.०० बजे तक, तृतीय सत्र सांय ७.३० से ९.३० बजे तक रखा गया। जिसमें विशिष्ट विद्वान् प्रशिक्षकों द्वारा सभी स्वाध्यायियों

को कर्म सिद्धान्त विषय से संबंधित जानकारी प्रदान की गई। शिविर में अध्यापन के रूप में सर्व श्री कन्हैयालाल जी लोढ़ा, जयपुर, श्री मोहनमल जी मूथा, जयपुर, श्रीमान सम्पतराज जी डोसी, जोधपुर, श्रीमान फूलचन्द जी मेहता, उदयपुर, श्री प्रेमचन्द जी कोठारी, बून्दी, श्री पदमचन्द जी मुणोत, जयपुर, श्रीमान नथमल जी हीरावत, जयपुर, श्री डी.आर.मेहता, जयपुर, डॉ. कमलचन्द जी सोगाणी, जयपुर, डॉ. धर्मचन्द जी जैन, जोधपुर, डॉ. सुषमा जी सिंघवी, जयपुर, श्रीमती तारा जी डागा, जयपुर ने अपनी अमूल्य सेवायें प्रदान की।

शिविर काल में कर्मसिद्धान्त से संबंधित इन विषयों का अध्यापन करवाया गया- जैन दर्शन में कर्म सिद्धान्त की अवधारणा, कर्म सिद्धान्त की भूमिका, नवतत्त्व और कर्म सिद्धान्त, कर्मबंध प्रकार, छूटने के उपाय, आयुष्य टूटती है, आयावाई लोयावाई कम्मावाई किरियावाई, गुणस्थान और कर्म सिद्धान्त का व्यावहारिक रूप, १० करण और उनका स्वरूप, कर्मबंध से कैसे बचें, समकित प्राप्ति की प्रक्रिया, नवतत्त्व व षट् द्रव्य।

२८.५.०३ के साधना भवन में शिविर का समापन समारोह आयोजित किया गया । कार्यक्रम के अध्यक्ष शासन सेवा समिति के सदस्य श्री सुमेरसिंह जी बोथरा एवं मुख्य अतिथि श्रीमान प्रेमचन्द जी कोठारी, बून्दी वाले थे । कार्यक्रम के प्रांरभ में वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री चंचलमंल जी चोरड़िया ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् स्वाध्याय संघ, जोधपुर की संयोजक श्रीमती सुशीला जी बोहरा ने अतिथियों का स्वागत करने के साथ शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत की तथा आगामी शिविर चातुर्मास में आयोजित करने की घोषणा की। आगामी शिविर का विषय संवर-निर्जरा रहेगा। महावीर जैन स्वाध्याय विद्यापीठ के प्राचार्य श्री प्रकाशचन्द जी जैन, जलगांव, स्वाध्याय संघ के पूर्व संयोजक श्री नवरतनमल जी डोसी ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। मुख्य अतिथि श्री प्रेमचन्द जी कोठारी ने सभी स्वाध्यायियों को ज्ञान के साथ अपना आचार पक्ष मजबूत करने की प्रेरणा की। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्रीमान सुमेरसिंह जी बोथरा ने संघ-सेवा को सर्वोपरि बताते हुए कहा कि जीवन उसी का सफल है जो संघ के किसी काम आ सके। स्वाध्याय संघ, जोधपुर के पूर्व संयोजक श्री सम्पतराज जी डोसी ने सभी महानुभावों का धन्यवाद एवं आभार ज्ञापित किया।**-रिखबचन्द मेहता, सचिव**

## ३१०० वर्षीतप का पारणक

**मुम्बई**- श्री स्थानकवासी जैन लीम्बड़ी अजरामर सम्प्रदाय के तत्त्वावधान में अन्धेरी, मुम्बई में ३१०० वर्षीतप (एकान्तर उपवास) के पारणक हुए। यह आयोजन भगवान महावीर के २६००वें जन्म-कल्याणक वर्ष की पूर्णाहुति तथा युगपुरुष श्री अजरामर जी स्वामी के २५०वें जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में अक्षयतृतीया को वर्तमान गादीपति श्री नरसिंह जी स्वामी की निश्रा में लगभग २ लाख की जनमेदिनी की

उपस्थिति में आदिनाथ नगर, अन्धेरी (प.), मुम्बई में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर २१२ साधु- साध्वी विराजमान थे।

## भगवान महावीर फाउण्डेशन के पुरस्कारों हेतु नाम आमंत्रित

भगवान महावीर फाउण्डेशन ने २००३ के अवार्ड चयन के नामांकन आमंत्रित करने के लिए प्रेस विज्ञप्ति जारी की है। इस संस्थान के प्रबंध न्यासी श्री सुगालचन्द जी ने बताया कि प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी महावीर फाउण्डेशन तीन पुरस्कार प्रदान करेगा। प्रत्येक पुरस्कार में राशि पाँच लाख रुपये नकद, प्रशस्ति पत्र एवं भगवान महावीर की प्रतिमा स्मृति चिह्न स्वरूप प्रदान की जायेगी। पुरस्कार निम्नांकित तीन क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्यों के लिए दिये जायेंगे– **1. अहिंसा एवं शाकाहार का प्रचार प्रसार 2. शिक्षा एवं चिकित्सा 3. सामाजिक एवं सामुदायिक सेवा।**

पुरस्कारों के लिए नामांकन १५.८.०३ के पूर्व फाउण्डेशन कार्यालय में पहुँच जाने चाहिये। स्व नामांकन स्वीकार नहीं किये जायेंगे। पुरस्कार निर्णायक समिति में भारत के गणमान्य महानुभाव हैं। उच्चतम न्यायालय के भूतपूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री एम.एन. वेंकटचेल्लैया इस समिति के अध्यक्ष हैं। इस संस्थान का लक्ष्य है कि केवल भारतीय नागरिक एवं संस्थाएँ जो कि भारत में स्थित हैं और देश में उत्कृष्ट कार्य कर रही हैं, इन पुरस्कारों की पात्र होंगी। साधारणतया हाल में किये गये कार्य ही पुरस्कारों के लिए विचारणीय होंगे। पुरस्कार निर्धारण मुख्य रूप से इस बात पर निर्भर करेगा कि इनके प्रयासों से आर्थिक एवं सामाजिक रूप से पिछड़े वर्गों, जैसे अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जन जाति तथा महिलाओं को कितना लाभ पहुँच रहा है।–**एन. सुगालचन्द जैन, न्यासी**

## स्व. श्री प्रदीपकुमार रामपुरिया स्मृति साहित्य पुरस्कार प्रतियोगिता वर्ष २००३ हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के अन्तर्गत संचालित स्व. श्री प्रदीपकुमार रामपुरिया स्मृति साहित्य पुरस्कार वर्ष २००३ हेतु जैन धर्म-दर्शन, इतिहास-कला एवं संस्कृति तथा जैन साहित्य काव्य, कथा निबन्ध, नाटक, संस्मरण एवं जीवनी आदि के संबंध में लिखित मौलिक ग्रंथ पर हमारे द्वारा ५१ हजार रुपये का पुरस्कार, शाल, श्रीफल व प्रशस्ति पत्र अर्पित किया जायेगा।

विद्वद्जनों से निवेदन है कि अपने मौलिक ग्रंथ अथवा पाण्डुलिपि दिनांक ३० जून २००३ तक संघ कार्यालय समता भवन बीकानेर में डाक से भेजें या व्यक्तिगत स्तर पर जमा करावें। प्रतियोगिता के लिये निर्धारित नियम निम्न प्रकार हैं–

१. अन्य संस्थाओं द्वारा पूर्व से पुरस्कृत कृति पर यह पुरस्कार नहीं दिया जाएगा।

२. पुरस्कार हेतु प्रकाशित/ अप्रकाशित (पाण्डुलिपि) दोनों प्रकार की कृतियां निर्धारित आवदेन-पत्र के साथ प्रस्तुत की जा सकती हैं।

३. प्रकाशित कृति का प्रकाशन पुरस्कार हेतु घोषित अवधि में एवं संबद्ध वर्ष हेतु

घोषित विषय परिधि में ही होना चाहिये।

४. पुरस्कार मूल्यांकन के लिये कृति की मुद्रित ४ एवं पाण्डुलिपि की चार प्रतियां निःशुल्क भेजनी होंगी। पाण्डुलिपि की ३ प्रतियां आवेदक को पुनः लौटा दी जायेंगी। मुद्रित कृतियां नहीं लौटाई जायेंगी।

५. अप्रकाशित कृति (पाण्डुलिपि) की प्रतियां स्पष्ट टंकण की हुई अथवा हस्त लिखित, सुवाच्य एवं जिल्द बंधी होनी चाहिये।

६. प्रतिभागी विद्वानों के लिये यह आवश्यक होगा कि वे कृति के संबंध में स्वयं की कृति होने एवं उसके मौलिक होने का प्रमाण पत्र कृति के साथ भेजें।

७. कृति हिन्दी भाषा में एक जनवरी १९९६ से पूर्व प्रकाशित नहीं होनी चाहिये।

**–मदनलाल कटारिया, महामंत्री, श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, बीकानेर**

## समग्र जैन चातुर्मास सूची २००३ का प्रकाशन

विगत २४ वर्षों की भांति इस वर्ष भी सम्पूर्ण जैन समाज के चारों समुदायों के लगभग १३ हजार जैन साधु-साध्वियों के २००३ में स्वीकृत होने वाले चातुर्मासों एवं समाज की सभी गतिविधियों की जानकारियों से युक्त "समग्र जैन चातुर्मास सूची २००३" एवं "चार्ट" का प्रकाशन करने का निश्चय किया गया है। अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि आपके गांव/शहर/कस्बे/उपनगरों में जिन पूज्य जैन आचार्यों, साधु-साध्वियों के २००३ वर्ष के चातुर्मास स्वीकृत हुए हैं उनकी निम्नलिखित जानकारियाँ १ जुलाई २००३ तक अवश्य भिजवाने की कृपा करावें, ताकि हम चातुर्मास प्रारम्भ होने तक चातुर्मास सूची का प्रकाशन कर सकें।

१. सभी संत-सतियों के पूरे ठाणाओं के नाम
२. सम्प्रदाय-गच्छ-समुदाय का पूरा नाम
३. चातुर्मास स्थल का नाम, सम्पर्क सूत्र, फोन नम्बर, फैक्स आदि का विवरण
४. नवदीक्षित व नई पदवी धारक संत-सतियों के नाम, स्थल एवं तारीख
५. कालधर्म प्राप्त संत-सतियों के नाम, स्थल व तारीख
६. आवास-भोजन व्यवस्था का सम्पर्क सूत्र
७. अध्यक्ष-मंत्री का नाम, पता, फोन नं. आदि
८. चातुर्मास स्थल पहुंचने के यातायात साधनों का विवरण
९. संत-सतियों के शेषकाल के स्थायी सम्पर्क सूत्र (चातुर्मास के अलावा शेष काल में सम्पर्क हेतु)

**नोट**—अनावश्यक विलंब न हो, एतदर्थ निर्णय किया गया है कि चातुर्मास प्रारंभ होने के १० दिन पश्चात् तक जिनकी सूचियाँ एवं जानकारियाँ हमें प्राप्त हो जायेंगी उनको ही पुस्तक में सम्मिलित किया जायेगा। सम्पर्क सूत्र- **बाबूलाल जैन "उज्ज्वल" संपादक, 105, तिरुपति अपार्टमेण्ट, आकुर्ली क्रोस रोड नं.1, रेलवे स्टेशन के पास, कांदिवली (पूर्व), मुम्बई–400101, फोन नं. 28871278**

## आचार्य श्री देवेन्द्रमुनि जी की स्मृति में 'अमृत पुरुष' ग्रन्थ

**उदयपुर** - श्रमण संघ के तृतीय पट्टधर प्रज्ञापुरुष आचार्यश्री देवेन्द्रमुनि जी म.सा. की चतुर्थ पुण्य तिथि के अवसर यहाँ श्री तारक गुरु जैन ग्रन्थालय भवन में एक अति भव्य समारोह का आयोजन हुआ। आचार्य श्री की ज्येष्ठ भगिनी साध्वीरत्न पुष्पवतीजी आदि साध्वी मण्डल तथा महास्थविर श्री केशूलाल जी म.सा., तपस्वी श्री वृद्धिचन्द जी म.सा., श्री सुभाषमुनि जी म.सा., श्री दिनेशमुनि जी म.सा. आदि सन्तगण की उपस्थिति में आचार्यश्री के गुणानुवाद के साथ आचार्यश्री की स्मृति में प्रकाशित भव्यतम स्मृतिग्रन्थ 'अमृत पुरुष' का विमोचन कर, गुरुभक्त श्री धनसुख भाई दोशी, मुम्बई, गुरुभक्त श्री विजयकुमार जैन, लुधियाना, साहित्यकार श्रीचन्द जी सुराना आगरा आदि ने ग्रन्थ की प्रथम प्रति पूज्य महासती जी को भेंट की।

अनेक वक्ताओं ने आचार्यप्रवर के जीवन संस्मरण सुनाये। ग्रन्थ के मुख्य सम्पादक श्रीचन्द जी सुराना 'सरस' ने मुख्य वक्ता के रूप में आचार्य श्री के जीवन की विलक्षणताओं पर सुन्दर प्रकाश डालते हुए बताया- आचार्यश्री के जीवन के चार मुख्य केन्द्र बिन्दु थे- १. दृढ़ इच्छाशक्ति २. असीम गुरु भक्ति ३. सबके प्रति असीम प्यार ४. अप्रमत्त भाव से ज्ञान की आराधना। इन्हीं चार केन्द्रों के आधार पर उनके जीवन का भव्य प्रासाद टिका हुआ था।

श्री सुराना जी ने स्मृति ग्रन्थ की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए बताया- यह ग्रन्थ एक अनूठी सांस्कृतिक धरोहर है, जिसमें जीवन, इतिहास, धर्म, दर्शन, संस्कृति आदि सभी विषयों का समावेश है। इस अवसर पर श्री तारक गुरु जैन ग्रन्थालय के अध्यक्ष श्री शांतिलाल जी तलेसरा, कोषाध्यक्ष श्री चुन्नीलाल जी धर्मावत, मंत्री श्री वीरेन्द्र जी डांगी आदि ने श्रीचन्द जी सुराना को रजत पट्टिका, शॉल व माल्यार्पण कर उनकी सेवाओं का सम्मान किया। डॉ. लक्ष्मण जी भटनागर (अजमेर), डॉ. तेजसिंह जी गौड़(उज्जैन), डॉ. सुरेश जी सिसोदिया(उदयपुर) आदि विद्वान् सम्पादकों का भी सम्मान किया गया। अनेक गुरुभक्तों ने आचार्य श्री के अप्रकाशित साहित्य के प्रकाशन हेतु सहयोग की घोषणाएँ की।

## अहिंसक वस्तु भण्डार एवं सेवाएँ

प्रत्येक ग्राम-नगर में अहिंसक वस्तु भण्डार की आवश्यकता है। उसी क्रम में अलीगढ़ में भगवान महावीर की २६०२वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में 'अहिंसक वस्तु भण्डार एवं सेवाएँ' नामक विलक्षण प्रतिष्ठान का शुभारम्भ किया गया है। प्रतिष्ठान संस्थापिका श्रीमती कुसुम जैन ने कहा कि हमारा संकल्प रहेगा कि सभी महिलाएँ, बच्चे एवं पुरुष सदा अहिंसक एवं शाकाहारी वस्तुओं/पदार्थों का ही सेवन एवं प्रयोग करें/करावें। –के.एल.जैन

## पुरस्कार अर्पित

१. आचार्य श्री विद्यानन्द जी मुनिराज के ७९वें 'पीयूष पर्व महोत्सव' के अवसर पर

२२ अप्रेल २००३ को नई दिल्ली में 'त्रिलोक उच्च स्तरीय अध्ययन एवं अनुसंधान संस्थान' की ओर से प्रवर्तित 'ब्राह्मी पुरस्कार' प्रो. ओ.पी. अग्रवाल, लखनऊ वालों को समर्पित किया गया। सम्मान रूप में एक लाख रुपये की राशि प्रदान की गई।

२. आचार्य भद्रबाहु पुरस्कार जैन प्रतिष्ठा-विधि, वास्तुशास्त्र एवं ज्योतिष शास्त्र के विख्यात विद्वान् पं. बाहुबलि पार्श्वनाथ उपाध्ये बेलगाम (कर्नाटक) को प्रदान किया गया । उन्हें एक लाख रुपये की धनराशि का ड्राफ्ट कुन्दकुन्द भारती संस्थान की ओर से दिया गया।

२. साहु अशोक जैन स्मृति पुरस्कार समिति, बड़ौत (उ.प्र.) द्वारा प्रवर्तित 'साहु अशोक जैन स्मृति पुरस्कार वर्ष २००३' श्री नीरज जैन सतना वालों को १३ अप्रेल ०३ को आचार्य कुन्दकुन्द सभा मण्डप में दिया गया।

४. अहिंसा प्रसारक ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा प्रवर्तित प्रतिष्ठित 'अहिंसा पुरस्कार' इस वर्ष पद्मश्री श्री प्रतापसिंह जाधव उर्फ बाला साहेब जाधव, कोल्हापुर वालों को १४ अप्रेल ०३ को प्रदान किया गया।

५. श्री एस.डी.एम.आई. मैनेजिंग कमेटी, श्रवण बेलगोला के द्वारा स्थापित एवं संचालित 'गोम्मटेश विद्यापीठ पुरस्कार २००३' से डॉ. सुदीप जैन को १४ अप्रेल २००३ को सम्मानित किया गया।

## जैन शैक्षणिक संस्थाओं की डायरेक्ट्री का प्रकाशन

Federation of Jain Educational Institution (FJEI) के अन्तर्गत राजस्थान की सभी जैन शैक्षणिक संस्थाओं/ट्रस्टों की एक डायरेक्ट्री प्रकाशित की जा रही है। इस डायरेक्ट्री में सभी जैन शैक्षणिक संस्थाओं व उनकी गतिविधियों की जानकारी प्रकाशित की जायेगी। जिससे हम सभी जैन संस्थाओं की गतिविधियों से परिचित हो सकेंगे तथा आवश्यक सहयोग भी प्राप्त कर सकेंगे। इस हेतु सभी जैन शैक्षणिक संस्था/ट्रस्ट/हॉस्टल तथा जैन विद्यार्थियों को आर्थिक सहयोग प्रदान करने वाली संस्थाएँ अपनी पूरी जानकारी फेडरेशन को भिजवाने हेतु फार्म के लिये सम्पर्क करें- **श्रीमती सुशीला बोहरा, सचिव, जी-21, शास्त्री नगर, जोधपुर(राज.)** फोन नं. **5108799/ 2431879, फैक्स 2634528**

# संक्षिप्त समाचार

**बैंगलोर**– श्री कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ के तत्त्वावधान में ६ अप्रेल ०३ रविवार को गणेश बाग में पुरस्कार वितरण एवं अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में सन् २०००, २००१ की मासिक पत्राचार परीक्षा एवं सन् २००२ की बोर्ड परीक्षा के विजेताओं को रजत पदक एवं प्रमाण पत्र प्रदान किये गये। इसी अवसर पर संघ-स्थापना से अब तक के विभिन्न कार्यक्रमों के प्रायोजकों एवं प्रमुख सहयोगियों का अभिनन्दन स्मृति चिह्न भेंट कर किया गया। साथ ही विभिन्न

परीक्षाओं में ६० प्रतिशत एवं अधिक अंक प्राप्त करने वाले १४७५ विद्यार्थियों को प्रोत्साहन स्वरूप पुरस्कार दिये गये। इन पुरस्कारों की वितरण-व्यवस्था हेतु विशाल पंडाल में प्रदर्शनी के साथ क्षेत्रवार १४ केन्द्र स्थापित किए गये। समारोह के मुख्य अतिथि श्री बाबूलाल जी रांका, श्री मघराजजी मेहता एवं श्री पारसमल जी माण्डोत के सौजन्य से पुरस्कार वितरित किये गये।

**–शांतिलाल बोहरा, संयोजक**

**बीकानेर**– श्री साधुमार्गी जैन हितकारिणी संस्था, बीकानेर वर्ष २००३- २००४ के लिए स्वधर्मी सहयोग छात्रवृत्ति के लिए आवेदन पत्र दिनांक २१ जून २००३ तक आमंत्रित करती है। इच्छुक छात्र एवं स्वधर्मी भाई-बहनों से नम्र निवेदन है कि वे अपना प्रार्थना पत्र स्थानीय संघ के अध्यक्ष/मंत्री से प्रमाणित करवाकर दिनांक २१ जून २००३ से पहले संस्था कार्यालय में भेजने का कष्ट करें।

छात्रवृत्ति के लिए आवेदन करने वाले छात्र प्रार्थनापत्र के साथ २००२-२००३ के परीक्षा परिणाम एवं चरित्र प्रमाणपत्र की छायाप्रति भी अवश्य संलग्न करें। **–शांतिलाल सेठिया, मंत्री**

**धुलिया**– जरूरतमंद जैन ओसवाल छात्रों से छात्रवृत्ति के रूप मदद हेतु १५ जून २००३ तक आवेदन पत्र आमन्त्रित हैं। यह छात्रवृत्ति फिलहाल मुम्बई, विदर्भ, जलगांव, धुलिया, पूना एवं नगर के आसपास के छात्रों को दी जाती हैं। **- अध्यक्ष, चांदसुमन छात्रवृत्ति शिक्षण संस्था, 1777, म.नं. 2, जैन स्थानक के पास, कल्याण स्वामी रोड़, धुलिया (महा.) फोन नं. 02562-233070**

**पांढरकवड़ा (महा.)**– महावीर जयन्ती के दिन अहिंसा प्रचार समिति द्वारा शाकाहार एवं व्यसनमुक्ति प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसी समय जैन संघटना द्वारा 'अहिंसा : एक सामाजिक आवश्यकता' विषय पर ११ जिलों की विदर्भ स्तरीय स्पर्धा का पारितोषिक भी वितरित किया गया।

**– प्रो. सुनील पितलीया**

**जयपुर**–जयपुर कैंसर रिलीफ सोसायटी द्वारा 'मृत्युंजय' पत्रिका प्रकाशित की जाती है, जिसमें कैंसर चिकित्सा एवं सावधानियों के संबंध में विशेष सामग्री रहती है। श्री सुधीन्द्र गेमावत के सम्पादकत्व में प्रकाशित इस पत्रिका का पता है- **जयपुर कैंसर रिलीफ सोसायटी, 3 न 3, जवाहर नगर, जयपुर-302004, दूरभाष 2651973**

# बधाई/चुनाव

## डॉ. भागचन्द्र जैन 'भास्कर' पुरस्कृत

**नागपुर**– जैन धर्म-दर्शन के विद्वान् डॉ. भागचन्द जैन 'भास्कर' को अहिंसा इण्टरनेशनल डिप्टीमल आदीश्वरलाल जैन साहित्य पुरस्कार २००२ से सम्मानित किया गया है। डॉ. जैन को यह सम्मान दिल्ली में आयोजित समारोह में श्रीफल,

शॉल, प्रतीक चिह्न और इकतीस हजार रुपये की राशि के साथ प्रदान किया गया। डॉ. जैन इसके पूर्व लगभग २० पुरस्कारों से पुरस्कृत हो चुके हैं। आप नागपुर विश्वविद्यालय के पालि-पाकृत विभाग के अध्यक्ष एवं पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी के निदेशक रहे हैं। आप अभी अमेरिकी विश्वविद्यालयों एवं जैन केन्द्रों में जैन धर्म पर भाषण देकर लौटे हैं।

**उदयपुर**—मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय द्वारा वर्ष २००० में आयोजित

प्राकृत एवं जैनविद्या की एम.ए. की परीक्षा में विश्वविद्यालय में सर्वोच्च स्थान पाने के उपलक्ष्य में कवि एवं लेखक श्री दिलीप धींग को स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर्यकुमार सिंह ने धींग को स्वर्ण-पदक और प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया। धींग को यह स्वर्णपदक विश्वविद्यालय द्वारा उपस्थित किए गए व्यवधान के कारण विलम्ब से प्राप्त हुआ। न्यायालय ने श्री धींग के पक्ष में निर्णय सुनाया।—**संजय भण्डारी**

**भवानीमण्डी**-अंहिसा, सदाचार, शाकाहार, व्यसनमुक्ति एवं समाज सेवा के

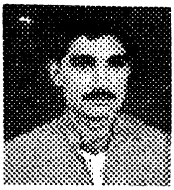

उत्कृष्ट कार्यों के लिए प्राणिमित्र श्री नितेश नागोता 'जैन' को जैन महासभा, सिंगोली द्वारा "समाज गौरव अलंकरण" से सम्मानित किया गया। सम्मान स्वरूप नागोता को स्मृति चिह्न एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए। उल्लेखनीय है युवारत्न श्री नागोता को निस्वार्थ सेवाओं एवं समर्पित अहिंसक प्रयासों के लिए पूर्व में भी आर.सी.बाफना फाउण्डेशन ट्रस्ट, जलगांव द्वारा "आचार्य हस्ती अहिंसा कार्यकर्ता अवार्ड" से तथा छत्तीसगढ़ व्यसनमुक्ति संस्कार जागरण अभियान समिति द्वारा वर्ष २००० के "बेस्ट अहिंसा कार्यकर्ता अवार्ड" से सम्मानित किया जा चुका है।—**कालुलाल सालेचा**

# श्रद्धांजलि

## परम गुरुभक्त सुश्रावक श्री उग्रसिंहजी बोथरा का देहावसान

**जयपुर**— धर्मनिष्ठ, आचारनिष्ठ, अनन्य गुरुभक्त सुश्रावक श्री उग्रसिंह जी

बोथरा का ४ जून २००३ को लगभग ८२ वर्ष की वय में देहावसान हो गया। आप रत्नसंघ के समर्पित सुज्ञ श्रावकरत्न थे। गुरुभक्ति, संघनिष्ठा और सेवा के गुण-सौरभ से आपका जीवन प्रेरणादायी था। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म. सा. के साधनामय जीवन से आप अत्यन्त प्रभावित थे। परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि सन्त- सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में उन्हें अनूठा आनन्द प्राप्त होता था। सामायिक-स्वाध्याय, दया-संवर, उपवास-पौषध, ध्यान-मौन में आपका पुरुषार्थ प्रशंसनीय था। वर्षों से आप लालभवन में ही नियमित रात्रि संवर

किया करते थे। अष्टमी- चतुर्दशी को उपवास-पौषध एवं विशेष प्रत्याख्यानों से युक्त साधना किया करते थे। संत-सतीवृन्द के आहार-विहार एवं स्वास्थ्य-समाधि का आप पूरा खयाल रखते थे। चारित्रात्माओं की आप अन्तर्मन से सेवा करते थे। त्यागानुरागी भाई-बहिनों को सहयोगपूर्वक आगे बढ़ाने में सुज्ञ श्रावकरत्न की सदा शुभ भावना रहती थी। स्वधर्मी वात्सल्य-सेवा के भाव आपके रोम-रोम में रचे-पचे थे। छोटे से छोटे गुरु भ्राता को अपनत्व देना, उसका अपने यहाँ मान-मनुहार के साथ अतिथि-सत्कार करना आपके स्वभाव में था। आप गिनती के द्रव्य ही काम में लेते थे। भद्रिक प्रकृति के बोथरा साहब मन से निष्कपट एवं वाणी से मधुर थे। आपका जीवन संघ-समाज में आदर्श जीवन के रूप में प्रतिष्ठित था। सरलता, सादगी, सहिष्णुता की जो छाप आपने छोड़ी है वह सबको प्रेरणा प्रदान करेगी।

आपका ससुराल रत्नसंघ के प्रति समर्पित बम्ब परिवार में था। आपकी धर्मपत्नी सुश्राविका स्व. श्रीमती लाडबाई जी बोथरा अत्यन्त धर्मनिष्ठ भद्रिक एवं तपस्विनी साधिका थी। अत्यल्प आहार का सेवन करके भी बड़ी-बड़ी तपस्याएँ कर लेना आपके दृढ़ मनोबल का प्रतीक थी। आपके सुपुत्र श्री सुमेरसिंह जी बोथरा शासन सेवा समिति के सदस्य हैं तथा संघ-सेवा में समर्पित हैं। कुछ माह से पिताश्री के स्वास्थ्य की प्रतिकूलता होने पर आपने एवं आपकी धर्मपत्नी श्रीमती उर्मिला जी बोथरा ने औषधोपचार के साथ आत्म-भावों में लीन रहने हेतु पूर्ण सहयोग किया।

सुश्रावक श्री उग्रसिंह जी बोथरा के दिवंगत होने से संघ में जानकार, बुजुर्ग और सेवाभावी श्रावकरत्न की क्षति हुई है।

**अहमदाबाद**—धर्मनिष्ठ, श्रद्धानिष्ठ सुश्रावक श्री पारसमल जी चंदनमल जी

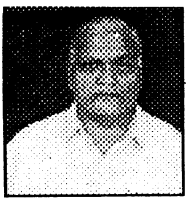

बांठिया, बाड़मेर निवासी का ८ अप्रेल ०३ को राजस्थान हॉस्पिटल, अहमदाबाद में ५७ वर्ष की वय में स्वर्गवास हो गया। आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं रत्नवंश के सभी सन्तमुनि भगवन्तों, महासतियों पर आपकी अटूट आस्था एवं श्रद्धा-भक्ति थी। आप प्रतिदिन सामायिक-स्वाध्याय करते थे। आप अपने पीछे तीन सुपुत्रों (राजूजी, जितूजी, पियूषजी) धर्मपत्नी श्रीमती बदामी देवी तथा पौत्र-पौत्री का परिवार छोड़कर गये हैं। आप दौलतराजजी बांठिया के छोटे भाई व ओमप्रकाश जी बांठिया के चाचाजी थे। बांठिया परिवार पूरा जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के लिये समर्पित है।

**सवाईमाधोपुर**—सुश्राविका श्रीमती गुलाबदेवी जी जैन धर्मपत्नी स्व. श्री रामनारायण जी जैन (पुसेदा वाले) का हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी में १२ मई २००३ को स्वर्गवास हो गया। आप धर्मनिष्ठ श्राविका थी तथा नियमित सामायिक-साधना के साथ व्रत-नियम रखती थीं। वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री लल्लूलाल जी जैन, श्री रामप्रसाद

जी, श्री राजेन्द्रप्रसाद जी एवं श्री धर्मेन्द्र कुमार जी जैन (व्याख्याता) की माता श्री अपने पीछे भरापूरा धर्मनिष्ठ संस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं।

**बगड़ी नगर(राज.)**— मुम्बई निवासी श्री सम्पतराजजी जैन (कात्रेला) सुपुत्र

स्व. श्री जुगराजजी जैन (कात्रेला) का देहावसान ७० वर्ष की उम्र में २६ मार्च २००३ को हो गया। आप आदर्श जैन हेल्थ सेन्टर, मुम्बई के आजीवन ट्रस्टी थे, जिसके अंतर्गत विविध प्रकार की चिकित्सा सेवाएँ रियायती दरों पर उपलब्ध कराई जाती हैं तथा गरीबों को आर्थिक सहायता दी जाती है। आपने बगड़ी नगर में निःशुल्क अस्पताल व बैंगलोर शहर के मध्य धर्मशाला बनवाई। आपने अनेक धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं में सहयोग किया। आपको दादाभाई नौरोजी इंटरनेशनल सोसायटी द्वारा समाज-सेवा में उल्लेखनीय योगदान के लिए "दादाभाई नौरोजी मिलेनियम पुरस्कार २००२" से सम्मानित किया गया। आप धर्मनिष्ठ, कर्त्तव्यपरायण, सरल स्वभावी एवं मृदुभाषी सुश्रावक थे। आपका सारा जीवन संतों की सेवा, आराधना, जप-तप, धर्मध्यान, दान एवं गरीबों की सेवा में लीन रहा। आपने मरणोपरांत नेत्रदान किया। आप धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते थे।

**जोधपुर**— सुश्रावक श्री ललित जी अब्बानी सुपुत्र श्री लक्ष्मीचन्द जी अब्बानी का ४ मई २००३ को देहावसान हो गया। पारिवारिक संस्कारों से संस्कारित श्री ललित जी का जीवन सरलता, मृदुता, सहिष्णुता, उदारता जैसे सद्गुणों से ओतप्रोत था। संघ-सेवा एवं सन्त-सती सेवा में उनकी तत्परता रही। अपने आत्मीय व्यवहार के कारण वे घर-परिवार और संघ-समाज में प्रतिष्ठित श्रावकरत्न थे। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म. सा.आदि संत-सतीवृन्द के प्रति उनकी अगाध आस्था एवं श्रद्धा-भक्ति थी।

**-सुमेरनाथ मोदी**

**बैंगलोर**— बैंगलोर के अनन्य गुरुभक्त श्रद्धानिष्ठ श्रावकरत्न श्री यशवन्तजी सांखला के आत्मज श्री पवनजी सांखला का ११ मई २००३ को हृदयगति रूक जाने से असामयिक निधन हो गया, जिससे संघ में एक होनहार युवारत्न की अपूरणीय क्षति हुई है। सांखला परिवार का रत्नसंघ के प्रति समर्पण प्रेरणादायी है। आपके बड़े पिताश्री स्व. श्री मोतीलाल जी सांखला संघ के स्तम्भ थे। गुरु हस्ती, गुरु हीरा के प्रति समर्पित श्रावकरत्न ने स्वेच्छा से व्रत-नियम अंगीकार कर समत्वभावों में नश्वर देह का त्याग किया। मृत्यु-उपरान्त आपकी भावनानुसार नेत्र दान किए गए।

**जयपुर**— सुश्राविका श्रीमती राजकुमारी जी लोढ़ा धर्मपत्नी श्री मनोहरचन्द जी लोढ़ा का २३ अप्रेल २००३ को स्वर्गवास हो गया। आप धर्मनिष्ठ एवं व्रत-नियमों का पालन करने वाली सेवाभावी सरलमना श्राविका थी।

**नसीराबाद**—सुश्रावक श्री लादूलाल जी कोठारी का १० अप्रेल ०३ को ६१ वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप सरलमना एवं धर्मपरायण व्यक्ति थे। नित्य सामायिक करने के साथ सन्त-सतियों की सेवा में अग्रणी रहते थे।

**–ताराचन्द जैन**

**जयपुर**—श्रीमती कानकुमारी जी लोढ़ा धर्मपत्नी श्री हेमचन्द जी लोढ़ा, दिल्ली का २२ अप्रेल ०३ को स्वर्गगमन हो गया। आप धर्मपरायण एवं सरल चित्तवृत्ति की श्राविका थी।

**खेरली मंडी**— वीरमाता सुश्राविका श्रीमती सूरजदेवी जी जैन धर्मपत्नी स्व. श्री

रतनलाल जी जैन, भनोखर वाले निवासी खेरली का ८० वर्ष की आयु में १७ मई २००३ को देहावसान हो गया। धर्मपरायण शीलव्रती सुश्राविका रत्न विगत वर्षों में आठ वर्ष तक एकान्तर तप का आराधन कर चुकी थी। आप परम विदुषी महासती श्री इन्द्रप्रभा जी म.सा. की संसार पक्ष की माताश्री थी। आपके जीवन में आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा., परम पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं श्री उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं महासती वृन्द के साथ विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. का विशेष प्रभाव रहा। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई है।

**गोपालगढ़, भरतपुर**— सरलमना सुश्राविका श्रीमती भगवती देवी जी जैन,

धर्मपत्नी स्व. श्री रामजीलाल जी जैन का स्वर्गवास दिनांक १८.५.०३ को ६२ वर्ष की आयु में तप-त्याग में रहते हो गया। आप धर्मनिष्ठ सुश्राविका थी। आपने ५५-५६ वर्ष की आयु में शीलव्रत लेकर धर्म साधना में ही अपना जीवन बिताया। आप नियमित सामायिक व स्वाध्याय करती व चौविहार त्याग में रहती थी। आप गोपालगढ़, भरतपुर स्वाध्याय संघ की वरिष्ठ सदस्या थीं। आपकी आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. एवं आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. में अटूट आस्था थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं।**–सचिव**

**मदनगंज-किशनगढ़**—धर्मनिष्ठ सरलहृदया सुश्राविका श्रीमती

उगमकंवरबाई जी मेहता, धर्मपत्नी स्व. श्री बालचन्द जी मेहता ने अपनी आयु के १०२ वर्ष पूर्ण कर १५ मई २००३ को प्रातः ५ बजे देह त्याग कर दिया। आप जैन धर्म के सिद्धान्तों की प्रतिपालक एवं साधु-संतों के प्रति समर्पित श्राविका थी। आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. एवं आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आपके सुपुत्र

श्री धनबुद्धिसिंह जी मेहता, संघ के अग्रणी एवं सुज्ञ श्रावकरत्न हैं।-**राजेन्द्र डांगी**

**भवानीमण्डी**— सुश्राविका श्रीमती पुष्पाबाई जी बोहरा धर्मपत्नी श्री मिश्रीमल जी बोहरा का ७४ वर्ष की आयु में १३ मई २००३ को देहावसान हो गया। आपके कई त्याग-प्रत्याख्यान थे। आप अपने पीछे चार पुत्रों एवं एक पुत्री का भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं। आपका पूरा परिवार धर्म से संस्कारित है।-**भंवरसिंह जैन**

**पिपलगांव बसवन्त (नासिक)**— श्रद्धानिष्ठ, धर्मनिष्ठ एवं कर्त्तव्यनिष्ठ

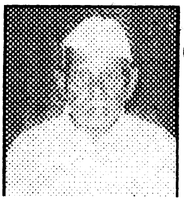

सुश्रावक श्री जवरीलाल जी रांका सुपुत्र श्री बच्छराज जी रांका (पालासनी वाले) का ७४ वर्ष की उम्र में १५ मई २००३ को संथारापूर्वक स्वर्गगमन हो गया। आप रत्नसंघ के सुज्ञ श्रावक रत्न थे। आप संघ सेवा एवं सन्त-सती सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. तथा सन्त-सतियों के महाराष्ट्र प्रवास के दौरान अपने कर्मक्षेत्र में सन्त-सतियों की सेवा का अनूठा लाभ प्राप्त किया। आप सही अर्थों में महाराष्ट्र में रत्नवंश के गौरव थे। मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. के विगत पालासनी चातुर्मास में आपने सन्त-समागम का भावनापूर्वक लाभ लिया। आप अपने पीछे तीन पुत्रों एवं दो पुत्रियों का भरा-पूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गए हैं। -**देवराज रांका, जोधपुर**

**गुलाबपुरा (भीलवाड़ा)**— सरलमना सुश्राविका श्रीमती बरजीबाई धर्मपत्नी स्व. श्री फतहलाल जी बाबेल का १७ मई २००३ को संथारापूर्वक स्वर्गवास हो गया। आपकी धर्मनिष्ठा एवं सभी पूज्य संत-सतियों के प्रति सेवाभाव सराहनीय था। प्रतिदिन कम से कम पाँच सामायिक प्रतिदिन करती थी तथा जमीकंद का त्याग था। उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. ने आपके सुपुत्र की विनति पर विजयनगर से पधार कर आपको संथारा के प्रत्याख्यान के साथ मांगलिक प्रदान किया।

**उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करता है।**

## आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षाएँ २७ जुलाई को

**अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर की आगामी परीक्षा 27 जुलाई 2003, रविवार, दोपहर 12 से 3 बजे तक कक्षा 1 से 11 तक के लिये आयोजित होगी। जिन्होंने 19 जनवरी 2003 की परीक्षा के लिये आवेदन पत्र भरा था, उन्हें अब पुनः फार्म भरने की आवश्यकता नहीं है। जो इस परीक्षा में अनुत्तीर्ण हुए हैं, उन्हें पुनःउसी कक्षा का प्रवेश-पत्र बोर्ड कार्यालय द्वारा भिजवाया जा रहा है। 19 जनवरी 2003 की परीक्षा देने वालों के अतिरिक्त जो नये या पुराने परीक्षार्थी है उन्हें ही 31 मई 2003 तक आवेदन पत्र भरकर बोर्ड कार्यालय को भिजवाना आवश्यक है।** *-नवरतन डागा, सचिव*

# साभार-प्राप्ति-स्वीकार

**500/-रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक**

६१७६ श्री नरेन्द्र जी ढेलड़िया, जगदलपुर, बस्तर (छत्तीसगढ़)
६१८५ श्री दीपक जी मेहता, जोधपुर (राज.)
६१६१ श्री चन्द्रपाल जी महनोत, जयपुर (राज.)
६१६२ Shri H.Mahendra Ji Kankaria Shah,Hubli,Dharwad (K.T.)
६१६३ श्री मुकेशकुमार जी जैन, सांगानेर, जयपुर (राज.)
६२१५ श्री जयन्तीलाल जी जैन, पुणे (महा.)

**श्रीमान अमरचन्द जी पी. मुणोत, मुम्बई के सौजन्य से**

**500/-रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक**

६१८० श्री शैलेश कुमार शांतिलाल जी मुणोत, पनवेल, रायगढ़ (महा.)
६१८१ श्री मानकलाल जी चुन्नीलाल जी मुणोत, पनवेल, रायगढ़ (महा.)
६१८२ श्री रितेश कुमार जी प्रकाशचन्द जी मुणोत, पनवेल, रायगढ़ (महा.)
६१८३ श्री विजयकुमार जी शांतिलाल जी मुणोत, पनवेल, रायगढ़ (महा.)
६१८४ श्री विशालचन्द प्रेमचन्द जी मुणोत, पनवेल, रायगढ़ (महा.)
६१८६ श्री विनोद जी श्रीपाल जी तातेड़, ब्यारा, सूरत (गुजरात)
६१८७ श्री संजय कुमार जी जैन, चिंचवड़, पूना (महा.)
६१८८ श्री रतनलाल जी लालचन्द जी सिसोदिया, डोंबिवली (पूर्व), ठाणे (महा.)
६१८६ श्री वीरेन्द्र जी बिराणी, दापाली, पूना (महा.)
६१६० श्री अभयराज जी पृथ्वीराज जी बोथरा, पूना (महा.)
६१६४ Shri Jain Sthank Library, Vapi (Gujrat)
६१६५ Shri Jain Sthank Library, Navasari (Gujrat)
६१६६ Shri Jain Sthank Library, Bijapur (Karnataka)
६१६७ Shri Jain Sthank Library, Hindauncity, Karoli (Raj.)
६१६८ Shri Jain Sthank Library,Gangapurcity(Raj.)
६१६६ Shri Jain Sthank Library, Aligarh Rampura, Tonk (Raj.)
६२०० Shri Jain Sthank Library, Sawaimadhopur (Raj.)
६२०१ Shri Jain Sthank Library, Umar Gaon Road (Gujrat)
६२०२ Shri Jain Sthank Library, Ichalkaranji (M.H.)
६२०३ Shri Naresh Ji Bothara,Dahanu Road(East),Thane (M.H.)
६२०४ Shri Harshad Ji Kankaria, Bordi, Thane (M.H.)
६२०५ Shri Ramesh Ji Gulab Ji Parakh, Silvasa (Gujrat)
६२०६ Shri K.M. Bothara, Dahanu, Thane (M.H.)
६२०७ Shri Prakash Ji Bafna, Dahanu Gaon (M.H.)
६२०८ श्री ईश्वर जी बंशीलाल जी भटेवरा, पुणे(महा.)
६२०६ श्री नरेन्द्र कुमार जी चम्पालाल जी लोढ़ा, पुणे (महा.)

६२१० श्री अजयकुमार जी पृथ्वीराज जी बोथरा, पुणे (महा.)
६२११ श्री ओमप्रकाश जी आईदान जी गोलेछा, पुणे (महा.)
६२१२ श्री विमल कुमार जी जैन, पुणे (महा.)
६२१३ श्री आई.सी. भण्डारी जी, पुणे (महा.)
६२१४ श्री संतोष जी धारीवाल, पुणे (महा.)

## जिनवाणी को साभार-प्राप्त

११००/- श्री विमलचन्द जी, सुभाषचन्दजी, अशोक कुमार जी धोका, मैसूर, निमाज में दिनांक २७.१.०३ को आयुर्वेदिक अस्पताल के शुभारम्भ, मैसूर में श्रीमती नवरत्नाबाई जी जल मन्दिर के शुभारम्भ होने के उपलक्ष्य में एवं पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवन्त के सान्निध्य में पूना में श्रीमती शान्ताबाई जी धोका का पारणा सहर्ष सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

११००/- श्री सोहनलाल जी, बुधमल जी, सम्पतराज जी, राजेन्द्रकुमार जी बागमार (कोसाणा वाले), मैसूर, नूतन गृह प्रवेश के शुभ अवसर पर सप्रेम भेंट।

५०१/- श्री राजेन्द्रकुमार जी, श्री जितेन्द्रकुमार जी, श्री पीयूष जी बांठिया, अहमदाबाद, अपने पूज्य पिताजी का स्वर्गवास ८.४.०३ को होने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

५०१/- मैसर्स दलीचन्द जुगराज जी जैन, मुम्बई, पूज्य श्री सम्पतराज जी जुगराज जी जैन का स्वर्गवास २६.३.०३ को होने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

५०१/- डॉ. लक्ष्मीचन्द जी सिंघवी एवं श्रीमती चन्द्रा जी सिंघवी, जोधपुर, अपनी सुपुत्री सौ. कां. प्रियंका का शुभ विवाह चि. रूपेश सुपुत्र श्री महावीर सा भण्डारी, जोधपुर के साथ दिनांक २१.४.०३ को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

५००/- श्री शांतिलाल जी महावीरचन्द जी बागमार (कोसाणा वाले), मैसूर, चि. गौतमचन्द बागमार की शादी बैंगलोर में दिनांक ४.५.०३ को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

५००/- श्री सुशील कुमार जी कोठारी, मालेगांव, श्रीमती सुमन जी कोठारी के कैन्सर का सफल ऑपरेशन होने की खुशी में भेंट।

५००/- श्री रेखचन्द जी श्रीमती सुशीला जी चौधरी, आरकाट (तमिलनाडु), अपने सुपुत्र के विवाहोपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५००/- श्रेणिकजी सुनील जी धोका, मैसूर, माताश्री श्रीमती शांतादेवी जी धर्मपत्नी स्व. श्री नेमीचन्द जी रांका के पूना सकलसंघ के तत्त्वावधान में वर्षीतप के पारणे के उपलक्ष्य में भेंट।

५००/- श्री शांतिलाल जी, राजेशकुमार जी, महावीरचन्द जी खाबिया (कोसाणा वाले), मैसूर, परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के पूना में अक्षय तृतीया व दीक्षा के प्रसंग पर विराजने की खुशी में सप्रेम भेंट।

२५१/- श्री हस्तीमल जी एवं श्रीमती कमलेश जी बोहरा (रतकुडिया वाले), पीपाड़ सिटी, अपने सुपुत्र श्री जितेन्द्रकुमार का शुभ विवाह सौ.कां.सुमन सुपुत्री श्री जबरचंद जी कोठारी (मेड़ता सिटी वाले), चेन्नई के साथ ४ मार्च ०३ को सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

२५१/- श्रीमती बिदामकंवर जी धर्मपत्नी श्री भंवरलाल जी चौपड़ा, जोधपुर, अपनी सुपुत्री

एवं रत्नवंश में दीक्षित महासती श्री सुश्रीप्रभा जी म.सा. के एकान्तर तप की सानन्द पूर्णाहुति के उपलक्ष्य में भेंट।

२५१/- श्री मन्नालाल जी बोथरा, जोधपुर, सुपुत्र चि. कौशल संग सौ. पूर्णिमा सुपुत्री श्री पुखराज जी मुणोत, जोधपुर के शुभविवाह दिनांक १७.४.०३ के शुभअवसर पर सप्रेम भेंट।

२५१/- श्री सुरेशकुमार जी दिलीपकुमार जी रांका, पीपलगांव बसवन्त, पूज्य पिताजी श्री जवरीलाल जी रांका की पावन स्मृति में।

२५०/- श्री रोशनलाल जी चौपड़ा, चित्तौड़गढ़, अपने सुपुत्र चि. गौतम का शुभ विवाह सौ. कां. मोनिका सुपौत्री श्री इंदरचंद जी सुपुत्री श्री चन्द्रसिंह जी सांखला, ब्यावर के साथ सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

२५०/- श्री कंवलराजसा विनायकिया मेहता, माताश्री श्री मनोहरकंवरजी एवं पिताश्री पारसमल सा की पुण्य स्मृति के उपलक्ष्य में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

१५१/- श्री नरेशचन्द जी जैन (नदबई वाले), भोपालगढ़, पूज्य पिताजी श्री ज्ञानचन्द जी जैन के दिनांक ३०.४.०३ को व्याख्याता पद से ससम्मान सेवानिवृत्ति के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

१००/- श्रीमती विमला जी धर्मपत्नी श्री बुधमल जी चौपड़ा, जोधपुर, रत्नवंश में दीक्षित महासती श्री सुश्रीप्रभा जी म.सा. के एकान्तर तप की सानन्द पूर्णाहुति के उपलक्ष्य में भेंट।

५१/- श्री लक्ष्मीचन्द जी पवनकुमार जी कंजोली, अपने सुपुत्र के शुभ-विवाह के उपलक्ष्य में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

५१/- श्री ब्रजमोहनलाल जी ओमप्रकाश जी जैन (लहचौड़ा), हिण्डौनसिटी, अपनी सुपौत्री सौ. कां. अंजना (सुपुत्री श्री ओमप्रकाश जी जैन) का शुभ-विवाह दिनांक ४.५.०३ को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

५१/- श्री हेमचन्द जी विनोद कुमार जी जैन (सेवरवाले), भरतपुर, अपने सुपुत्र का शुभ विवाह दिनांक ४.५.०३ को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

## *श्रम की रोटी*

*श्री आनन्दराज तलेसरा*

बात उस समय की है जब देश का विभाजन हुआ था और चारों ओर सांप्रदायिकता की आग जल रही थी। पुलिस और सेना की मौजूदगी में भी शांति कायम नहीं हो रही थी। इन्हीं दिनों सांप्रदायिक सद्भाव के लिए राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने अनशन शुरू किया। वे एक सौ इक्कीस घंटे बिना आहार के रहे। जब उनका अनशन तुड़वाया गया तो वे काफी कमजोर हो गए थे। कमजोर होने पर भी अनशन तोड़ने के तुरन्त बाद वे चरखा चलाकर सूत कातने लगे। डाक्टरों ने इसके लिए मना किया तो वे धीमे स्वर में बोले- "बिना मेहनत के प्राप्त की गई रोटी वास्तव में चोरी की होती है। अब मैंने भोजन करना शुरू कर दिया है, तो मुझे श्रम भी करना चाहिए।"

*-मुम्बई (महा.)*

'समता' मोक्ष का साधन है तो उसका उलटा 'तामस' नरक का द्वार है। - आचार्य श्री हस्ती


# पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

प्रतिष्ठान

## KOTHARI FINANCERS

27, CHANDRAPPAN STREET
CHENNAI-600079(T.N.)
PH.# 25258436, 25298130

### Branches:

**Bhagawan Motors, Chennai-53, Ph.# 26251960**
**Bhagawan Cars, Chennai-53, Ph.# 26243455/66**
**Balaji Motors, Chennai-50, Ph.# 26247077**
**Padmavati Motors, Jafar Kan Peth, Chennai, Ph.# 24854526**

JAI MAHAVEER

JAI GURU HASTI

JAI GURU HIRAMAN

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

# LIVE & LET LIVE

*Lord Mahaveer*

**With Best Compliments from**

**Prithvi Exchange**

A 100% Money Changer

A DIVISION OF PRITHVI SECURITIES LIMITED

Regd. Office : 33, Montieth Road, Egmore, Chennai-600 008, Ph : 855 3185/3059. Website : www.prithvifx.com

| CHENNAI | BANGALORE | PANJIM GOA |
|---|---|---|
| 044-8553185 | 080-5327812 | 0832-231190 |
| 044-8553059 | 080-5327813 | 0832-420675 |

## P. DELICHAND KAVAD

SURESH KAVAD

RAVINDRA KAVAD

NAVARATHAN KAVAD

ASHOK KAVAD

158, Trunk Road, Poonamallee, Chennai-600 056.

Ph : 044-627 3165, 627 4165

हमारी प्रार्थना के केन्द्र में यदि वीतराग होंगे तो निश्चित रूप से हमारी मनोवृत्तियों में प्रशस्तता और उच्च स्थिति आयेगी।

-आचार्य श्री हस्ती


*With Best Compliments From :*

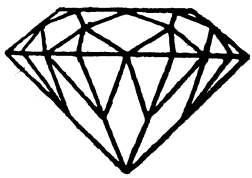

**JIN GEMS**

**DIAMONDS, PRECIOUS & SEMI PRECIOUS STONES**

12th Floor, Flat 'C'
Mass Resources Dev. Bldg.
12, Humphrey's Avenue
T.S.T. Kowloon, Hongkong
✆ 23671373, Fax : 23671511
MOBILE : 94327311, 92594051
E-mail : jingems@ctimail.com

Rajendra Daga

जय गुरु हस्ती    जय गुरु हीरा-मान

# गुरु हस्ती के दो फरमान।
# सामायिक स्वाध्याय महान॥

JAI GURU HASTI

GHT

## GURU HASTI GOLD PALACE

No. 3, Car Street
Poonamallee, Chennai-600 056
Phone : 26272609

## P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
(Banker)

No. 3A, Car Street
Poonamallee Chennai- 600 056
Phone : 26272906

Gurudev

# SURANA

**Financial Corporation (India) Limited**

Group of Surana

**Since 1971**

A Multi Faceted Finance Company
With Fraternity Feel, Holding Hands
With Customers in Their Success

## Just Contact For

- **Hire Purchase**
- **Leasing**
- **Bills Discounting**
- **Foreign Exchange**

Invites Deposits from Public

**Call**

Phone : 8525596 (6 Lines) Fax : 044-8520587
Internet ID : suranaco@md3.vsnl.net.in
Sprint E-mail ID : surana.chh@rmd.sprintrpg.ems.vsnl.net.in
Regd Cum.Corp. H.O.: No. 16, Whites Road,. II Floor,
Royapettah, Chennai - 600 014

**Branches :**

**☆ Bangalore ☆ Coimbatore ☆ Ernakulam ☆**
**☆ Kollidam ☆ New Delhi ☆**

शान्ति और समता के लिए न्याय-नीतिपूर्वक धर्म का आचरण ही श्रेयस्कर है।

''आचार्य श्री हस्ती''

*With Best Compliments From :*

# EVEREST GEMS LTD.

12-A-2, CHINA INSURANCE BUILDING,

48, CAMERON ROAD,
T.S.T. KOWLOON
HONG-KONG

**TEL : 23681199**
**FAX : 23671357**

**Director** : Sunil Lunawat
Rajesh Kothari

*With Best Compliments From :*

धन रोग और शोक दोनों का घर है,
जबकि धर्म रोग और शोक दोनो को
काटने वाला है।
- आचार्य श्री हस्ती

**HIMA GEMS**

14-A, KOK-PAH MANSION
58-60, CAMERON ROAD,
T.S.T. KOWLOON
HONG-KONG

Director
**HEMANT SANCHETI**

आपके व्यक्तीत्वका सही प्रतिबींब !

सोने चांदीके पारंपारीक एवमं आधुनिक आभुषणोंकी
१८५४ से विश्वसनीय सुवर्ण पेढी...

A HOUSE OF TRUST
RL GROUP
SINCE 1854

राजमल लखीचंद ™
ज्वेलर्स

१६९, जौहरी बाजार, जलगाँव. (मंहाराष्ट्र) फोन: ०२५७-२२६६८१,८२, ८३

*All major credit cards accepted...*

GRACE

आर. एन. आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JPC/3825/02/2003-05


*Home next to everything you need.*
*And far from everything you don't.*

**KALPATARU HABITAT**
**DR. S.S. RAO ROAD, PAREL**

- Twin 23 storeyed luxury apartment blocks
- 2 &3 BHK apartments and 4 BHK penthouses
- Swimming pool, clubhouse & gym
- Squash court & tennis court
- Landscaped gardens & modern security systems

**KALPATARU RESIDENCY**
**OPPOSITE CINE PLANET, SION CIRCLE**

- Premium 18 storeyed towers with 2 & 3 BHK flats
- Swimming pool, squash court & gym
- Clubhouse, party lounge & landscaped gardens
- Basement and open car parking
- Tower A nearing completion

**KARMA KSHETRA**
**NEAR SHANMUKHANANDA HALL, KING'S CIRCLE**

- 25 storeyed tower with 2 wings
- 2 BHK apartments
- Landscaped gardens
- Ample car parking and modern security systems

Centrally located, they are near schools, banks, supermarkets, movie halls... And once you step in, you'll leave the hectic world outside. There'll be just you and a feeling that says, 'Relax, you are home'.

**The projects are under construction/nearing completion. For details call 281 7171/282 2679/284 4102..**

KALPA-TARU

111, Maker Chambers IV, Nariman Point, Mumbai 400 021
Fax: 204 1548/288 4778. E-mail: sales@kalpataru.com o
visit us at www.kalpataru.com


प्रकाशचन्द डागा, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर की ओर से संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिन्टिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशचन्द डागा द्वारा प्रकाशित तथा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर (राज.) से प्रकाशित। प्रधान सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।